RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

डाक पंजीयन संख्या

एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन

पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 286

पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, शनिवार, 10 फरवरी, 2024

द अचीवर टाइम्स

एक नज़र

नफरती भाषण पर अजहरी के खिलाफ तीसरा मामला दर्ज, दो दिन पहले मिली थी जमानत

अहमदाबाद। नफरती भाषण मामले में मुफ्ती सलमान अजहरी के खिलाफ गुजरात के अरवल्ली जिले के मोडासा में शुक्रवार को तीसरा केस दर्ज किया गया है। पुलिस अधीक्षक शेफाली बरवाल ने इस बारे में जानकारी दी। गौरतलब है कि भाषण का वीडियो सामने आने के बाद उनके खिलाफ गुजरात में केस दर्ज किया गया था। इसके बाद गुजरात एटीएस ने मुफ्ती अजहरी को मुंबई से गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस अधीक्षक शेफाली बरवाल ने बताया कि जूनागढ़ के बी डिवीजन पुलिस स्टेशन सीमा में 31 जनवरी को नफरती भाषण देने के बाद अजहरी को 5 फरवरी को मुंबई से गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद भचाऊ तालुका के सामाखियारी गांव में 31 जनवरी को ही भड़काऊ भाषण देने पर कच्छ पूर्व पुलिस ने 8 फरवरी को एफआईआर दर्ज की थी। बरवाल ने कहा, जूनागढ़ पुलिस की ओर से गिरफ्तारी के बाद हमें पता चला कि अजहरी ने मोडासा में 24 दिसंबर को एक कार्यक्रम में नफरती भाषण दिया था। कार्यक्रम के आयोजन की अनुमति धर्म और नशा मुक्ति पर भाषण के नाम पर ली गई थी। अन्य धाराओं के अलावा उसके खिलाफ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम की धाराएं भी लागू की गई हैं। उसने अपने भाषण में एससी समुदाय के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी की थी। इससे पहले, बीती सात फरवरी को अदालत ने उन्हें 15,000 रुपये के मुचलके पर जमानत दे दी। उन्होंने कहा कि अदालत सशर्त जमानत दी थी। इन शर्तों में कोर्ट की अनुमति के बिना देश नहीं छोड़ने पर रोक, सबूत नष्ट करने पर रोक शामिल थी। इसके साथ ही उनसे अदालत को अपना आवासीय पता मुहैया कराने को भी कहा गया था।

उपद्रवियों को पहले से आता था पेट्रोल बम बनाना

पुलिस ने 18 नामजद समेत पांच हजार उपद्रवियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया

शवों का मिलना जारी, गोली लगने से पांच लोगों की मौत की पुष्टि

एजेंसी

हल्द्वानी। हल्द्वानी के बनभूलपुरा में कई ऐसे उपद्रवी थे जिन्हें पेट्रोल बम बनाना आता है। पुलिस की ओर से पथराव और आंसू गैस के छोड़े जाने के बाद उपद्रवियों ने आधे घंटे में पेट्रोल बम तैयार किए और पुलिस पर चलाने शुरू कर दिए। दोनों ओर से पथराव होने के कारण कई बार उपद्रवियों ने बिना जलाए ही पेट्रोल बम पुलिस पर फेंक दिए। बृहस्पतिवार को मदरसा और धार्मिक स्थल तोड़ने के दौरान चारों ओर से घिरी पुलिस पर पथराव शुरू हो गया। पुलिस ने भी पथराव का जवाब दिया और आंसू गैस के गोले भी दागने शुरू किए। अंधेरा होने लगा तो उपद्रवी कोल्ड ड्रिंक की बोतल ले आए और पास खड़ी मोटरसाइकिल से पेट्रोल भरने लगे। इसके बाद उन्होंने मौके पर ही पेट्रोल बम तैयार किए। इस दौरान उन्हें मात्र आधा घंटा लगा। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि पांच लड़के पेट्रोल बम

बना रहे थे और गलियों से पुलिस के वाहनों पर फेंक रहे थे। इस दौरान मुखानी एसओ की गाड़ी में एक पेट्रोल बम आकर गिरा और गाड़ी में आग लग गई। पुलिस कर्मी गाड़ी छोड़कर भागे। दूसरा पेट्रोल बम उपद्रवियों ने पुलिस की पीसीआर पर फेंका जिससे पुलिस की पीसीआर वैन में आग लग गई।

भागते हुए पुलिस के जवानों पर भी पेट्रोल बम फेंके गए। गनीमत रही की कई पेट्रोल बम में आग नहीं लग पाई। बनभूलपुरा थाना भी उपद्रवियों ने एक साथ कई पेट्रोल बम फेंककर फूंक दिया। यहां भी उपद्रवियों ने जमकर बवाल काटा।

वहीं, पुलिस ने 18 नामजद समेत पांच हजार उपद्रवियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया। घटनास्थल और आसपास के इलाके से पांच शव बरामद कर लिए गए हैं। उधर, डीजीपी अभिनव कुमार ने कहा कि उपद्रवियों को किसी भी दशा में बख्शा नहीं जाएगा। पुलिस चुन-

गोली लगने से इन लोगों की हुई है मौत

- फईम (26) मो. नासिर निवासी गांधीनगर
- शहनवाज (22) पुत्र शफीक अहमद निवासी आजाद नगर
- अनस (19) पुत्र नाहिद निवासी गफूरबस्ती
- जाहिद (45) पुत्र नूर मोहम्मद निवासी गफूरबस्ती
- प्रकाश कुमार (24) पुत्र श्यामदेव निवासी शहना गांव बाजपुर

एजेंसी

हल्द्वानी। हल्द्वानी में हुई हिंसा में गोली लगने से मरने वालों के पांच शवों की पहचान हो चुकी है। मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में इन शवों का पोस्टमार्टम कराकर पुलिस ने इनके शव परिजनों को सौंप दिए हैं। एक युवक की मौत बरेली ले जाते समय होने की बात सामने आई है। हालांकि प्रशासन ने इसकी पुष्टि नहीं की है। शुक्रवार को एक शव इंदिरानगर रेलवे फाटक पर मिलने की सूचना मिली। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर सुशीला तिवारी अस्पताल ले गई, जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने इसे मोर्चरी भेज दिया। इसके बाद मोर्चरी में शव के कपड़ों के जेब में मिले आधार कार्ड से इसकी पहचान प्रकाश कुमार (24) पुत्र श्यामदेव निवासी शहना गांव बाजपुर के रूप में हुई है। उधर शुक्रवार का मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में पांच शवों के पोस्टमार्टम हुए। मजिस्ट्रेट ने इसकी वीडियो रिकॉर्डिंग भी की। पोस्टमार्टम से पहले इन शवों का एक्सरे किया गया। सूत्रों के अनुसार सभी की गोली लगने से मौत हुई है। पुलिस ने शव परिजनों को सौंप दिए हैं।

सवाल उठ रहे हैं कि पुलिस ने बनभूलपुरा थाने से लेकर मलिक के बगीचे के बीच ही गोली चलाई। ऐसे में एक शव इंद्रानगर गौला गेट रेलवे फाटक के पास मिला। इससे सवाल ये उठ रहे हैं कि यहां कैसे शव आया। किसी ने मारकर इसे कहीं यहां तो नहीं फेंका है। पुलिस इसकी जांच कर रही है। सूत्रों की मानें तो डीएम वंदना ने भी इसका संज्ञान लिया है। उन्होंने सिटी मजिस्ट्रेट ऋचा सिंह से पूछा है कि कहां-कहां से ये शव मिले हैं।

यूपी के बरेली में जबरदस्त बवाल करने की कोशिश

श्यामगंज बाजार में पत्थरबाजी, कई लोगों को आई चोटें

- बरेली में बारादरी थाना क्षेत्र के श्यामगंज बाजार में उपद्रव हुआ, नारेबाजी के बाद पत्थरबाजी की घटना हुई

एजेंसी

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के बरेली में शुक्रवार को श्यामगंज बाजार में पथराव की घटना हुई. शहर में पुल के नीचे दुकान पर पथराव किया गया. पत्थरबाजी करके माहौल बिगाड़ने का प्रयास किया गया. बताया जाता है कि नारेबाजी का विरोध करने पर उपद्रवियों ने पथराव किया. पथराव से कई लोगों को चोटें लगीं।

बरेली में बारादरी थाना क्षेत्र के श्यामगंज बाजार में उपद्रव हुआ. यहां नारेबाजी के बाद पत्थरबाजी की घटना हुई. पत्थरों से कई लोगों को चोटें आईं. व्यापारियों ने बताया कि, दुकानदारों के साथ अभद्रता की गई। बताया जाता है कि बरेली में ज्ञानवापी मामले पर इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल, बरेली शरीफ के प्रमुख मौलाना तौकीर रजा ने जेल भरो का आह्वान किया था। इसके बाद भारी भीड़ जमा हो गई. इसी के

बाद पथराव की घटना हुई। बरेली के जिलाधिकारी रवींद्र कुमार ने कहा कि, मैं जनता से अपील करता हूं कि अपने घर में रहें. यदि अन्य कहीं घटना हुई है, तो उससे इतना आहत नहीं होना चाहिए कि हमारे घर के आसपास लॉ एंड आर्डर बिगड़े। यदि आपके घर के आसपास कोई गड़बड़ियां होती हैं तो हो सकता है आपके परिवार के लोग भी प्रभावित हों. जो मजिस्ट्रेट और पुलिस कर्मी ड्यूटी पर थे, उनके माध्यम से, धर्मगुरुओं के माध्यम से लगातार यही अपील की गई कि लोग शांति बनाए रखें। प्रदर्शनकारियों की गिरफ्तारी के सवाल पर डीएम ने कहा कि, गिरफ्तारी की जरूरत नहीं थी. मौलाना आए, नमाज पढ़ी, अपने लोगों से मिले, मीडिया ब्रीफिंग की और चले गए। रवींद्र कुमार ने कहा कि, कल हलद्वानी की घटना हुई तो उससे कुछ हड़बड़ी की स्थिति पैदा हुई होगी. लेकिन प्रशासन ने अपील की कि जनपद बरेली में प्रशासन हमेशा न्यूट्रल रहा है. किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया गया है. लोग देख भी रहे हैं कि भेदभाव नहीं किया जा रहा. यही कारण है कि लोगों ने नमाज पढ़ी और चले गए। समाचार एजेंसी के मुताबिक, बरेली में इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल, बरेली शरीफ के प्रमुख मौलाना तौकीर रजा को पुलिस ने हिरासत में लिया. उन्होंने ज्ञानवापी मामले पर जेल भरो का आह्वान किया था।

स्वामी प्रसाद मौर्य और उनकी सांसद पुत्री संघमित्रा के खिलाफ वारंट जारी

एजेंसी

लखनऊ। बिना तलाक़ लिए धोखाधड़ी से दूसरी शादी करने की आरोपी सांसद संघमित्रा व उनके पिता स्वामी प्रसाद मौर्य के हाजिर न होने पर कोर्ट ने जमानती वारंट जारी किया है। उन पर वादी के साथ मारपीट, गालीगलौज करने, जानमाल की धमकी व साज़िश रचने का आरोप है। सुशांत गोल्फ सिटी के रहने वाले वादी दीपक कुमार स्वर्णकार के परिवाद पर कोर्ट ने संघमित्रा, स्वामीप्रसाद मौर्या, नीरज तिवारी, सूर्यप्रकाश शुक्ला उर्फ़ चिंटू और रितिक सिंह को बतौर आरोपी कोर्ट में तलब किया था। परिवाद में आरोप है कि वादीऔर संघमित्रा वर्ष 2016 से लिव इन रिलेशन में रह रहे थे। कहा गया कि संघमित्रा और स्वामी प्रसाद मौर्य ने वादी को बताया कि संघमित्रा का पहले पति से तलाक़ हो गया है। लिहाज़ा वादी ने 3 जनवरी 2019 को संघमित्रा से उसके घर पर शादी कर ली। वहीं संघमित्रा ने 2019 के चुनाव में शपथपत्र देकर खुद को अविवाहित बताया। बाद में वादी को पता चला की संघमित्रा का मई 2021 में तलाक़ हुआ था।

गठबंधन सरकार बनाने का नवाज शरीफ ने किया आह्वान

पड़ोसियों के साथ रिश्ते मजबूत करने पर दिया जोर

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान और भारत के बीच रिश्तों में वर्षों से खटास है। इस बीच शरीफ ने कहा कि वह पड़ोसी देशों के साथ संबंध सुधारने की कोशिश करेंगे। नवाज के इस बयान को लोग भारत के साथ जोड़कर देख रहे हैं कि नवाज भारत के साथ रिश्तों को मजबूत करने के लिए काम करेंगे। पाकिस्तान में मतगणना जारी है। कई सीटों के नतीजे जारी हो गए हैं। अब तक के नतीजों के अनुसार, पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के समर्थक आगे चल रहे हैं। इस बीच पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने शुक्रवार को गठबंधन सरकार का आह्वान किया। उम्मीद जताई जा रही है कि पाकिस्तान में इस बार त्रिशंकु संसद गठित हो सकती है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, शुक्रवार रात एक बजे तक पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ समर्थक 98 सीट जीत चुके हैं। वहीं, पाकिस्तान मुस्लिम लीग- नवाज 69 तो पीपीपी 51 सीट जीत चुकी है। पाकिस्तान और भारत के बीच रिश्तों में वर्षों से खटास है। इस बीच शरीफ

ने कहा कि वह पड़ोसी देशों के साथ संबंध सुधारने की कोशिश करेंगे। नवाज के इस बयान को लोग भारत के साथ जोड़कर देख रहे हैं कि नवाज भारत के साथ रिश्तों को मजबूत करने के लिए काम करेंगे। नवाज ने आगे कहा कि हम दुनिया और अपने पड़ोसियों के साथ संबंध सुधारेंगे और पड़ोसियों के साथ सभी मुद्दों को हल करेंगे। उन्होंने अपने समर्थकों से पूछा कि क्या वे उनकी राय से सहमत हैं, जिसका सैकड़ों समर्थकोंम ने समर्थन किया। शरीफ ने ब्रिटेन से वापस आकर भारत की तारीफ की थी। उन्होंने कहा था कि हमारे आसपास के देश चांद पर पहुंच गए हैं, लेकिन पाकिस्तान अब भी जमीन से नहीं उठा है। वे इस्लामाबाद में पीएमएल-एन के कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा गंभीर आर्थिक स्थिति की ओर इशारा करते हुए कहा, हमारे पड़ोसी चांद पर पहुंच गए हैं, लेकिन हम अब तक जमीन से उठ भी नहीं पाए हैं। यह इस तरह से नहीं चल सकता। हम अपने पतन के लिए खुद जिम्मेदार रहे हैं, अन्यथा यह देश एक अलग जगह पर पहुंच गया होता। उन्होंने कहा कि साल 2013 में देश बिजली की भारी लोड शेडिंग का सामना कर रहा था। तब हमने आकर इसे खत्म किया। पूरे देश से आतंकवाद को खत्म किया। इसके अलावा कराची की शांति बहाल की, राजमार्गों का निर्माण हुआ, सीपीईसी आया और विकास एवं समृद्धि का एक नया युग शुरू हुआ।

पुणे में पत्रकार वागले की कार पर हमला

पीएम मोदी पर की थी विवादास्पद टिप्पणी

एजेंसी

पुणे। पुलिस अधिकारी ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं ने पत्रकार की कार पर स्याही फेंकी। पुलिस सुरक्षा के तहत कार में सवार वागले राष्ट्र सेवा दल की ओर से आयोजित निर्भय बानो कार्यक्रम में भाग लेने के लिए जा रहे थे।

महाराष्ट्र के पुणे में पत्रकार निखिल वागले की कार पर शुक्रवार को कथित तौर पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने हमला किया। अधिकारियों ने बताया कि हमले के वक्त वह एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए जा रहे थे। कार्यकर्ता भाजपा के वरिष्ठ नेता को भारत रत्न से सम्मानित किए जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और लालकृष्ण आडवाणी के खिलाफ वागले की टिप्पणियों का विरोध कर रहे थे। डेक्कन पुलिस थाने के एक अधिकारी ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं ने पत्रकार की कार पर स्याही फेंकी। पुलिस सुरक्षा के तहत कार में सवार वागले राष्ट्र सेवा दल की ओर से आयोजित निर्भय बानो कार्यक्रम में भाग लेने के लिए जा रहे थे। पत्रकार की कार पर हमले को लेकर पुणे के एसीपी प्रवीण पाटिल ने कहा कि यहां एक कार्यक्रम होना था। पुलिस ने कार्यक्रम के लिए अनुमति नहीं दी थी, क्योंकि जो व्यक्ति यहां आ रहा था उसके खिलाफ केस दर्ज थे। पुलिस उनसे पहले ही संपर्क कर चुकी थी। लेकिन उन्होंने फिर भी कार्यक्रम में आने चाहते थे। हमने पुलिस बल की पर्याप्त तैनाती की थी। लेकिन जैसे ही निखिल अपने निर्धारित कार्यक्रम स्थल से थोड़ा दूर थे और किसी ने उनकी कार पर पथराव कर दिया। एसीपी ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

हल्दवानी हिंसा को भाजपा सांसदों ने बताया एक साजिश

शिवसेना सांसद ने ध्रुवीकरण को ठहराया जिम्मेदार

एजेंसी

नई दिल्ली। बीजेपी के राज्यसभा सांसद हरनाथ यादव ने गुरुवार की हिंसा के बारे में कहा, हल्द्वानी की घटना एक साजिश है। बम, देशी पिस्तौल और अन्य हथियारों का इस्तेमाल किया गया और सरकारी अधिकारियों और पुलिस पर हमला किया गया।

उत्तराखंड के हलद्वानी में हुई हिंसा को भाजपा के कई सांसदों ने साजिश बताया। उन्होंने शुक्रवार को कहा कि उत्तराखंड के हलद्वानी में गुरुवार हुई हिंसा एक साजिश प्रतीत होती है और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जरूरत है। वहीं दूसरी ओर शिवसेना के एक विधायक ने इसे चुनावी लाभ के लिए भगवा पार्टी द्वारा बनाए गए ध्रुवीकरण का परिणाम बताया। बीजेपी के राज्यसभा सांसद हरनाथ यादव ने गुरुवार की हिंसा के बारे में कहा, हल्द्वानी की घटना एक साजिश है। बम, देशी पिस्तौल और अन्य हथियारों का इस्तेमाल किया गया और सरकारी अधिकारियों और पुलिस पर हमला किया गया। दंगाइयों को देखते ही गोली मारने का आदेश होना चाहिए, उनके साथ नरमी बरतने की जरूरत नहीं है। उत्तर प्रदेश से सांसद ने कहा कि उत्तराखंड सरकार को हर घर की तलाशी लेनी चाहिए और अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। भाजपा सांसद और उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा कि अवैध संरचनाओं को हटाने के लिए अतिक्रमण विरोधी अभियान कोई नई बात नहीं है। उन्होंने कहा, दुर्भाग्य से हल्द्वानी में पुलिसकर्मियों पर हमला दुखद है। जैसा कि सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा है, दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

इधर, शिवसेना (यूबीटी) सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने हिंसा के लिए भाजपा द्वारा बनाए गए ध्रुवीकरण को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा जब इरादा सिर्फ ध्रुवीकरण का हो तो यही होता है, कर्फ्यू लगा दिया जाता है, मणिपुर की घटनाओं को देखिए। हर राज्य में बीजेपी ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि ध्रुवीकरण से उसे फायदा होगा। उनका आजमाया हुआ और परखा हुआ मॉडल वोटों के लिए लोगों का ध्रुवीकरण करना है। चतुर्वेदी ने आगे कहा, मुझे उम्मीद है कि गृह मंत्री इस पर संज्ञान लेंगे,÷। अगर पुलिस पर हमला किया गया है तो यह शर्मनाक है, यह दर्शाता है कि भाजपा शासित राज्यों में गुंडागर्दी किस तरह व्याप्त है।

रेलवे में नौकरी की मारामारी

1.39 लाख पदों के लिए 2.37 करोड़ अभ्यर्थी

एजेंसी

नई दिल्ली। रेलवे की नौकरियों के लिए युवाओं में भारी क्रेज है। हाल ही में 1.39 लाख रिक्तियों को भरने के लिए दो बड़ी परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इसके लिए 2.37 करोड़ से अधिक अभ्यर्थी उपस्थित हुए। संसद सत्र के दौरान पिछले पांच वर्ष में और चालू वर्ष में 302550 (अंतिम) अभ्यर्थियों को विभिन्न समूह %ग% पदों (स्तर-1 और संरक्षा संबंधित पदों सहित) के लिए पैनलबद्ध किया गया है। संसद सत्र में लोकसभा सदस्य एम.वी.वी सत्यनारायण ने सात फरवरी को रेलवे मंत्री से पूछा था कि विगत पांच वर्षों में रेलवे द्वारा भर्ती किए गए नए कर्मचारियों का ब्यौरा क्या है। क्या इस प्रकार भर्ती किए गए नए कर्मचारियों की संख्या में समय के साथ कमी आई है। यदि हां तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है। क्या रेलवे अगले कुछ वर्षों में अपने कार्यबल में कटौती करने की योजना बना रही है। यदि हां तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है। उसके जवाब में रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव ने बताया, भारतीय रेल के आकार, स्थानिक विस्तार और

68 दिनों में 133 शिफ्टों में आयोजित की गई थी। इसी तरह केंद्रीयकृत रोजगार सूचना आरआरसी 1/2019 (लेवल 1) के लिए कंप्यूटर आधारित परीक्षा 1.11 करोड़ से अधिक अभ्यर्थियों के लिए 17 अगस्त 2022 से 11 अक्तूबर 2022 तक पांच चरणों में 15 भाषाओं में 191 शहरों के 551 केंद्रों पर 33 दिनों में 99 शिफ्टों में आयोजित की गई थी। रेल मंत्री ने सदन को बताया, कार्यभार की बदलती स्थितियों, नई प्रौद्योगिकियों की शुरुआत, कार्यप्रणाली, नई परिसंपत्तियों के सृजन आदि को ध्यान में रखते हुए जनशक्ति नियोजन में स्वीकृत पदों की संख्या की निरंतर समीक्षा करने की आवश्यकता होती है। रेलों में विभिन्न गतिविधियों के लिए नियमित रूप से कार्य अध्ययन किए जाते हैं। यह कार्य भारतीय रेल को अपने मानव संसाधनों का सबसे कुशल और उत्पादक तरीके से उपयोग करने में सक्षम बनाता है।

परिचालन की महत्ता को देखते हुए इसमें पदों का रिक्त होना और उन्हें भरा जाना एक सतत प्रक्रिया है। उन रिक्तियों को परिचालनिक आवश्यकताओं के अनुसार, रेलवे द्वारा मुख्यतः भर्ती एजेंसियों को मांगपत्र देकर भरी जाती है। इस प्रक्रिया के दौरान, पद रिक्त हो सकते हैं। इन्हें बाद में भरा जाता है। हाल ही में 1.39 लाख रिक्तियों को भरने के लिए दो बड़ी परीक्षाएं आयोजित की गई थीं, जिसमें 2.37 करोड़ से अधिक अभ्यर्थी उपस्थित हुए हैं। केंद्रीयकृत रोजगार सूचना, 1/2019 (गैर तकनीकी लोकप्रिय कोटियां) के लिए पहले चरण की कंप्यूटर आधारित परीक्षा 1.26 करोड़ से अधिक अभ्यर्थियों के लिए 28 दिसंबर 2020 से 31 जुलाई 2021 तक 7 चरणों में 15 भाषाओं में 211 शहरों के 726 केंद्रों पर

त्रिलोक में मर्यादा पुरुषोत्तम केवल श्री राम हुए

द अचीवर टाइम्स सुशील अवस्थी

महमूदाबाद, सीतापुर। तीनों लोकों में एक ही पुरुषोत्तम है कौशल्या नंदन राम, जिन्होंने इस लोक में मानव के चरित्र को अपनी महान भूमिका से परिभाषित किया है। उनकी महिमा अनंत है। यदि इस संसार के प्रत्येक घर में उनका मंदिर बनाया जा सके तो भी उनके चरित्र की स्वीकार्यता को पूर्ण रूप से दिग्दर्शित नही किया जा सकता। मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के आदर्शों की प्राण प्रतिष्ठा हर मन मंदिर में स्थापित की जा सके तभी यह व्यापक हो सकता है। इसीलिए जन मानस में यह विश्वास प्रचलित है राम से बड़ा राम का नाम। संकटा देवी धाम महमूदाबाद में चल रहे श्री शतचंडी महायज्ञ के अवसर पर आयोजित श्रीराम कथा के छठें दिवस अंतर्राष्ट्रीय कथा वाचिका ऋचा मिश्रा ने श्रोताओं को कथा का रसपान कराते हुए प्रवचन के दौरान उक्त बातें कही। उन्होंने कहा रामावतार मानव रूप में मर्यादा का अवतरण है। राम का नाम उनके चरित्र का सजीव दर्शन बन गया है। हनुमान राम धुन में आज तक रमे हुए है। जहां भी राम का नाम लिया जाता है वह विद्यमान रहते हैं। राम का नाम लेने वाला मानव स्वयं पवित्र हो जाता है। यह राम के चरित्र का प्रभाव है। उन्होंने कहा कि जीवन में गुरु की आज्ञाओं का सदैव पालन करना चाहिए। मनुष्य को बेटा बेटियों में भेद नहीं करना चाहिए। बेटियां दो परिवारों को रोशन करती है। यदि बेटियां नहीं होंगी तो सृष्टि का संतुलन बिगड़ जाएगा। आज हर क्षेत्र में बेटियां परिवारों व समाज का नाम रोशन कर रही हैं। बेटियों की भ्रूण हत्या इस धरती का सबसे बड़ा पाप है। अनेक माता-पिता दहेज दानव के भय से बेटियों को जन्म लेने नहीं देते। दहेज दीमक की तरह समाज को खोखला बना रहा है। आदि काल में दहेज का नामोनिशा नहीं था। संगीतमयी श्री रामकथा में कथावाचिका के द्वारा मां सीता का गौरी पूजन, मां भगवती का सीता जी को वरदान देना, धनुष भंग, सीता स्वयंवर, परशुराम-लक्ष्मण संवाद सहित श्री रामचरित मानस के अनेक प्रसंग सुनाकर भक्तों को श्रीराम भक्ति के रस में सराबोर किया। कथा के दौरान विधानसभा कुर्सी के विधायक साकेंद्र प्रताप वर्मा, मां संकटा देवी धाम समिति के अध्यक्ष आरके वाजपेयी, डॉ एमणि मिश्रा, प्राची दीक्षित, आशा दुबे, उर्मिला रस्तोगी, करूणाशंकर शुक्ल, सरोज शुक्ल, मनोज शुक्ल, शिवम विक्रांत, राजेंद्र राजपूत, सोनी जायसवाल, रवि अवस्थी, अरविंद त्रिपाठी, नरेंद्र पांडेय, राजकुमार पांडेय, राजकुमार वर्मा सहित हजारों की संख्या में कथा प्रेमी मौजूद रहे।

मूर्तियों को विधि-विधान से कराया गया धूणाधिवास व गंधाधिवास

मां संकटा देवी धाम में चल रहे श्री शतचंडी महायज्ञ के छठें दिन यज्ञाचार्य पंडित अखिलेश चंद्र शास्त्री सहित अन्य आचार्यों ने पूर्व आवाहित देवताओं के साथ गौ पूजन सम्पन्न हुआ। यज्ञ के दौरान चंडी सहस्त्रनामावल्या, पीठ देवता व नवार्ण मंत्र का हवन सम्पन्न हुआ। नवनिर्मित मंदिरों में स्थापित होने वाली देव प्रतिमाओं को शुक्रवार को विधिवत पूजन-अर्चन के बाद धूपाधिवास व गंधाधिवास कराया गया। शनिवार को पूजन-अर्चन के बाद प्रतिमाओं का मिष्ठानाधिवास के साथ आरती पूजन संपन्न होगा। श्री शतचंडी महायज्ञ में मां संकटा देवी धाम समिति के अध्यक्ष आरके वाजपेयी, किरन वाजपेयी, आंजनेय आशीष वाजपेयी, ऋजुजा वाजपेयी आरजे वर्मा, सुशीला वर्मा, शशांक वर्मा, शिवानी वर्मा, चंद्रकांत रस्तोगी, रिचा रस्तोगी, शशिकांत रस्तोगी, सोनम रस्तोगी, पीयूष वर्मा, ज्योति वर्मा, प्रवीण अग्रवाल, सारिका अग्रवाल ने विधि-विधान से पूजन-अर्चन किया।

नगर निगम कार्यालय में महापौर अर्चना वर्मा की अध्यक्षता में कार्यकारिणी समिति की बैठक का आयोजन नगर निगम द्वारा किया गया

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। नगर निगम कार्यालय में महापौर अर्चना वर्मा की अध्यक्षता में कार्यकरिणी समिति की बैठक का आयोजन नगर निगम द्वारा की गई। जिसमें नगर आयुक्त महोदय श्री कामता प्रसाद सिंह जी, उप-सभापति श्री वेद प्रकाश मौर्य, कार्यकारिणी समिति के समस्त सदस्यगण- दिवाकर मिश्रा, सोनी मिश्रा, राकेश राजपूत, सुधीर गुप्ता, मो0 जीशान, शिव ओम सक्सेना, शब्बन अली, विजय बहादुर वर्मा, छोगेलाल राठौर, उप नगर आयुक्त संगीता बिजलानी कुमारी, मुख्य कर निर्धारण अधिकारी राकेश कुमार सोनकर, मुख्य अभियंता सिविल एस0के0 अम्बेडकर, लेखाधिकारी सी0पी0 मौर्य, सहायक अभियंता जलकल प्रेम चन्द्र आर्य एवं अन्य अधिकारी व कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। बैठक में मुख्य रूप से नगर निगम के वर्ष 2024-25 बजट के आय-व्यय पर विस्तृत चर्चा की गई। साथ ही नगर क्षेत्र में स्थित मैरिज लॉन, होटल, नर्सिंग होम आदि से मानक के अनुरूप कर वसूली पर चर्चा की गई एवं नगर क्षेत्र में स्थित समस्त शराब की दुकानों का सर्वे भी कराये जाने पर भी सुझाव दिए गए, जिस पर आवश्यक कार्यवाही किये जाने हेतु सम्बंधित को निर्देशित किया गया।

भगवान राम पर अभद्र टिप्पणी करने को लेकर जन आक्रोश

सीतापुर। एक व्यक्ति ने भगवान राम पर अभद्र टिप्पणी कर दी। देखते ही देखते लोगों में आक्रोश फैल गया और भीड़ सदरपुर थाने जा पहुंची। कई हिंदू संगठन कार्यकर्ता भी वहां पहुंच गए और उसके खिलाफ थाने पर तहरीर दी। आपको बता दें कि एक तरफ जहां अयोध्या में रामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर पूरे देश में उत्साह का माहौल है। वहीं कुछ सिरफिरे अपनी अनाप-शनाप हरकतों से बाज नहीं आ रहे हैं। ऐसा ही एक मामला जनपद सीतापुर के सदरपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत देखने को मिला। यहां के रहने वाले अमान इदरीशी नाम के व्यक्ति ने भगवान राम के विरुद्ध अमर्यादित शब्दों का प्रयोग किया और उसे इंस्टाग्राम पर विपिन गुप्ता नाम के व्यक्ति के इंस्टाग्राम पर मैसेज किया।अखंड हिंदू वाहिनी जिला सचिव राहुल गुप्ता कई कार्यकर्ताओं के साथ थाने पहुंच गए और उसके खिलाफ तहरीर दी है।पुलिस तहरीर लेकर जांच में जुट गई है।

एक नज़र

हरदा में पटाखा फैक्ट्री के भष्ट होने के बाद मध्य प्रदेश प्रशासन हुआ अलर्ट

द, अचीवर टाइम्स से पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश। मध्य प्रदेश के हरदा में बस्तियों के बीच बनी पटाखा फैक्ट्री अचानक भष्ट हो गई जिससे गंभीर हादसा सामने आया, तभी से मध्य प्रदेश प्रशासन अलर्ट हो गया है हर जिले में दीपावली के दौरान पटाखा बेचने वाले लाइसेंस धारियों के पास पुलिस और राजस्व प्रशासन पहुंचकर जांच में जुट गया है उसी कड़ी में कटनी पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन एवं कटनी कलेक्टर अवि प्रसाद के निर्देशन पर राजस्व एवं पुलिस विभाग दीपावली के दौरान लाइसेंस धारी की दुकानों में पहुंचकर बारीकी से जांच कर रहे है ,बहोरीबंद थाना प्रभारी सुरेंद्र शर्मा बहोरीबंद तहसीलदार गौरव पांडे दलबल के साथ थाना व तहसील क्षेत्र के हर छोटे बड़े गांव पहुंचकर बारीकी से दुकानों की जांच की जा रही है जिससे हरदा जैसे गंभीर घटना दोबारा ना घट सके।

लावारिस जप्ती वाहनों की हुई खुली नीलामी

द, अचीवर टाइम्स से पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश, कटनी। पुलिस मुख्यालय मध्य प्रदेश भोपाल द्वारा थानों में खड़े पुराने वाहनों के विधिक निस्तारण का निर्देश जारी होने पर कटनी पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन, उप पुलिस अधीक्षक उमराव सिंह के आदेशानुसार थाना प्रभारी रीठी राजेंद्र मिश्रा द्वारा विशेष अभियान चलाकर लंबे समय से थाना में धारा 25 पुलिस एक्ट के तहत जप्ती 6 नग मोटरसाइकिले जिनको स्वामी की तलाश हेतु सम्यक प्रयासों के बावजूद भी वाहन स्वामी का पता न चलने पर विधिवत इश्तहार जारी पी.डब्ल्यू.डी. इंजीनियर द्वारा अपसेट प्राइज का निर्धारण कराया जाकर एस.डी.एम. कटनी द्वारा दिनांक 9/2/24 को थाना परिसर रीठी में विधिवत खुली नीलामी कराई गई जिसमें आठ बोलीदारों ने भाग लिया। अपसेट प्राइज 12,120/ होने पर नीलामी प्रारंभ की गई जो अंतिम बोली 53,000/ में अजहरुद्दीन पिता अब्दुल सत्तार 32 वर्ष निवासी सुभाष वार्ड कटनी के नाम समाप्त हुई जिनके द्वारा रकम 53,000/ जमा किए जाकर छह नग मोटरसाइकिल सुपुर्दगी में प्राप्त की गई है। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी रीठी राजेंद्र मिश्रा एवं मलखाना प्रभारी प्रधान आरक्षक 142 राम पाठक व थाना स्टाफ की सराहनीय भूमिका रही।

बहोरीबंद थाना प्रभारी ने किया परीक्षा केंद्रों का भ्रमण

द, अचीवर टाइम्स से पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश, कटनी। कटनी जिले के बहोरीबंद थाना प्रभारी सुरेंद्र शर्मा ने थाना क्षेत्र ग्राम पंचायत कुआं केंद्र पहुंचकर चल रही बोर्ड परीक्षा केंद्रों का भ्रमण किया भ्रमण के दौरान परीक्षा केंद्र के चारों तरफ पहरा लगाया और दूर दराच पर खड़े लोगों को केंद्र से 100 मीटर की दूरी बनाए रखने की समझाइए दी।

उच्च प्राथमिक विद्यालय अकड़ोली में वार्षिक उत्सव पर प्रतियोगिता आयोजित

द अचीवर टाइम्स/चेतन कुमार

हापुड़। जनपद हापुड़ में विभागीय आदेश के अनुसार उच्च प्राथमिक विद्यालय अकड़ोली में वार्षिक उत्सव शिक्षक,अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमे विभागीय दिशा निर्देश के अनुसार प्रधानाध्यापक मुकेश कुमार द्वारा उपस्थित सभी अभिभावकों को विद्यालय संबंधित एवम विभाग द्वारा दी जा रही योजनाओं के विषय मे जैसे डीबीटी निपुण भारत, कायाकल्प,ऑउट ऑफ स्कूल आदि को विस्तार से जानकारी दी। इसके बाद सभी कक्षा के बालक व बालिका के लिए 100 मीटर,200मीटर ,दौड़ ,पोस्टर, भाषण,प्रतियोगिता का आयोजन किया और ततपश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित एवम माल्यापर्ण कर एस एम सी के अध्यक्ष मनोज कुमार एवम बच्चो की माताओ द्वारा किया ।कार्यक्रम में बच्चों ने नुक्कड़ नाटक ,कविता,देश भक्ति के गीत आदि कार्यक्रम किए।अंत मे सभी प्रतियोगिता में सफल छात्रों को मैडल,ट्रॉफी और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया ।विद्यालय में 90 त्रऔर अधिक उपस्थित वाले बच्चों की माताओ को भी प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया।विद्यालय के उत्कृष्ट छात्र/छात्राओं में कु रिया, परी, छवि, अंशुल, वंशिका, दीपांशी ,आयुष, लक्की, दीप कोरी, निर्मल, हरवंश, शोर्य, नैतिक, आदि रहे। इस अवसर पर ललित कुमार एआरपी साइंस हापुड़ ,माधुरी वर्मा ,आरजू सिंह, चारु जैन,बबली देवी,कांति देवी एकता,सर्वेश, अंशु,प्रेमचंद ,मनोज कुमार आदि उपस्थित रहे।

माँ संकटा देवी धाम में हुआ युवा सम्मेलन

द अचीवर टाइम्स सुशील अवस्थी

महमूदाबाद, सीतापुर। भारत भूमि महापुरुषों की भूमि रही है। इसकी अस्मिता के साथ खिलवाड़ करने वालों को समय-समय पर देशभक्तों द्वारा मुंह तोड़ जवाब दिया गया है। हमारा देश राम के आदर्शों पर चलने वाला देश है। हर युवा को राम के आदर्शों का पालन कर उनके बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए। अपना देश पुनः विश्व गुरु बनने की ओर लगातार अग्रसर है। उक्त बातें मां संकटा देवी धाम में चल रहे श्री शतचंडी महायज्ञ के छठे दिन प्रदेश सरकार के खाद्य रसद एवं नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री सतीश शर्मा ने युवाओं से भरे खचाखच पंडाल में मां संकटा देवी धाम परिसर में युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि देश पर मर मिटने वाले अमर शहीदों के जीवन से हमें लगातार प्रेरणा लेनी चाहिए। केंद्र व प्रदेश सरकार बिना भेदभाव के धार्मिक स्थलों का विकास लगातार कर रही है। कार्यक्रम में पधारे भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष व फर्रुखाबाद के एमएलसी प्रांशु दत्त द्विवेदी ने कहा कि हमें आपस में भेदभाव न करके सर्व समाज को आगे बढ़ाना होगा तभी हम फिर से विश्व गुरु का पद प्राप्त कर सकते हैं। सरकार लगातार महिला सुरक्षा के साथ गरीबों के उत्थान के लिए तमाम प्रकार की योजनाएं चल रही है। देश के युवाओं की प्रतिभा निखारने को लेकर लगातार सरकार द्वारा अवसर उपलब्ध कराये जा रहे हैं। समय-समय पर देश के युवाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा सम्पूर्ण विश्व को मनवाया है। समारोह को विधानसभा कुर्सी के विधायक साकेंद्र प्रताप वर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि देश का युवा ही देश को बदलने की ताकत रखता है। जिस ओर युवा अपना रूख कर लेता है उसे और जमाना भी चलने लगता है। कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों ने चल रहे श्री शतचंडी महायज्ञ में आहुतियां डालने के साथ गर्भग्रह में पहुंचकर मां संकटा सहित अन्य देवी-देवताओं के दर्शन कर पूजन-अर्चन किया। अतिथियों ने मंदिर विकास के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री से वार्ता कर समुचित विकास कराए जाने का आश्वसन प्रबंध समिति को दिया। युवा सम्मेलन में आए अतिथियों का स्वागत मां संकटा देवी धाम समिति के अध्यक्ष आरके वाजपेयी, डॉ भास्कर शर्मा, सरोज शुक्ल, शशांक वर्मा, शिवदास पोरवाल, मुरारी लाल रस्तोगी, कृतार्थ मिश्र, विशाल गुप्त, सुरेंद्र सिंह, पीयूष वर्मा, राजकुमार वर्मा, अशोक नाग, राजेंद्र मुंशी, अरविंद त्रिपाठी, नरेंद्र पांडेय, शिवम विक्रांत सहित अन्य लोगों द्वारा किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में युवा मौजूद रहे। संचालन डॉ. रजनीश मिश्र ने किया।

वॉर्ड नंबर 37 में इंटरलॉकिंग टाईलस लगाने के कार्य का पालिका अध्यक्ष पुष्पा देवी किया शिलान्यास

द अचीवर टाइम्स/चेतन कुमार

हापुड़। हापुड़ नगर पालिका क्षेत्र के वॉर्ड नंबर 37 के मौहल्ला कृष्णानगर व भगवानपुरी में कृष्णा कपड़े वाले के यहां से राजवीर सिंह के मकान तक 13 लाख13 हजार रुपये से होने वाले नाली व इंटरलॉकिंग सड़क निर्माण कार्य नगर पालिका अध्यक्ष पुष्पा देवी शिलान्यास किया इस दौरान सभासद ने पालिका अध्यक्ष का अभार व्यक्ति किया। तो वही नगर पालिका अध्यक्ष पुष्पा देवी ने कहा कि शहर का विकास करना हमारी पहली प्राथमिकता है और शहर में नाली,खड़ंजे,टूटी फुटी सड़कों के निर्माण व पानी से संबंधित समस्या व साफ सफाई व्यवस्था को लेकर आधिकारीयो को निर्देश दिए हुए हैं और उनके द्वारा शहर के विकास के लिए धीरे-धीरे हर वार्ड के लोगों को होने वाली समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है और बोर्ड बैठक में प्रस्तावित वाकी के हर वार्ड में होने वाले निर्माण कार्यों का शीघ्र शिलान्यास कर निर्माण कार्य चालू कर दिए जाएंगे। इस अवसर पर वार्ड सभासद नगर पालिका कर्मचारी एवम समस्त वार्डवासी भी उपस्थित रहे।

फर्राटा भर गाजियाबाद व दिल्ली के लिए दौड़ रहे 7 डग्गामार वाहनों को एसपी ने किया सीज

द अचीवर टाइम्स/चेतन कुमार

हापुड़। हापुड़ नगर में डग्गामार वाहनों संचालकों में उस समय हडकंप मच गया जब शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा दिल्ली गढ रोड पर मल्होत्रा बैटरी के नजदीक खाली पड़े प्लाट व सडको पर से अवैध रूप से चल रहे फर्राटा भर रहे डग्गामार वाहनों के विरुद्ध कारवाई करने के लिए जैसे ही गाड़ी से सड़कों पर उतरे। इस दौरान अवैध रूप से हापुड़ से गाजियाबाद व दिल्ली के लिए परमीट व फिटनेस के चल रहे डग्गामार वाहनों के संचालन कर रहे लोगों के होश उड़ गए। तो वही पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने चेकिंग के दौरान हापुड़ कोतवाली प्रभारी नीरज कुमार की मौजूदगी में यातायात प्रभारी निरीक्षक उपदेश कुमार ने मौके पर अवैध रूप से चल रहे तथा सार्वजनकि स्थानों पर खड़े 7 अवैध व डग्गामार वाहनों पर सीज की कारवाई की गई। वही पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने मीडिया से बता कि उन्हें काफी समय से हापुड़ नगर में किसी सरकारी आदमी की मिली भगत से अवैध व डग्गामार वाहनों के चलने की सूचना मिल रही थी उनके पास वाहनों के नंबर भी थे। प्रथम दृष्टा इस कार्य को रोकने की जिम्मेदारी स्थानीय बीट व हलका इंचार्ज फिर या यातायात पुलिस करनी चाहिए थी और पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने यातायात प्रभारी निरीक्षक उपदेश कुमार को चेतावनी देते हुए कहा की आगे से ऐसे अवैध व डग्गामार वाहनों का संचालन नहीं होना चाहिए।

जिला कारागार में चल रहे वार्षिक साताहिक खेल कूद समारोह के तीसरे दिन महिला बंदियों के बीच में विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गई

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर जेल में चल रहे वार्षिक साप्ताहिक खेलकूद समारोह के तीसरे दिन महिला बंदियों के बीच में विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें महिला बंदियों के द्वारा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आज महिला बंदियों के बीच में कबड्डी, लेमन स्पून रेस, म्यूजिकल चेयर ,बैडमिंटन, बैलून रेस एवं पगबांधा रेस आदि का आयोजन किया गया। कबड्डी प्रतियोगिता में टीम पद्मावती विजेता रही जिसमें पूजा, मीना, विमला सदावती, पुष्पा टीम का हिस्सा थी, जिन्होंने टीम लक्ष्मीबाई को हराकर कबड्डी प्रतियोगिता को जीता। इस प्रकार लेमन स्कूल ड्रेस में मीणा प्रथम, विमल द्वितीय एवं संतोषी तृतीय स्थान पर रही म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता की विजेता दीपशिखा को घोषित किया गया। बैडमिंटन की प्रतियोगिता में महिला बंदियों के बीच कई मैच खेले गए जिसमें दीपशिखा को विजेता घोषित किया गया। बैलून रेस में कोमल एवं दीप शिखर प्रथम विजेता घोषित की गई। इस प्रकार पग बाधा दौड़ में भी कोमल एवं दीपशिखा ही विजेता रही। कार्यक्रम के अंत में सभी महिला बंधिया ने खुशनुमा माहौल में संगीत के साथ समूह नृत्य भी किया। इस प्रकार की खेलकूद प्रतियोगिताओं से महिला बंदियों के बीच पनप रहे अवसाद एवं तनाव को कम करने में मदद मिलती है ।इस प्रकार के खुशनुमा माहौल में सभी महिला बंदी या तो कार्यक्रम में भाग लेती हैं या दर्शक बनकर आनंद का अनुभव करती हैं। कार्यक्रम की सभी प्रतियोगिताओं में दर्शक महिला बंदियों के द्वारा तालियां बजाकर खिलाड़ी महिला बंदियों का उत्साह वर्धन किया और खूब मनोरंजन किया। इस अवसर पर जेल अधीक्षक मिजाजीलाल ,जेलर कृष्ण मुरारी गुप्ता, डिप्टी जेलर पूनम तिवारी,सुभाष यादव, कृष्ण कुमार पांडे, सुरेंद्र गौतम तथा अन्य महिला कर्मियों द्वारा कार्यक्रम में भागीदारी की गई।

बाणसागर बैक वाटर के टापुओं को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करनें में मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड ने दिखाई दिलचस्पी

- पर्यटन सुविधाओं के विकास एवं विस्तार के कलेक्टर श्री प्रसाद के सुझाव और प्रस्ताव को बोर्ड ने माना उपयोगी।
- गांव का नाम, खसरा क्रमांक एवं रकवा की मांगी जानकारी।

द, अचीवर टाइम्स से पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश, कटनी। कटनी जिले मे बाण सागर बैक वाटर में स्थित टापुओं को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करनें के कलेक्टर अवि प्रसाद द्वारा भेजे गए प्रस्ताव पर मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड ने गहरी दिलचस्पी दिखाई है। कलेक्टर श्री प्रसाद द्वारा विजयराघवगढ़ विकासखण्ड के अंतर्गत बरही के पास बाणसागर के बैक वाटर जलभराव क्षेत्र के टापुओं, जलसंरचनाओं में पर्यटन की अपार संभावनाओं के संबंध मे पत्र प्रेषित किया गया था। इस पर मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड ने कलेक्टर द्वारा भेजे गए सुझाव और प्रस्ताव को उपयोगी माना है। साथ ही उन्होंने कटनी जिले मे बाणसागर बैक वाटर में स्थित टापुओं और स्थल को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने हेतु ग्राम का नाम, खसरा क्रमांक एवं रकबा की जानकारी चाही है। ताकि मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा विधिवत भूमि आवंटन की प्रक्रिया शुरू की जा सके। विदित हो कि बाणसागर डूब क्षेत्र में मॉ चंडिका का ऐतिहासिक मंदिर है जो कटनी एवं आस-पास के जिलों की श्रद्धा और आस्था का केन्द्र है। साथ ही कुछ ही दूरी पर बांधवगढ़ नेशनल पार्क है जहां अत्यधिक मात्रा में पर्यटकों का आवागमन निरंतर बना रहता है। जिले के इन टापुओं में पर्यटन से संबंधित गतिवधियां शुरू हो जाने से जिले में एक नया पर्यटन केन्द्र विकसित होगा। वहीं आस-पास के लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे तथा क्षेत्र के राजस्व में वृद्धि होगी। इसके अलावा बांधवगढ़ नेशनल पार्क में आने वाले पर्यटकों के लिए भी यह स्थान आर्कषण का केन्द्र बन सकता है। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर श्री प्रसाद द्वारा कोनियां और इटौरा में जल पर्यटन की संभावनाओं के मद्देनजर बाणसागर डैम में मोटर वोट से यहां की नैसर्गिक प्राकृतिक छटा और यहां पर्यटन की अपार संभावनाओं का करीब 6 किलोमीटर की यात्रा कर यहां विकसित की जा सकने वाली पर्यटन सुविधाओं का विहंगावलोकन किया था। इसके बाद ही कलेक्टर श्री प्रसाद ने मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड को यहां की स्थानीय परिस्थितियों और संभावनाओं का प्रतिवेदन भेजा था।

मौनी अमावस्या के मौके पर प्रांगण व तीर्थ स्थल स्नान करने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी

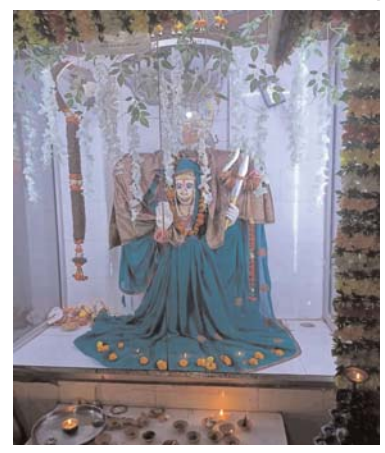

द अचीवर टाइम्स/प्रभात तिवारी

माल। लखनऊ। उत्तर प्रदेश राजधानी लखनऊ मौनी अमावस्या के मौके पर मां बाराही देवी मंदिर प्रांगण व तीर्थ स्थल पर स्नान करने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। इस दिन मौन रहकर दान और स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है। इसके अलावा अमावस्या के दिन तिल, तिल के लड्डू, तिल का तेल, वस्त्र और आंवला दान में देना शुभ माना जाता है। आपको बता दें कि माल विकासखंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत सस्पन के अटेर गांव स्थित प्रसिद्ध सिद्ध पीठ मां बाराही देवी मंदिर प्रांगण में शुक्रवार को मौनी अमावस्या के उपलक्ष्य में मंदिर प्रांगण में बने तीर्थ स्थल में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाकर मां के दर्शन किए,साथ ही अपनी मनोकामना पूरी किए जाने की प्रभु से कामना की। दान और पूजन भी किया। भक्तों की ओर से सूर्य देव को जलांजलि देकर पितरों का पूजन भी किया गया।अमावस्या के चलते सुबह से ही मंदिर प्रांगण में बने तीर्थ स्थल पर स्नान करने वाले भक्तों के आने का सिलसिला शुरू हो गया था।

हिन्दुत्व की पिच पर योगी ने चली एक और चौसर की चाल

योगी की चाल से विपक्ष है बेहाल, नहीं मिल रहा कोई विकल्प!

संवाददाता

लखनऊ। यह पहला मौका होगा जब किसी मुख्यमंत्री ने विधानसभा में हिंदुत्व की पिच सजाते हुए ऐसा भाषण दिया है। जाहिर है कि यह सिर्फ राजनीतिक बयान भर नहीं है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लोकसभा चुनाव 2024 की चौसर पर हिंदुत्व की एक और जबरदस्त चाल चल दी। इसकी काट तलाशना विपक्ष के लिए आसान नहीं है। विधानसभा के बजट सत्र में राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर विपक्ष के आरोपों के जवाब में मुख्यमंत्री ने जो कुछ कहा वह महत्वपूर्ण और दूरगामी निहितार्थ वाला है। इसमें विरोधियों को नजीर देने के साथ नसीहत भी छिपी है। बावजूद इसके विपक्ष की घेराबंदी में भी कोई कसर नहीं छोड़ी गई है। पहला मौका होगा जब किसी मुख्यमंत्री ने विधानसभा में हिंदुत्व की पिच सजाते हुए ऐसा भाषण दिया है। जाहिर है कि यह सिर्फ राजनीतिक बयान भर नहीं है। विधानमंडल की संपत्ति बन चुके इस भाषण का एक-एक शब्द अब लंबे समय तक सांविधानिक रिकॉर्ड में रहने वाला है। इसके आधार पर यह भाषण भारतीय संस्कृति और इतिहास पर देश और प्रदेश के ही नहीं बल्कि दुनिया भर के शोधकर्ताओं के लिए भविष्य में हिंदू राजनीति पर प्रमुख संदर्भ के रूप में काम करेगा। अयोध्या में 22 जनवरी को प्राण-प्रतिष्ठा के वक्त प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भाषण जातिवाद पर हिंदुत्व का रंग चढ़ाकर 24 के समीकरण साधने वाला था, तो 7 फरवरी को विधानसभा में योगी का भाषण तथ्यों व तर्कों के साथ उस रंग को और चटख करता दिखा। वाक्यों को दोहराना ठीक नहीं है, लेकिन सीएम योगी ने नंदी, कृष्ण, महाभारत, तथा कौरव जैसे शब्दों और इन्हें भारतीय संस्कृति के प्रतीकों से जोड़कर विपक्ष को जवाब देने के विकल्प सीमित कर दिए हैं। खासतौर पर जब लोकसभा के लिहाज से सबसे अधिक 80 सीटों वाले राज्य उत्तर प्रदेश के मुख्य विपक्षी दल सपा के मुखिया अखिलेश यादव खुद को कृष्ण का वंशज होने का दावा करते हों। हालांकि राजनीति में कुछ भी असंभव नहीं है। पर, योगी ने काफी साफ-साफ तरीके से सिर्फ राजनीतिक तौर पर सपा, बसपा, कांग्रेस, वामपंथ जैसी पहचान वाले विपक्षियों को ही नहीं बल्कि सामाजिक तौर पर विरोधियों को भी महाभारत के उल्लेख से नसीहत देने की कोशिश की। उसे समझे बिना आगे की सियासत की दिशा समझना मुश्किल होगा। राजनीतिक विश्लेषक प्रो. एपी तिवारी कहते हैं कि अयोध्या में हुए परिवर्तन तथा काशी व मथुरा की स्थिति के बहाने मुख्यमंत्री विरोधियों को आक्रांताओं की नीति के साथ खड़े न होने की नसीहत देते दिखते हैं। शब्द का सीधे-सीधे प्रयोग भले नहीं किया, लेकिन कदाचित भाव उनका था कि अयोध्या की तरह काशी और मथुरा भी सनातन संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक हैं। इसलिए इन पर विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण के निशान मिटाए बिना सनातन धर्मावलंबियों को संतोष नहीं मिल सकता। अखिलेश यादव अगर मथुरा की कृष्ण जन्मभूमि पर भाजपा के दृष्टिकोण के साथ खड़े होंगे तो उनका मुस्लिम वोट छिटकने का खतरा है और यदि वह ऐसा नहीं करते हैं तो भाजपा उनके यदुवंशियों का प्रतिनिधित्व करने या कृष्ण का वंशज होने के दावे पर हमला बोलकर उनके हिंदू वोटों में सेंध लगाने की कोशिश करेगी। दरअसल, योगी ने नाम भले ही नहीं लिया लेकिन यही बताने का प्रयास किया है कि मुस्लिम वोट पाने और उन्हें खुश करने के लिए गैर भाजपा दलों के शासन में अयोध्या, मथुरा, काशी के विकास की अनदेखी की गई। योगी यह समझाने में कामयाब दिख रहे हैं कि अयोध्या की तरह काशी और मथुरा का मामला किसी आक्रांता द्वारा मंदिर को मस्जिद में बदलने भर का नहीं है बल्कि लोकआस्था और सनातन संस्कृति के सम्मान, अस्मिता और पहचान को मिटाने के षडयंत्र का है। अच्छा यही होगा कि इन दो स्थलों पर विरोधी दावे छोड़ दें अन्यथा बात आगे बढ़ेगी। योगी की ये बातें खुद को मोदी और योगी से बड़ा हिंदू बताने वाले गैर भाजपा दलों के नेताओं को हिंदुत्व की पिच पर खेलने और हिंदुओं के वोटों में हिस्सा बंटाने का आमंत्रण देती दिखती हैं। पर, चाहकर भी ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि इससे उसके मुस्लिम वोट फिसलने का खतरा है। अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा के बाद पहुंच रही भीड़ और बीते दिनों वाराणसी में व्यास जी के तहखाने में न्यायालय से मिली पूचा अर्चना की अनुमति के मद्देनजर मुख्यमंत्री योगी का भाषण तमाम अन्य गूढ़ निहितार्थ भी छिपाए दिखता है। योगी ने विपक्ष से शबरी और निषादराज क्या पीडीए (पिछड़ा-दलित और अल्पसंख्यक) नहीं? सवाल पूछकर जो निशाना साधा है। उससे बचने के लिए विपक्ष को बहुत जतन करनी पड़ेगी। योगी के भाषण से साफ है कि प्राण-प्रतिष्ठा के बाद भी लोकसभा चुनाव में हिंदुत्व ज्यादा सशक्त मुद्दा बनने जा रहा है। भाजपा एक बड़े वायदे को पूरा करने के तथ्य के साथ मैदान में होगी ही लेकिन उसकी झोली में तमाम तर्कों व तथ्यों के साथ काशी व मथुरा वाले अन्य स्थानों के लिए भी आश्वासन होंगे। साथ ही निषादराज, शबरी, जटायु जैसे उदाहरणों के साथ सोशल इंजीनियरिंग के साथ हिंदुत्व सधेगा। संकेत यह भी हैं कि रामराज के संकल्प की अवधारणा पर सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास- सबका प्रयास के उदाहरण से गरीबों, महिलाओं, युवाओं और किसानों के लिए हुए कामों से विपक्ष की जातीय गणित की राजनीति का जवाब दिया जाएगा। अब जब राम के साथ कृष्ण और शिव भी चुनाव में मुद्दा बनकर गूंजेंगे तो सिर्फ उत्तर से दक्षिण ही नहीं बल्कि पूरब से पश्चिम भी सधने की उम्मीद की जानी चाहिए।

एक नज़र

बर्खास्त सैन्यकर्मी के मनी लॉन्ड्रिंग में लिप्त होने की आशंका

एजेंसी

लखनऊ। बर्खास्त सैन्यकर्मी प्रिंस कुमार सिंह के मनी लॉन्ड्रिंग में शामिल होने की आशंका जताई गई है। पुलिस केस दर्ज कराने वाली लेफ्टिनेंट कर्नल मिथिलेश यादव से संपर्क कर सभी दस्तावेज लेने की तैयारी कर रही है। जांच में पता चला है कि आरोपी ने नौ फर्जी मुहर भी बनवाई थीं। उन मुहरों को उसने अलग-अलग काम के लिए प्रयोग भी किया था। एडीसीपी पूर्वी अली अब्बास ने बताया कि प्रिंस कुमार सिंह के खिलाफ दर्ज केस की विवेचना इंस्पेक्टर फूलचंद्र को दी गई है। उन्होंने बताया कि आरोपी प्रिंस के फर्जीवाड़े से जुड़े सभी दस्तावेज हासिल करने के लिए पुलिस ने लिखापढ़ी शुरू कर दी है। विवेचक बृहस्पतिवार को शिकायतकर्ता के बयान दर्ज करने के लिए रिजर्व सप्लाई डिपो गए थे, पर उनसे मुलाकात नहीं हो सकी। शिकायतकर्ता मिथिलेश यादव का आरोप है कि जिस तरह आरोपी के 12 बैंक खातों में 1.82 करोड़ रुपये का लेनदेन हुआ है, उससे प्रिंस के मनी लॉन्ड्रिंग, आपराधिक और देशविरोधी गतिविधियों में लिप्त होने की आशंका भी है। एडीसीपी ने बताया कि अभी इस बात का पता नहीं चल सका है कि आरोपी प्रिंस मूल रूप से कहां का रहने वाला है। पुलिस इस बारे में पता लगा रही है। उन्होंने बताया कि केस की गंभीरता को देखते हुए हर पहलू पर जांच की जा रही है। पुलिस से की गई शिकायत के मुताबिक आरोपी प्रिंस ने 874‚ज्ञ क्ष्ठु, स्ह्ठु ॥क्तउधमपुर, मेजर आशीष सिंह, मिलिटरी पुलिस कर्नाटक, ब्रिगेडियर टीके त्रिपाठी, कमांड अस्पताल कोलकाता, लेफ्टिनेंट कर्नल चिरनजीत यादव, लेफ्टिनेंट कर्नल मिथिलेश यादव और हेडक्वार्टर इस्टर्न कमांड के नाम से फर्जी मुहर बनवा रखी थीं। इन मुहरों का प्रयोग उसने अलग-अलग काम के लिए किया था। जांच में पता चला कि आरोपी ने कमांड अस्पताल कोलकाता की मुहर लखनऊ से अपनी साली वंदना सिंह के फर्जी मेडिकल फिटनेस दस्तावेज तैयार करने के लिए बनवाई थी। लेफ्टिनेंट कर्नल चिरनजीत यादव और हेडक्वार्टर इस्टर्न कमांड की मुहर उसने नष्ट कर दी थी। पूछताछ के दौरान प्रिंस ने कुबूला कि उसने फर्जी मुहर बनवाने के लिए रिजर्व सप्लाई डिपो में तैनात हेड क्लर्क जीवन दास से मदद ली थी। इससे मामले में हेड क्लर्क की भूमिका भी संदिग्ध मिली है। दोनों के बीच तीन बार रुपये का लेनदेन भी हुआ था। बर्खास्त सैन्यकर्मी प्रिंस कुमार सिंह के खिलाफ दर्ज एफआईआर में आरोप बेहद गंभीर हैं। सीमा के सटे इलाकों से खातों में लेनदेन व फर्जी दस्तावेजों के प्रयोग की शिकायत को देखते हुए संभावना जताई जा रही है कि एटीएस या किसी अन्य जांच एजेंसी को विवेचना सौंपी जा सकती है। डीसीपी पूर्वी प्रबल प्रताप सिंह का कहना है कि फिलहाल पुलिस ही मामले की जांच कर रही है। सेना के रिकार्ड में आरोपी प्रिंस का कोई बैंक खाता नहीं था। सेना ने जब प्रिंस को भगोड़ा घोषित किया तो एसबीआई की कैंट ब्रांच से एक लीगल नोटिस मिला। नोटिस में इस बात का जिक्र था कि प्रिंस ने छह लाख रुपये का लोन ले रखा था। इसके बाद सिविल रिपोर्ट सामने आने पर पता चला कि आरोपी ने अलग-अलग बैंकों और मोबाइल एप के माध्यम से 29 लाख रुपये का लोन लिया था। शातिर प्रिंस कुमार अपने ससुर शंभू सिंह से भी रकम ऐंठना चाहता था। इसके लिए उसने पत्नी को एक खत लिखा। उसमें बताया था कि उसे नेपाल में बंधक बना लिया गया है। पत्र के साथ उसने वर्दी में घायल अवस्था में एक फोटो भी तैयार कर भेजी थी। इसके पीछे ससुर से रकम ऐंठने की मंशा बताई जा रही है।

डॉक्टर को आई झपकी, छह पर चढ़ाई कार

एजेंसी

लखनऊ। कोतवाली क्षेत्र में बृहस्पतिवार शाम एक बेकाबू कार ने सड़क किनारे खड़े लोगों को टक्कर मार दिया। हादसे में छह लोग जख्मी हो गए। गुस्साए लोगों ने कार सवार प्राइवेट चिकित्सक की न सिर्फ धुनाई की, बल्कि कार पर पथराव किया। सूचना पर पुलिस ने पहुंचकर चिकित्सक की जान बचाई। कार चला रहे चिकित्सक को झपकी आने पर हादसा हुआ। घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। पुलिस हादसे की जांच कर रही है। बछरावां-मौरावां मार्ग पर शाम करीब चार बजे एक कार बछरावां की ओर आ रही थी। इसी दौरान कार अनियंत्रित होकर एक चाट के ठेले से जा टकराई। हादसे में ठेला तालाब में जा गिरा और उसके आसपास खड़े बबुरिहा खेड़ा निवासी रिंकू (28), अनुज (49), मयंक (13), सोनू (26) व अन्य दो लोग घायल हो गए। हादसे के बाद गुसाई भीड़ ने चार पहिया वाहन पर पथराव कर दिया। इससे वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। कार चला रहे एवं क्षेत्र के थुलेंडी गांव के रहने वाले प्राइवेट चिकित्सक संजर किदवई (48) की धुनाई कर दी। चिकित्सक उन्नाव किसी काम से गए हुए थे। वापस आते समय उनको झपकी आ गई, जिस कारण हादसा हो गया। कार में सिर्फ वही थे। गुस्साई भीड़ ने उन पर भी हमला कर दिया, जिससे वह चोटिल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को एंबुलेंस से सीएचसी पहुंचाया। मयंक की हालत गंभीर देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया। दो घायलों ने निजी अस्पताल में उपचार कराया। कोतवाली प्रभारी विजेंद्र शर्मा ने बताया कि सूचना मिली है। वाहन को कब्जे में लेते हुए चालक को हिरासत में ले लिया गया है।

चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न दिये जाने पर किसानों में हर्ष

संवाददाता

लखनऊ। राकेश टिकैत ने कहा कि किसान नेता को भारत रत्न दिया जाना खुशी की बात है। लेकिन देश में उनकी विचारधारा को भी लागू किया जाना चाहिए। केंद्र सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न देने का एलान किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने एक्स अकाउंट पर इसका एलान किया है। वहीं, इस एलान के बाद पश्चिमी यूपी के कुछ दिग्गजों के बयान सामने आए हैं। भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता चौधरी राकेश टिकैत ने कहा कि किसान नेता को भारत रत्न दिया जाना खुशी की बात है। लेकिन देश में उनकी विचारधारा को भी लागू किया जाना चाहिए। स्वामी नाथन आयोग की रिपोर्ट भी लागू होनी चाहिए। वहीं, केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. संजीव बालियान ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री एवं किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह को देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित करने का निर्णय अत्यंत सुखद है। शामली के विधायक प्रसन्न चौधरी ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने किसान के हितों और कल्याण के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया था। अपने जीवन में देश के लिए अतुल्य योगदान की खातिर चौधरी चरण सिंह भारत रत्न जैसे इस सर्वोच्च सम्मान के वाकई हकदार थे। आज चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न से नवाजे जाने पर किसानों और कमेरों का यह सपना साकार हुआ। केंद्र सरकार के इस फैसले से हम सभी को हर्ष और आनंद की अनुभूति हो रही है।

कंटेनर ने बाइक को मारी टक्कर

दंपती समेत तीन की मौत, चालक गिरफ्तार

एजेंसी

लखनऊ। अमेठी जिले में टांडा-बांदा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित सराय भागमानी गांव के पास शुक्रवार की दोपहर कंटेनर ने बाइक को टक्कर मार दी। इससे बाइक सवार दंपती समेत तीन की मौत हो गई। अमेठी जिले में टांडा-बांदा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित सराय भागमानी गांव के पास शुक्रवार की दोपहर कंटेनर ने बाइक को टक्कर मार दी। इससे बाइक सवार दंपती समेत तीन की मौत हो गई। मौके पर पुलिस अधिकारी पहुंच गए हैं। गौरीगंज कोतवाली क्षेत्र के गढ़ामाफी निवासी विशाल अपनी पत्नी मनीषा और मां सरिता को बाइक से लेकर गौरीगंज आधार कार्ड ठीक करवाने जा रहा था। शुक्रवार की दोपहर सराय भागमानी गांव के पास रायबरेली की तरफ से आ कंटेनर ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में विशाल (23), उसकी पत्नी मनीषा(22) व मां सरिता (47) की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद मौके पर भारी भीड़ एकत्र हो गई। सूचना पर पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी भी मौके पर पहुंच गए। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया गया है। घटना के बाद भाग रहे कंटेनर चालक को 10 किलोमीटर दूर मुंशीगंज थाना क्षेत्र में पुलिस ने पकड़ा है। सीओ मयंक द्विवेदी का कहना है कि बाइक चालक हेलमेट लगाए था या नहीं, इसकी जांच की जा रही है।

आज सीटों के बंटवारे की बात नहीं आज धन्यवाद देने का दिन है: जयन्त चौधरी

संवाददाता

लखनऊ। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को सर्वोच्च नागरिक सम्मान %भारत रत्न% देने का एलान किया गया है। इसके बाद रालोद प्रमुख चौधरी जयंत सिंह ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा कि दिल जीत लिया है। केंद्र सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और पीवी नरसिम्हा राव को सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत देने का एलान किया है। वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भी भारत रत्न देने का एलान किया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक्स पर इसका एलान किया। वहीं, चौधरी जयंत सिंह ने सरकार का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि आज सीटों के बंटवारे की बात नहीं, आज धन्यवाद देने का दिन है। उन्होंने कहा कि मैं परिस्थिति को देखकर बात करता हूं। उन्होंने कहा कि अजित सिंह का अधूरा सपना पूरा हुआ है। उन्होंने कहा कि ये भावुक और यादगार पल है। यह फैसला पीढ़ियों तक याद रहेगा। इस दौरान उन्होंने कहा कि मैं कोई पोस्ट डिलीट नहीं करूंगा। कहा कि लोकतंत्र में शितायत और आंदोलन होते हैं। जयंत ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश मूल भावना को समझते हैं। भाजपा में जाने की बात पर कहा कि आज किस मुंह से इन्हें इनकार करूं। उधर, रालोद प्रमुख चौधरी जयंत सिंह ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा कि दिल जीत लिया है। वहीं, पिछले कई दिनों से जयंत के भाजपा में जाने की बात जोर-शोर से चल रही है। इसी को देखते हुए पहले ही लग रहा था कि पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत नत्न देने का एलान हो सकता है। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न की घोषणा के बाद मुजफ्फरनगर जिले में खुशी का माहौल है। चौधरी चरण सिंह ने साल 1971 का चुनाव मुजफ्फरनगर सीट से लड़ा था। यही उनका पहला लोकसभा चुनाव था। मुजफ्फरनगर से उनका गहरा नाता रहा। प्रदेश के मुख्यमंत्री रहने के दौरान यहां लगातार आते-जाते रहे। इससे पहले बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर और देश के पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आणवाणी को भी यह सम्मान देने का एलान हो चुका है। आडवाणी को छोड़कर बाकी चारों हस्तियों को मरणोपरांत यह सम्मान दिया जाएगा।

रामलला के दरबार में 11 फरवरी को पौने चार घंटे रहेगी यूपी की पूरी सरकार, दर्शन के बाद होगा लंच भी

संवाददाता

लखनऊ। प्रदेश की पूरी सरकार 11 फरवरी को रामलला के दरबार में रहेगी। सरकार के सभी मंत्री और विधायक बसों द्वारा लखनऊ से सुबह साढ़े आठ बजे रवाना होंगे। रामलला के दरबार में हाजिरी लगाने के लिए प्रदेश सरकार के सभी मंत्री और विधायकगण इस बार सरकारी बसों से आएंगे। 11 फरवरी को सरकार के सभी विधायकों का आना प्रस्तावित है। इनकी अयोध्याधाम यात्रा विधान भवन लखनऊ से शुरू होगी। रोडवेज विभाग के शेड्यूल के अनुसार, बसों का काफिला सुबह 8:30 बजे लखनऊ से अयोध्या धाम के लिए निकलेगा। बसों का यह काफिला 11:30 बजे अयोध्या धाम पहुंचेगा। 11:30 से 12:30 बजे तक सभी हनुमानगढ़ी में पूजा अर्चना करेंगे। यहां से सभी राममंदिर में रामलला के दर्शन के लिए जाएंगे। इसके लिए 12:30 से दो बजे तक का समय निर्धारित किया गया है। दो से तीन बजे तक लंच का समय होगा। सवा तीन बजे बसों का काफिला फिर लखनऊ के लिए रवाना हो जाएगा। इस तरह से योगी सरकार राम मंदिर और हनुमान गढ़ी में करीब पौने चार घंटे रहेगी। अयोध्या के लिए यह दूसरा मौका होगा जब पूरी प्रदेश सरकार यहां होगी। बीते नौ नवंबर को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में पूरी कैबिनेट यहां थी। इस बार कैबिनेट की बैठक नहीं होगी, लेकिन यात्रा में विधायकगण भी शामिल होंगे।

चौधरी चरण सिंह, एमएस स्वामीनाथन और नरसिम्हा राव को भारत रत्न मिलने पर सीएम योगी ने दी शुभकामनाएं

संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री ने तीनों विभूतियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शुभकामनाएं व्यक्त की हैं। उन्होंने शुक्रवार को अपने सोशल मीडिया अकाउंट्स पर इसे लेकर पोस्ट भी साझा किया और इसे अभिनंदनीय बताया। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और पीवी नरसिम्हा राव तथा हरित क्रांति के जनक कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित किये जाने के फैसले का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वागत किया है। मुख्यमंत्री ने तीनों विभूतियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शुभकामनाएं व्यक्त की हैं। उन्होंने शुक्रवार को अपने सोशल मीडिया अकाउंट्स पर इसे लेकर पोस्ट भी साझा किया और इसे अभिनंदनीय बताया। मुख्यमंत्री ने चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न दिये जाने की घोषणा का स्वागत करते हुए लिखा, %%जननेता, किसानों के मसीहा, गांवों, अन्नदाता किसानों, शोषितों एवं वंचितों के उत्थान के लिए आजीवन समर्पित रहने वाले, पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी को %भारत रत्न% प्रदान करने की घोषणा अभिनंदनीय है। वे सच्चे अर्थों में लोकतंत्र के साधक थे। यह गौरव राष्ट्र निर्माण में उनके अतुल्य योगदानों का सम्मान है।%% वहीं मीडिया से बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न की घोषणा देश के करोड़ों

किसानों का सम्मान है। यूपी के लिए ये और भी अभिनंदनीय है, क्योंकि चौधरी साहब प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं। उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश ने नई दिशा प्राप्त की थी। पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव को भारत रत्न के ऐलान पर सीएम ने लिखा, %%पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव जी को %भारत रत्न% से विभूषित किए जाने का निर्णय अत्यंत अभिनंदनीय है। उन्होंने अपने दूरदर्शी नेतृत्व से देश के आर्थिक विकास को एक नई गति प्रदान की। भारत के विकास में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। इसके अलावा मीडिया से बातचीत में सीएम योगी ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव ने देश को विपरीत परिस्थितियों में नेतृत्व दिया था। उनके कार्यकाल में आर्थिक सुधारों को अपनाया गया था। कृषि और किसानों के लिए स्वामीनाथन के अद्वितीय योगदान को सच्ची श्रद्धांजलि मुख्यमंत्री ने प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक और हरित क्रांति के जनक डॉ एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न देने की घोषणा का स्वागत करते हुए लिखा, प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक और हरित क्रांति के जनक कहे जाने वाले डॉ. एमएस स्वामीनाथन को %भारत र% से सम्मानित करने का निर्णय स्वागतयोग्य है। कृषि और किसानों के कल्याण में उनके उल्लेखनीय योगदानों का सम्मान है। यह सम्मान कृषि को बदलने में उनके अद्वितीय योगदान के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

सम्पादकीय

विश्व सिनेमा की जादुई दुनिया- अंतरराष्ट्रीय तिब्बती सिनेमा के जनक-पेमा सिडेन

तिब्बती फिल्म निर्देशक, प्रोड्यूसर, स्क्रीनप्ले राइटर, शिक्षक पेमा सिडेन 3 दिसम्बर 1969 को तिब्बत के सोल्हो (ञ्ह्यश्द्यद्धश) इलाके में जन्मे थे। 9 फिल्में निर्देशित करने वाले सिडेन ने 55 पुरस्कार अपने नाम किए। उन्हें 60 पुरस्कारों के लिए नामांकित किया गया। तिब्बत हमारा पड़ोसी देश है, मगर वहां इतनी फिल्में बनती हैं और इतनी अच्छी फिल्में बनती हैं, अनोखी फिल्में बनती है, यह अधिकांश दर्शकों के लिए बहुत आश्चर्य की बात है। 1959 के बाद से तिब्बत, चीन के दबदबे में है, चीन ने उसे जबरदस्ती अधिकृत कर लिया है, अत~ वहां के बहुत सारे कलाकारों ने देश छोड़ दिया। ये लोग विभिन्न देशों में बस गए हैं। बहुत सारे तिब्बती भारत में बस गए। इसके दो प्रमुख कारण हैं, एक तो सबसे अधिक लोकतांत्रिक देश भारत, तिब्बत के सबसे निकट है, दूसरा तिब्बत से आकर धर्मगुरु दलाई लामा भारत में बस गए हैं। तिब्बत का अपना विशिष्ट धर्म है, आध्यात्मिकता है, अपनी संस्कृति, भाषा, राजनीति है और यह सब बहुत प्राचीन है। प्रवासी तिब्बती इसे कायम रखना चाहते हैं। बाहर रहने वाले तिब्बती लोगों में से कुछ फिल्म निर्देशन की दिशा में अग्रसर हैं। इनमें सर्वाधिक नाम कमाया है, पेमा सिडेन ने। 2011 में पेमा सिडेन की फिल्म 'ओल्ड डॉग' अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में धूम मचा रही थी। यह उनकी तीसरी फीचर फिल्म थी। इसके पहले उन्होंने 'द साइलेंट होली स्टोन्स' (2005) तथा 'द सर्च' (2009) जैसी फिल्में बनाई थी। उनकी फिल्म 'ओल्ड डॉग' के सिनेमाटोग्राफर ने भी 2011 में अपनी पहली कमाल की फिल्म 'द सन बीटेन पाथ' बनाई। पर आज बात की जाए पेमा सिडेन की। तिब्बती फिल्म निर्देशक, प्रोड्यूसर, स्क्रीनप्ले राइटर, शिक्षक पेमा सिडेन 3 दिसम्बर 1969 को तिब्बत के सोल्हो (ञ्ह्यश्द्यद्धश) इलाके में जन्मे थे। 9 फिल्में निर्देशित करने वाले सिडेन ने 55 पुरस्कार अपने नाम किए। उन्हें 60 पुरस्कारों के लिए नामांकित किया गया। उनकी ख्याति उपरोक्त फिल्मों के अलावा 'बलून', 'स्नो लेपर्ड', 'सेक्रेड एरो', 'जिन्पा' जैसी फिल्मों के लिए भी है। पेमा सिडेन ने 10 फिल्मों का लेखन किया साथ ही 20 फिल्में प्रड्यूस भी कीं। उन्हें चीनी भाषा में वानमा कैदान के नाम से भी पुकारा जाता है। पेमा सिडेन के साथ तिब्बत के सिनेमा का एक नया अध्याय प्रारंभ होता है। उन्होंने तिब्बत के गंभीर सिनेमा की शुरुआत की। पेमा सिडेन की शिक्षा द बेझिंग फिल्म अकादमी, चीन के एक प्रमुख फिल्म स्कूल में हुई थी। मगर उन्होंने अपनी सिनेमा शैली विकसित की। उनकी पहली फिल्म, 'द साइलेंट होली स्टोन्स' तिब्बत से आने वाली ऐसी फिल्म रही है, जो तकनीकि और सृजनात्मकता का कुशल संयोजन है। जिसमें तिब्बत की संवेदना नजर आती है। तिब्बत का वनस्पति विहीन लैंडस्केप और वहां के पात्र, भाषा एक भिन्न खुशबू से दर्शक को परिचित कराते हैं। लैंडस्केप अपने आप में एक पात्र की अनुभूति देता है। मजे की बात है, चीन की सरकार इस फिल्म का विज्ञापन कर रही थी, इसे तिब्बत की भाषा में बनी पहले फीचर फिल्म का दर्जा दे रही थी। फिल्म में चीन के एक प्रांत किंघाई प्रदेश की बोली एम्डो का प्रयोग हुआ है। फिल्म तिब्बत के युवा सन्यासियों को टेलिविजन सिरीज देखने में रमा हुआ दिखाती है, वे वीडियो गेम खेल रहे हैं। गुरु और शिष्य दोनों साथ में यह कर रहे हैं। एक युवा बौद्ध सन्यासी वीडियो प्लेयर, कैसेट और मॉनीटर अपने मठ में लाता है। फिल्म इसका संकेत देती है, यदि चीनी भाषा न पढ़ी तो काम मिलना कठिन है। बौद्ध मठ में बैठकर बौद्ध ग्रंथ पढ़ने की अपेक्षा तिब्बती युवा चीनी भाषा सीख कर शहर जाना पसंद करता है। निर्देशक बहुत सूक्ष्म तरीके से अपनी सभ्यता-संस्कृति के समाप्त होते जाने का इशारा करता है। चार साल बाद पेमा सिडेन ने ङ्म्ह्ठ्5द्धड्डुश 5द्धद्वद्दद्व द्दद्गठ्ठद्दस्त्रद्गठ्ठद्द, इंग्लिश शीर्षक 'द सर्च' फिल्म बनाई और दो पुरस्कार जीते। करीब दो घंटे की इस फिल्म में एक फिल्म बनाने वाला अपनी टीम के साथ, अपने तिब्बती ऑपेरा (ड्रिम कुंदन) में काम करने केलिए अभिनेता-अभिनेत्री की खोज करते हुए हिमालय में यात्रा कर रहा है। पेमा सिडेन अपनी फिल्म की कहानी स्वयं लिखते थे। 'द सर्च' में प्रिंस कुंदन की कहानी भी खुलती चलती है। बौद्ध कथा में दयालु राजा कुंदन दूसरों के लिए अपना सबकुछ, पत्नी-बच्चे यहां तककि अपनी आंखें भी बलिदान कर देता है। इस राजा का जिक्र सिडेन की पहली फिल्म में भी आता है, जब तिब्बत के नए साल का जश्न चल रहा है और बच्चे-युवा-वृद्ध सब इस कहानी का आनंद ले रहे हैं। 'द सर्च' में यात्रा के दौरान निर्देशक अपनी टीम के साथ कई लोगों से मिलता है और ऑडीशन करता है। फिल्म के बीच में एक रहस्यमयी लड़की भी आती है। यात्रा के दौरान कार में अमेरिका में बसे एक तिब्बती लोकप्रिय गायक का गाया गाना बराबर बजता है। एक युवा तिब्बती एक नाइटक्लब में गिटार पर इंग्लिश गाना गा रहा है। यहां परम्परा और आधुनिकता साथ नजर आती है। एक समीक्षक ने 'द सर्च' को हिमालय की आत्मा की खोज नाम दिया है। उनकी तीसरी फिल्म 'ओल्ड डॉग' ने तिब्बती सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय फलक पर स्थापित कर दिया। यह उनकी दोनों पिछली फिल्म से हट कर है। इसका संदेश बहुत स्पष्ट है। यहां पेमा सिडेन का गुस्सा दीखता है, उनका दर्द, उनका नैराश्य, उनकी हताशा नजर आती है। हालांकि कहानी बहुत सीधी चलती है। चीन के नवधनाड्य लोगों के बीच तिब्बती कुत्तों की मांग अचानक बढ़ जाती है। अब या तो घुमक्कड़ तिब्बतियों के मस्टिफ प्रजाति के कुत्ते बेचे जा रहे हैं, अथवा चुराए जा रहे हैं। इसी बीच एक बूढ़े घुमक्कड़ तिब्बती का निठल्ला, पियक्कड़, नपुंसक बेटा उनका बूढ़ा कुत्ता एक स्थानीय चीनी व्यापारी को बेचना चाहता है, उसका पिता ऐसा बिल्कुल नहीं चाहता है। बूढ़े का कहना है, 'मैं खुद को बेच दूंगा, कुत्ते को नहीं।' कारण कुत्ता घुमक्कड़ों की सबसे कीमती सम्पत्ति होती है। एक अन्य घुमक्कड़ समुदाय का व्यक्ति बिचौलिए का काम करता है। वह बूढ़े को अच्छे दाम का लालच देता है, कुत्ता चुराने की कोशिश करता है। बूढ़े के सारे प्रयासों के बावजूद कुत्ता चीनी व्यापारी के पास पहुंच जाता है। यहां चारागाह के स्थान पर अब सपाट उजाड़ है। सिडेन की इस पॉवरफुल फिल्म में कंटीली बाढ़ सांकेतिक रूप से बहुत कुछ कहती है। जगह-जगह कचड़े के ढ़ेर हैं। 'जिंपा' में अपराध बोध से ग्रसित एक ट्रक ड्राइवर की कहानी चलती है। एक दुर्घटना में उसका ट्रक एक भेंड़ पर चढ़ गया था और रास्ते में उसे एक हिचहाइकर मिलता है, दोनों में दोस्ती हो जाती है, और दोनों का जीवन बदल जाता है। पेमा सिडेन चाइना एकेडमी ऑफ आर्ट में पढ़ा रहे थे, वे चाइनीज फिल्म-लिटेरेचर एसोसिएशन के सदस्य थे।

प्रधानमंत्री मोदी के आत्मविश्वास से विपक्षी खेमे में काफी बेचैनी दिखाई दे रही है

बीते साल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर ऐलान किया था कि अगले साल वे फिर लाल किले की ऐतिहासिक प्राचीर से देश को संबोधित करेंगे और अपनी उपलब्धियों का ब्योरा पेश करेंगे। लेकिन यह अहंकार नहीं है। यह बिल्कुल वैसी ही बात है, जैसी बात विपक्षी पार्टियां कर रही हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने गत 5 फरवरी को लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद भाषण देते हुए कहा कि हमारा तीसरा कार्यकाल 1,000 सालों की नींव रखने का काम करेगा और उसमें बहुत बड़े फ़ैसले होंगे। बीती 2 फरवरी को 'इंडिया मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो' के उद्घाटन के अवसर पर पीएम मोदी ने तीसरे कार्यकाल की योजनाओं के बारे में बताया। जैसे ही पीएम मोदी ने तीसरे कार्यकाल की बात की तो लोग लगातार तालियां बजाने लगे। इसके बाद पीएम मोदी ने मुस्कुराते हुए कहा कि समझदार को इशारा ही काफी होता है। 26 जुलाई 2023 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली के प्रगति मैदान में नए इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर भारत मंडपम के उदघाटन के अवसर पर अपने भाषण में कहा कि, मेरे तीसरे कार्यकाल में भारत दुनिया की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा, ये मोदी की गारंटी है। पीएम मोदी के चेहरे और भाषणों में झलकता आत्मविश्वास विपक्ष की बेचैनी का बड़ा कारण है। बीते साल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर ऐलान किया कि अगले साल वे फिर लाल किले की ऐतिहासिक प्राचीर से देश को संबोधित करेंगे और अपनी उपलब्धियों का ब्योरा पेश करेंगे। लेकिन यह अहंकार नहीं है। यह बिल्कुल वैसी ही बात है, जैसी बात विपक्षी पार्टियां कर रही हैं। वास्तव में यह अहंकार का नहीं, बल्कि दोनों तरफ आत्मविश्वास का मामला है। एक तरफ विपक्ष इस आत्मविश्वास से भरा है कि अगले लोकसभा चुनाव में उसकी जीत होगी तो दूसरी ओर नरेंद्र मोदी इस भरोसे में हैं कि वे तीसरी और ऐतिहासिक जीत हासिल कर पंडित नेहरू का रिकॉर्ड तोड़ेंगे। केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषणों में ही नहीं, बल्कि उनकी सरकार के दूसरे कार्यकाल के आखिरी वर्ष में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की ओर से पेश अंतरिम बजट से न केवल सरकार का आत्मविश्वास झलकता है कि वह अपने कार्यों के बल पर ही तीसरी बार सत्ता में वापसी करेगी, बल्कि देश को विकसित राष्ट्र बनाने के उसके संकल्प का परिचय भी मिलता है। यह एक ऐसा अंतरिम बजट है, जिसमें सरकार ने चुनाव जीतने के लिए मतदाताओं को रिझाने के लिए कोई लोकलुभावन घोषणा नहीं की। ध्यान रहे 2019 के अंतरिम बजट में कई लोकलुभावन घोषणाएं की गई थीं। इस बार ऐसा कुछ नहीं किया गया। इसका मतलब है कि सरकार मानकर चल रही है कि जनता को उस पर भरोसा है कि वह देशहित में सही दिशा में काम कर रही है। विकास की राजनीति का यह एक नया उदाहरण है। जब सामने लगातार तीसरी पारी की लड़ाई का मैदान सज रहा हो और यह अपेक्षा हो कि लोकलुभावन घोषणाओं का तड़का लगेगा, तब नरेन्द्र मोदी सरकार की ओर से सामाजिक न्याय व समानता के अवसर पैदा करते हुए भविष्य के विकसित भारत का संकल्प दोहराना यह स्पष्ट करता है कि केंद्र में वापसी का विश्वास लबालब है। पीएम मोदी लोकलुभावन घोषणाओं के जरिए नहीं बल्कि अपने दस साल के ट्रैक रिकॉर्ड, जो कहा सो पूरा किया के नारे के साथ ही जनता से समर्थन चाहते हैं। मोदी-2 की सरकार ने आते ही जम्मू कश्मीर से धारा 370 की विदाई कर दी। राम मंदिर का रास्ता साफ किया और सीएए, एनआरसी जैसे कानून लेकर आई। मोदी-2 कार्यकाल की विदाई के चार महीने पहले अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा भी हो गई। पिछले दिनों आई एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले दस वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी की मार से बाहर निकले हैं। ग्रामीण स्तर पर वह सारी सुविधाएं पहुंच रही हैं जो पहले छोटे शहरों तक में उपलब्ध नहीं था। बीमारी हर साल पुनः गरीबी के चपेट में आने का बड़ा कारण रहा है लेकिन आयुष्मान योजना ने उस दशा में परिवर्तन ला दिया। सड़क, रेल और हवाई यातायात का परिदृश्य बदल रहा है, मैन्यूफैक्चरिंग के कारण रोजगार के नए नए रास्ते खुले हैं। लोगों की औसत आय में 50 फीसद की बढ़ोत्तरी हुई है और सामान्य रूप से यह विमर्श बना है कि देश बदल रहा है, आने वाले समय में दूसरों के लिए पथ प्रदर्शक बनेगा। इसमें कोई दो राय नहीं है कि देश आत्मविश्वास से भर रहा है और गौरव से भर रहा है। आज पूरे विश्व में भारत को लेकर सकारात्मकता, आशा, भरोसा बढ़ा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपार लोकप्रियता और अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन को लेकर बने माहौल को देखते हुए केंद्र में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार बनना लगभग तय है। ब्रिटेन के प्रमुख अखबार द गार्जियन में यह संभावना जताने के साथ ही कहा गया है कि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान में जीत ने पार्टी की ताकत को और बढ़ाया ही है। अखबार में हन्ना एलिस पीटरसन की तरफ से लिखे गए कॉलम में कहा गया है कि तीन राज्यों की जीत लोकसभा में भाजपा की संभावनाओं को और मजबूत करने वाली है। यही वजह है कि पीएम मोदी खुद इस विधानसभा चुनावों की जीत को 2024 में जीत की गारंटी बता चुके हैं। लेख में कहा गया है कि विपक्षी दलों की तरफ से कुछ ही माह पहले बनाया गया गठबंधन इंडिया ब्लॉक भले ही सामूहिक रूप से भाजपा के खिलाफ लड़ने की प्रतिबद्धता जताता रहा हो लेकिन वह अभी भी एकजुट नहीं हो पाया है। प्रधानमंत्री मोदी के आत्मविश्वास के पीछे का कारण केवल खोखली राजनीतिक बयानबाजी नहीं है। इसके ठोस कारण हैं। पिछले दस वर्षों में जिस तरह से अलग अलग क्षेत्रों में भारत आत्मनिर्भर हुआ है, उसने यह शक्ति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दी है। न सिर्फ घरेलू मोर्चे पर भारत की उत्पादकता बढ़ी है बल्कि उसने कई क्षेत्रों में निर्यात भी शुरू किया है। अब से कुछ दशक पहले भारत हर छोटी बड़ी चीज के लिए विश्व के उन देशों का भी मुंह ताकत रहा, जो किसी न किसी तरीके से अपना हित साधने के लिए तमाम अंतरराष्ट्रीय उठापटक के लिए जिम्मेदार होते थे। मोदी सरकार की नीतियों ने ऐसे देशों की शक्ति और वर्चस्व वास्तव में कम की है और भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र के तौर पर विश्व पटल पर खड़ा किया है। आज विश्व के तमाम बड़े, शक्तिशाली और उन्नत देश भी भारत की बढ़ती शक्ति, वर्चस्व और प्रभाव को स्वीकार रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण' को देश का सबसे बड़ा दुश्मन बताया। उन्होंने अपने कार्यों के दम पर समूचे विपक्ष को इन्हीं तीन चीजों के दायरे में समेटा है। विपक्ष को इसका उत्तर देशवासियों को देना होगा। इसके अलावा सरकार की योजनाएं हैं, करोड़ों लाभार्थी हैं, भाजपा की मशीनरी है, संसाधन है, मोदी का व्यक्तित्व है, उनकी प्रचार करने और भाषण देने की अद्भुत क्षमता है और ऐसी अनेक चीजें हैं, जो उनको आत्मविश्वास देती हैं। मोदी सरकार ने विपक्ष के सामने एक और चुनौती रखी है। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा से पहले ही तीन राज्यों में भाजपा ने कांग्रेस को परास्त कर सरकार बनाई थी। अब सिर्फ रिपोर्ट कार्ड के साथ लोकसभा चुनाव के लिए सजाए जा रहे मैदान में उतरने वाली है। विपक्षी गठबंधन का हाल देश की जनता देख ही रही है। सीटों के बंटवारे और तुच्छ स्वार्थों के लिए जिस तरह विपक्षी दल आपस में लड़ रहे हैं, उससे उनकी नीति और नीयत साफ तौर पर दिखाई देती है। विपक्षी दल जनता की सेवा करने या उसके मुद्दे उठाने की बजाय खुद को भ्रष्टाचार से बचाने की जुगत में लगे हैं। राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा पर हैं। जैसे-जैसे उनकी यात्रा आगे बढ़ रही है, वैसे वैसे इंडी गठबंधन में अविष्वास भी बढ़ रहा है। इंडिया गठबंधन लगभग खत्म होने की कगार पर है। विपक्ष को यह समझ नहीं आ रहा है कि वो देश के सामने किस मुद्दे को लेकर जाएं और किस मुद्दे पर मोदी सरकार को घेरें। वास्तव में लोकसभा चुनाव की लड़ाई विश्वास की होगी। अब यह देशवासियों को तय करना है कि उनका भरोसा किस पर है- विकसित भारत की मोदी गारंटी पर या विपक्ष पर।

कंटीले तारों की बाड़ से बढ़ेगी समस्या? राज्य में उठ रही है विरोध की आवाज

नागालैंड के मुख्यमंत्री नेफ्यू रियो का कहना है कि अगर सीमा पर बाड़ लगाना अनिवार्य है तो आम लोगों की समस्याओं को भी ध्यान में रखना होगा। सीमा के दोनों ओर नागा जनजाति के लोग रहते हैं। पूर्वोत्तर के कई राज्यों और संगठनों के विरोध के बावजूद केंद्र सरकार ने म्यांमार से लगी अंतरराष्ट्रीय सीमा पर कंटीले तारों की बाड़ लगाने के फैसले पर अडिग रहते हुए दोनों देशों के बीच जारी मुक्त आवाजाही समझौते को तत्काल प्रभाव से खत्म कर दिया है। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा है कि मणिपुर में मोरे से लगी म्यांमार सीमा पर 10 किमी लंबी बाड़बंदी का काम पूरा हो गया है। बाकी 20 किमी इलाके में यह काम शीघ्र शुरू होगा। मुक्त आवाजाही समझौते यानी फ्री मूवमेंट रेजिम (एफएमआर) के तहत अब तक दोनों देशों यानी भारत और म्यांमार के नागरिक बिना पासपोर्ट और वीजा के महज एक परमिट के सहारे एक-दूसरे की सीमा में 16 किमी तक भीतर जाकर वहां दो सप्ताह तक रह सकते थे। पूर्वोत्तर के चार राज्योंङ्कअरुणाचल प्रदेश (520 किमी), नागालैंड (215 किमी), मणिपुर (398 किमी) और मिजोरम (510 किमी)-की कुल 1643 किमी लंबी सीमा म्यांमार से लगी है। इसमें से 1,472 किमी लंबी सीमा की शिनाख्त का काम पूरा हो गया है। मुक्त आवाजाही समझौता खत्म होने के बाद सीमा पार से आने वाले लोगों के लिए भारत का वीजा लेना अनिवार्य होगा। बर्मा (अब म्यांमार) के भारत से अलग होने के बाद सीमा के विभाजन में गड़बड़ियों के कारण कई जनजातियां दो देशों की सीमा में बंट गईं। आजादी के बाद अलग-अलग देश में रहने के कारण एक ही जनजाति के लोगों के जीवन और रहन-सहन में आने वाली दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 26 सितंबर, 1950 को एक गजट अधिसूचना के जरिए पासपोर्ट नियमों में संशोधन करते हुए दोनों देशों के नागरिकों को बिना पासपोर्ट और वीजा के एक-दूसरे देश में 40 किमी भीतर तक आने की छूट दे दी। इसके बाद अगस्त, 1968 में इसमें संशोधन करते हुए परमिट प्रणाली लागू की गई यानी दूसरे देश में जाने वालों को परमिट लेना पड़ता था। अस्सी और नब्बे के दशक में पूर्वोत्तर राज्यों में उग्रवाद तेज होने के कारण आवाजाही की सीमा 25 किमी से घटाकर 16 किमी कर दी गई। इस मुद्दे पर कोई अधिकृत समझौता नहीं होने के कारण सरकार ने एक सहमति पत्र तैयार किया और 11 मई, 2018 को दोनों देशों में इस पर हस्ताक्षर कर इसे औपचारिक जामा पहनाया। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि म्यांमार में सैन्य तख्तापलट के बाद सीमावर्ती इलाकों में म्यांमार की सेना और विद्रोही गुटों में हिंसक झड़पें बढ़ी हैं और इसका असर भारतीय इलाकों में भी पड़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक, म्यांमार में जारी हिंसा के कारण कम से कम 20 लाख लोग विस्थापित हो चुके हैं। इसकी वजह से करीब 40 हजार लोगों और पुलिस व सैन्य

अधिकारियों ने भाग कर पड़ोसी मिजोरम और मणिपुर में शरण ली है। बीते साल मई में मणिपुर में शुरू हुई हिंसा के पीछे भी म्यांमार से आने वाले उग्रवादियों और सशस्त्र गुटों को जिम्मेदार ठहराया गया है। दरअसल, पूर्वोत्तर के चार राज्यों की म्यांमार से लगी सीमा के दोनों ओर रहने वाले लोग एक ही जाति और संस्कृति के हैं। इसलिए सीमा पार से आने वाले लोग आसानी से स्थानीय आबादी में घुल-मिल जाते हैं। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन.बीरेन सिंह शुरू से ही इन लोगों को जिम्मेदार ठहराते रहे हैं। केंद्र के इस फैसले का इलाके में काफी विरोध हो रहा है। मिजोरम के मुख्यमंत्री लालदूहोमा ने हाल में कहा था कि म्यांमार सीमा पर कंटीले तारों की बाड़ लगाने का फैसला स्वीकार्य नहीं होगा। उन्होंने दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और विदेश सचिव एस.जयशंकर से मुलाकात कर उनको भी अपने विचारों से अवगत कराया है। लालदूहोमा की दलील है कि ब्रिटिश शासकों ने स्थानीय लोगों से सलाह-मशविरा किए बिना ही मिजोरम-म्यांमार सीमा थोप दी थी। सीमा के दोनों ओर रहने वाले मिजो-जो-चिन समुदाय के लोग इस सीमा को नहीं मानते। लालदूहोमा कहते हैं कि उनकी सरकार के पास केंद्र के इस फैसले को रोकने का अधिकार नहीं हैं। लेकिन वह इसका पुरजोर विरोध करेगी। नागालैंड के मुख्यमंत्री नेफ्यू रियो का कहना है कि अगर सीमा पर बाड़ लगाना अनिवार्य है तो आम लोगों की समस्याओं को भी ध्यान में रखना होगा। सीमा के दोनों ओर नागा जनजाति के लोग रहते हैं। मिजोरम और नागालैंड सरकार के अलावा नेशनल सोशलिस्ट कौंसिल ऑफ नागालैंड (एनएससीएन) के इसाक-मुइवा गुट ने भी केंद्र के इस फैसले का विरोध किया है। मिजोरम के सबसे ताकतवर सामाजिक संगठन यंग मिजो एसोसिएशन (आईएमए) के अलावा नागालैंड, मिजोरम और मणिपुर के एक दर्जन से ज्यादा संगठन इस फैसले का विरोध कर रहे हैं।

राजस्थान की भजन लाल शर्मा सरकार के बजट में दिखा मोदी का विजन

संविदा पर काम कर रही आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिन, सहायिकाओं के साथ ही अन्य संविदा कर्मियों तथा पंचायती राज व नगरीय निकायों के निर्वाचित जन प्रतिनिधियों को मिलने वाले मासिक भत्ते में भी 10 प्रतिशत बढ़ोतरी की घोषणा की गई है। राजस्थान में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी द्वारा विधानसभा में पेश किए गए भाजपा सरकार के पहले लेखा अनुदान (अंतरिम बजट) में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विजन परिलक्षित हुआ है। यह बजट पूरी तरह से आगामी लोकसभा चुनावों को ध्यान में रखकर लोक लुभावना बनाया गया है। हालांकि अंतरिम बजट होने के कारण इसमें अधिक घोषणायें नहीं की गई हैं। फिर भी बजट में ऐसी अन्य को बातों को शामिल किया गया है जिसका असर सीधे आम लोगों पर पड़ता है। विधानसभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कई गारंटी दी थी। प्रधानमंत्री मोदी की बहुत-सी गारंटीयों को इस बजट में शामिल किया गया है। अनुभव के हिसाब से उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने वित्तमंत्री के रूप में पहला बजट पेश किया था। मगर जिस तरह से उन्होंने बजट भाषण पढ़ा उसमें पूरा आत्मविश्वास झलक रहा था। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार का यह पहला बजट था। इस कारण सरकार को चुनाव के दौरान किए गए लोक लुभावने वायदों को बजट में शामिल किया जाना बहुत जरूरी था। उसी को ध्यान में रखते हुए उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने अपने बजट में

महिलाओं, बुजुर्गों, युवाओं, किसानों, व्यापारियों, धर्माचार्य को खुश करने के लिए बजट में कई तरह के प्रावधान किए हैं। प्रदेश में बुजुर्गों को अभी तक रोडवेज की बसों में 30 प्रतिशत किराए में छूट मिलती थी जिसे बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया गया है। इसी तरह वरिष्ठ नागरिकों को मिलने वाली सामाजिक सुरक्षा मासिक पेंशन को एक हजार रूपये से बढ़कर 1150 रुपए प्रतिमाह कर दिया गया है। उपमुख्यमंत्री ने बजट में 70 हजार युवाओं को नई नौकरी देने की घोषणा की है। इसके लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग व राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड के द्वारा भर्ती कैलेंडर भी बनाने की बात कही गई है। राजस्थान में पिछली अशोक गहलोत सरकार के खिलाफ सबसे बड़ा मुद्दा भर्ती परीक्षाओं में हो रही धांधली को लेकर था। गहलोत सरकार के कार्यकाल में 18 भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक होने के कारण परीक्षाओं को निरस्त करना पड़ा था। बाद में प्रशासनिक परीक्षाओं में भी कांग्रेस के कई बड़े नेताओं के परिजनों के चयन को लेकर विवाद हुआ था। जिसके चलते आम जन में गहलोत सरकार की नकारात्मक छवि बनी थी। इस बात को ध्यान में रखकर भाजपा सरकार ने अपने पहले ही बजट में युवाओं को लुभाने के लिए एक साथ 70 हजार नयी भर्तियों की घोषणा की है। हालांकि भाजपा ने चुनाव से पहले राजस्थान लोक सेवा आयोग में आमूल चूल परिवर्तन करने की बात भी कही थी। मगर उस पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हो पाई है। भाजपा को पता है कि प्रदेश के युवा मतदाताओं की बदौलत ही उनकी सरकार बन पाई है। ऐसे में उन्हें अपने साथ जोड़े रखना बहुत जरूरी है। संविदा पर काम कर रही आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिन, सहायिकाओं के साथ ही अन्य संविदा कर्मियों तथा पंचायती राज व नगरीय निकायों के निर्वाचित जन प्रतिनिधियों को मिलने वाले मासिक भत्ते में भी 10 प्रतिशत बढ़ोतरी की घोषणा की गई है। प्रदेश में इसका बड़ा असर होगा तथा कई लाख लोगों को इस बढ़ोतरी का लाभ मिलेगा। जिससे आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा को फायदा मिल पाएगा। अपने बजट भाषण के दौरान जब कांग्रेस नेता शांति धारीवाल बार-बार उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी को टोक रहे थे तो उन्होंने धारीवाल पर कटाक्ष करते हुए कहा कि यह सिर्फ मर्दों का प्रदेश नहीं है। यहां पर महिलाएं भी बराबर की संख्या में हैं। उनके पास भी वोट की शक्ति है। इसी के चलते राज्य सरकार ने अपने अंतरिम बजट में महिलाओं के हित की कई योजनाओं की घोषणा कर उन पर पूरा फोकस रखा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में एक करोड़ नई लखपति दीदी बनाने की घोषणा की थी, उसी की तर्ज पर राजस्थान के बजट में भी 5 लाख परिवार की महिलाओं को लखपति दीदी योजना में शामिल कर उनकी आय को एक लाख से अधिक बढ़ाया जाएगा। गरीब परिवारों में कन्या के जन्म पर एक लाख रुपये का सेविंग बांड दिया जाएगा। प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना में प्रथम प्रसव पर 6 हजार रुपये दिए जाएंगे। जबकि अभी तक यह राशि पांच हजार थी। प्रदेश के सभी ब्लॉकों में एक-एक आदर्श आंगनवाड़ी केंद्र की स्थापना की जाएगी। प्रदेश में महिलाओं के लिए हेल्प डेस्क बनेगी। सभी नारी निकेतनो में सीसीटीवी टीवी कैमरे लगाए जाएंगे। किसानों के लिए भी बजट में कई घोषणाएं की गई हैं। पीएम किसान निधि में मिल रहे 6000 की राशि को बढ़ाकर 8000 रुपये प्रतिवर्ष किया गया है। इस तरह हर किसान को साल में 2000 रुपये का लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री ने बताया कि इसे आगे बढ़कर 12000 रुपये तक किया जाएगा। किसान क्रेडिट कार्ड की तर्ज पर गोपाल क्रेडिट कार्ड जारी किए जाएंगे चालू वर्ष में 5 लाख गोपालक परिवारों को एक लाख रुपये तक का ब्याज मुक्त लोन उपलब्ध करवाया जाएगा। करीबन 33 लाख किसानों को विभिन्न फसलों के उच्च गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध करवाए जाएंगे। अल्पआय, लघु सीमांत ,बटाईदार किसानों, खेती और श्रमिकों के बच्चों को केजी से पीजी तक की मुफ्त शिक्षा दी जाएगी। हालांकि सरकारी स्कूलों में आठवीं तक पढ़ाई और 12वीं तक किताबें पहले से फ्री दी जा रही है। 9वीं से 12वीं तक आंशिक फीस ही ली जा रही है। मुख्यमंत्री चिरंजीवी योजना का नाम बदलकर अब मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना किया गया है। जिसमें कैंसर का डे केयर इलाज को भी शामिल किया गया है। हाईवे पर हादसों में जान बचाने के लिए 25 एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस उपलब्ध करवाई जाएगी। प्रधानमंत्री ने सौर ऊर्जा के क्षेत्र में सूर्योदय योजना की घोषणा की थी। जिसके अंतर्गत राजस्थान के 5 लाख घरों पर रूफ टॉप सोलर पैनल लगाए जाएंगे। जिससे उन परिवारों के लोगों को 300 यूनिट तक प्रतिमा बिजली निःशुल्क मिल सकेगी। प्रदेश में मन्दिरों के उन्नयन पर 320 करोड़ रुपये खर्च किये जाने का प्रावधान किया गया है। इससे विभिन्न धर्माचार्यों का सरकार को समर्थन मिलेगा। हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी सभी चुनावी जनसभाओं में प्रदेश में पेट्रोल, डीजल की अधिक कीमतों का विरोध करते हुए भाजपा सरकार बनने पर उन्हें कम करने का वायदा किया था। मगर राज्य सरकार के बजट में उस पर कोई प्रावधान नहीं किया गया है। जबकि प्रदेश के लोगों को अपने पड़ोसी राज्यों की तुलना में आज भी महंगी दरों पर पेट्रोल, डीजल खरीदना पड़ रहा है। इससे लोगों के मन में निराशा व्याप्त हुई है। प्रदेश के लोगों का कहना है कि राज्य सरकार को पेट्रोल, डीजल की कीमतों में अविलम्ब कमी कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी को पूरा करना चाहिए। जिससे आमजन को राहत मिल सकें। हालांकि सरकार ने चीनी व गुड़ से मंडी टैक्स हटाकर महंगाई कम करने का प्रयास किया है। इससे व्यापारिक वर्ग की एक पुरानी मांग पूरी हुयी है।

बरेली युवा कल्याण विभाग द्वारा जोनल स्तरीय वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता डोरीलाल स्टेडियम में बालक एवं बालिका वर्ग में दीपक वर्मा के नेतृत्व में आयोजित हुई

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहनपुर। युवा कल्याण विभाग द्वारा जोनल स्तरीय वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता डोरी लाल स्टेडियम बरेली में बालक एवं बालिका वर्ग में आयोजित हुई जिसमें टीम कोच दीपक वर्मा के नेतृत्व में जनपद शाहजहांपुर के 8 महिला व 4 पुरुष कुल 12 खिलाड़ियों ने अलग-अलग आयु व भार वर्ग में प्रतिभाग करते हुए 10 गोल्ड व 2 सिल्वर मेडल प्राप्त किए। सभी गोल्ड मेडल विजेता खिलाड़ी राज्य स्तरीय वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगे । महिला वर्ग के सब जूनियर 40 किलोग्राम भार वर्ग में कौशल्या देवी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, 45 किलोग्राम भार वर्ग में रोली वर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, 49 किलोग्राम भार वर्ग में प्रियांशी देवी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, वहीं खुशबू ने 55 किलोग्राम भर वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जूनियर वर्ग के 45 किलोग्राम भार वर्ग में निकिता वर्मा प्रथम, 49 किलोग्राम भार वर्ग में नेहा वर्मा प्रथम, सीनरी वर्ग के 45 किलोग्राम भार वर्ग में अंशिका प्रथम,49 किलोग्राम भार वर्ग में नेहा देवी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं बालक वर्ग के सब जूनियर वर्ग के 49 किलोग्राम भार वर्ग में विवेक वर्मा प्रथम, जूनियर वर्ग के 61 किलोग्राम भार वर्ग में सुनील कुमार प्रथम, सीनियर वर्ग के 55 किलोग्राम भार वर्ग में विनोद कुमार प्रथम, 73 किलोग्राम भार वर्ग में विषम मिश्रा द्वितीय स्थान पर रहे। सभी विजेता खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी अजय पाल वर्मा के मार्गदर्शन में विकासखंड सिधौली के ग्राम महाऊ दुर्ग में वेटलिफ्टिंग का अभ्यास करते हैं ।विजेता दो खिलाड़ियों को छोड़कर सभी 10 खिलाड़ी ग्राम महाऊ दुर्ग के ही निवासी हैं। सभी खिलाड़ियों की सफलता पर युवा कल्याण विभाग शाहजहांपुर सहित जनपद बसियों में खुशी की लहर है। जिला युवा कल्याण अधिकारी नरेंद्र कुमार सिंह सहित बी ओ अनुराग, अनिल कुमार, राहुल उपाध्याय, सत्येंद्र कुमार और नैंसी गुप्ता का विशेष योगदान रहा वेटलिफ्टिंग प्रशिक्षक अजय पाल वर्मा ने बताया कि राज्य स्तरीय वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में लगातार 5 वर्षों से खिलाड़ी पदक प्राप्त कर जनपद का नाम रोशन कर रहे हैं। जनपद वापस आने पर सभी वेट लिफ्टिंग खिलाड़ियों ने स्वागत कर खुशी मनाई।

गरीब दलित युवक की हत्या के बाद कार्यवाही न करने पर नायक टाइगर फोर्स ने सीएम , पीएम , डीजीपी यूपी के नाम जिला अधिकारी खीरी को सौंफा ज्ञापन

❖ नायक टाईगर फोर्स ने उच्च स्तर की एजेंसी द्वारा जांच कराते हुए कठोर कार्यवाही की मांग की।

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

खीरी। कोतवाली मोहम्मदी छेत्र अंतर्गत ग्राम गोकन में गरीब दलित युवक की हत्या के बाद कार्यवाही न करने पर नायक टाइगर फोर्स ने नाराजगी जताते हुए विरोध प्रदर्शन कर खीरी जिला

अधिकारी महेंद्र बहादुर सिंह को सीएम, पीएम डीजीपी यूपी के नाम जिला अधिकारी को सौंफ ज्ञापन बही जिला अधिकारी खीरी ने कार्यवाही करने का आश्वासन दिया आरोपियों पर कठोर कार्यवाही की जाएगी दरअसल मामला मोहम्मदी थाना पुलिस की भारी लापरवाही को देखते हुए ग्राम पंचायत गोकन का है जहां पर 50 वर्षीय कमलेश को गांव के ही बिट्टू सिंह पुत्र बलवंत सिंह द्वारा 4 जनवरी 2024 को गोकुल गाना सेंटर से मोटरसाइकिल से लेकर गया था।जिसमें गांव के ही अजय कुमार ,कश्मीर , प्रताप एवं गांव के अन्य लोगों ने बिट्टू सिंह द्वारा मोटरसाइकिल पर कमलेश को ले जाते हुए देखा था। वहीं परिवार वालों का कहना है कि 4 जनवरी से लापता कमलेश को मोहम्मदी पुलिस ने अनदेखा व लापरवाही की है बार बार थाने के चक्कर काटने पर 16 दिन बाद अपहरण आईपीसी धारा 364 में मुकदमा दर्ज कर लिया पीड़ित का आरोप है हत्या में नहीं मुकदमा दर्ज किया गया दबंग किस्म के बिट्टू के भाई ने गरीब पीड़ित पक्ष को जान सें मरने व जाति सूचक गली गलौज किया जिसक आईएफआर एससी/एसटी एक्ट दर्ज किया गया । उसके बाद लगभग 24 दिन बीत जाने के बाद मृतक कमलेश का शव फरेंदा गांव में एक तालाब में पाया गया था जो संबंधितों द्वारा इस मामले में मोटा खर्च कर पीड़ित की आवाज को ना सुनकर आरोपी को पुलिस ने आजाद कर दिया जिसका पीड़ित परिवार ने जमकर विरोध प्रदर्शन किया ग्राम पंचायत वासियों ने नायक टाइगर फोर्स संघ को सूचना दी और पूरा नायक टाइगर फोर्स में गांव एवं क्षेत्र में लोगों से जनसंपर्क किया और पूरे मामले का जांच पड़ताल की उसके बाद

नायक टाईगर फोर्स संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजीत कुमार आजाद ने संज्ञान में लेते हुए पीड़ित परिवार के साथ एवं संगठन के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने एक जुट होकर विरोध प्रदर्शन कर सीएम , पीएम, डीजीपी यूपी,के नाम खीरी जिला अधिकारी महेंद्र बहादुर सिंह को ज्ञापन सैफ कर उच्च स्तर की एजेंसी द्वारा जांच कराकर कठोर कार्यवाही की मांग की राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा पीड़ित परिवार को जिला अधिकारी द्वारा जांच कराकर कठोर कार्यवाही करने का आश्वासन दिया राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा मैं पीड़ित परिवार के साथ हूं पीड़ित परिवार को न्याय नहीं मिला तो अगला कदम भूख हड़ताल का होगा इस बीच मौजूद रहे नायक टाईगर फोर्स संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजीत कुमार आजाद, जिला अध्यक्ष माशूक अली , फसाद खान ,मनोज वर्मा , शक्ति कनौजिया , अमीतोष पांडेय, एवं पीड़ित परिवार शोभा देवी , सुमन देवी ,कौशल कुमार आदि मौजूद रहे

एक नज़र

बार एसोसिएशन (पंजीकृत) का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

द अचीवर टाइम्स एस के सिह

निघासन-खीरी। सिविल बार ऐसोसिएशन (पंजीकृत) का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न, कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सिविल जज प्रीती यादव ने सिविल बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सर्वेश गुप्ता, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मो अमीन, महामंत्री हरिनंदन यादव सहित सभी पदाधिकारियों को पद एव गोपनीयता की शपथ दिलायी।

ग्राम महदापुर में खड़ंजे के निर्माण कार्य का जिला पंचायत अध्यक्ष रेखा नागर ने किया उद्घाटन

द अचीवर टाइम्स/चेतन कुमार

हापुड़। जनपद हापुड़ में शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रेरणा से चहुमुखी विकास की पावन बेला को आगे बढ़ाते हुए धोलाना विधानसभा क्षेत्र के वार्ड 16 के ग्राम महदापुर में खड़ंजा के निर्माण कार्य का उद्घाटन वार्ड की जिला पंचायत सदस्य शिखा तोमर के साथ जिला पंचायत चेयरमैन रेखा नागर ने किया और उदघाटन के दौरान गांव के लोगों के चहरे खुशी साफ साफ दिखाई दे रही थी। इस अवसर पर सुरेश तोमर, ग्राम प्रधान कामिल, पूर्व प्रधान सतवीर सिंह, ग्राम हिंडालपुर से प्रधान शिवकुमार, सुरेन्द्र प्रधान सहित सभी ग्रामवासी उपस्थित रहे।

थाना फूलबेहड़ पुलिस द्वारा एक वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स ब्यूरो रिपोर्ट लखीमपुर खीरी

फूलबेहड़ -पुलिस अधीक्षक महोदय खीरी, श्री गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक महोदय खीरी के निकट पर्यवेक्षण में संपूर्ण जनपद में अपराध की रोकथाम व वांछित/वारंटी अभियुक्तों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत आज दिनांक 09.02.2024 को थाना फूलबेहड़ पुलिस द्वारामु0अ0सं0 45/24 धारा 342/384/419/420 भादवि में वांछित अभियुक्त अफजल हुसैन उर्फ सोनू पुत्र तफजुल हुसैन निवासी ग्राम धर्मापुर थाना मझगई जनपद खीरी को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय भेजा गया है।

गिरफ्तार अभियुक्त:- अफजल हुसैन उर्फ सोनू पुत्र तफजुल हुसैन निवासी ग्राम धर्मापुर थाना मझगई जनपद खीरी मु0अ0सं0 50/21 धारा 406/504/506 भादवि थाना निघासन। 2.मु0अ0सं0 87/21 धारा 406 भादवि थाना निघासन।3.मु0अ0सं0 45/24 धारा 384/342/419/420 भादवि थाना निघासन। गिफ्तार करने वाली पुलिस टीम उ0नि0 अशोक कुमार यादव थाना फूलबेहड़ का0 मो0 रिजवान थाना फूलबेहड़ का0 सतेन्द्र सिंह थाना फूलबेहड़।

कोरोंकुइया पूर्व प्रधान सबील हसन के आबस पर भारतीय किसान यूनियन राष्ट्रीयता वादी जिला अध्यक्ष नरेंद्र यादव की अध्यक्षता में बैठक हुई संपन्न

द अचीवर टाइम्स फसाद खान शाहजहांपुर

सिंधौली। भारतीय किसान यूनियन राष्ट्रीयता वादी की एक बैठक जिला अध्यक्ष नरेंद्र यादव की अध्यक्षता में ग्राम कोरोंकुइयाँ में पूर्व प्रधान सवील हसीन के आवास पर संपन्न हुई बैठक में जिला अध्यक्ष नरेंद्र यादव ने कहा कि दिनांक 12 फरवरी दिन सोमवार को यूनियन के कार्यकर्ता सिंधौली थाने का घेराव करेंगे जिसको लेकर जिले भर में मीटिंग की जा रही है सभी किसान भाइयों को बड़ी संख्या में थाने पहुंचकर संगठन की ताकत को दिखाना होगा। जिला प्रवक्ता हरिराम वर्मा ने सिंधौली थाना अध्यक्ष पर फर्जी मामलों में कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करने का आरोप लगाते हुए कहा कि थाना अध्यक्ष हमारे कार्यकर्ताओं को प्रताड़ित कर रहे हैं बड़ी संख्या में किसान कार्यकर्ताओं पर फर्जी मुकदमा लिखवा कर जेल भेजने का काम किया जा रहा है। जिला संगठन मंत्री रामसनेही शर्मा ने कहा की सरकार ने किसानों की आय दोगुना करने की बात कर एमएसपी पर कानून बनाने का वादा किया था लेकिन सरकार ने नहीं बनाया बरेली मंडल अध्यक्ष बलवंत सिंह इकबाल सिंह निरंकार सिंह यादव बीपी सिंह यादव अंशुल वर्मा सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

व्यापारी वर्ग हमारे देश व भारतीय जनता पार्टी की रगों में बसता है-विनीत शारदा

❖ व्यापार प्रकोष्ठ की पश्चिमी क्षेत्र की बैठक में 19 जिलों के पदाधिकारीयों ने हिस्सा।

द अचीवर टाइम्स ब्यूरो रिपोर्ट चेतन कुमार

हापुड़। हापुड़ के चंडी रोड स्थित चैंबर ऑफ कॉमर्स में शुक्रवार पश्चिमी उत्तर प्रदेश की कार्य समिति की बैठक संपन्न हुई है जिसमें पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 19 जिलों के पदाधिकारीयों ने भाग लिया बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेश संयोजक व्यापार प्रकोष्ठ विनीत शारदा ने कहा कि लोकसभा चुनाव आ चुके हैं हमारा व्यापारी वर्ग अधिक से अधिक भारतीय जनता पार्टी से जुड़े इस दिशा में हमें सतत प्रयास करना है केंद्र व प्रदेश सरकार की योजनाएं व्यापारियों को ध्यान में रखकर के बनाई जाती है जिससे व्यापारी का अधिक से अधिक लाभ हो हमारा व्यापारी वर्ग हमारे देश की और हमारे भारतीय जनता पार्टी की रगों में बसता है बिना व्यापार के किसी भी देश की उन्नति संभव नहीं है आज हमारे देश की जीडीपी आसमान छू रही है तथा नए-नए व्यापारी विदेश विदेश से भारत में आकर व्यापार करना चाहते हैं। इसका सीधा-सीधा संदेश ही है कि अब संपूर्ण विश्व का व्यापारी भारत में व्यापार करने के लिए लालायित है सरकार ने व्यापारियों के हित में ध्यान में रखते हुए सड़कों का जाल बिछा दिया जिससे बहुत सुविधा हो रही है माल आने और जाने में, बिजली देकर सरकार ने व्यापारी पर जेनरेटर और डीजल का बोझ पड़ता था वह भी अब लगभग समाप्त हो चुका है आज भारतीय जनता पार्टी की नेतृत्व में व्यापार फल फूल रहा है उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद दिया कि लालकृष्ण आडवाणी, चौधरी चरण सिंह, पी वी नरसिम्हा राव एम एस रामनाथन को भारत रत्न से सम्मानित करके सभी का मान बढ़ाया है। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष विभु बंसल जो कि लंबे समय से व्यापार प्रकोष्ठ से जुड़े हुए उन्होंने कहा कि मैं व्यापार प्रकोष्ठ में रहकर व्यापारी भाइयों की सेवा की है और इसी सेवा के को देखते हुए संगठन ने मुझे नगर पालिका परिषद अध्यक्ष पिलखुवा बनने का सौभाग्य दिया ,पहले भी और आज भी सतत इसी प्रयास में लगा रहता हूं कि किस प्रकार व्यापारी भाई की सेवा कर सकूं इस पूरी पश्चिम क्षेत्र की बैठक का अध्यक्षता क्षेत्रीय संयोजक विनोद गुप्ता ने की बैठक का संचालन सहारनपुर के अमित गर्ग ने किया इस अवसर पर नोएडा से बलराज मुरादाबाद से अमित गुप्ता रामपुर से आशीष गुप्ता मुजफ्फरनगर से सुनील कुमार हापुड़ से अशोक बबली योगेंद्र मोनू कपिल एस सम अमित शर्मा मोहन सिंह कैलाश वर्मा दीपांशु गर्ग आदि जनपदों से भी व्यापार प्रकोष्ठ के कार्यकर्ता रहे।

सराफा व्यवसायी को लूटने वाले दो बदमाश गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स

बाराबंकी। बड्डूपुर थाना क्षेत्र में 10 दिन पहले सीतापुर के सराफा व्यवसायी के साथ हुई लूट का खुलासा करते हुए पुलिस ने दो आरोपियों को लूट के माल के साथ गिरफ्तार कर लिया, जबकि दो बदमाश फरार हैं। खास बात यह है कि ये बदमाश लखनऊ में दिहाड़ी पर मजदूरी करते थे। पुलिस ने 610 ग्राम जेवर, 2910 रुपये, लूट में प्रयोग की गई कार, बाइक व तमंचा बरामद किया है। एएसपी चिरंजीव नाथ सिन्हा ने शुक्रवार को पुलिस लाइन सभागार में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि 29 जनवरी को सीतापुर जिले के महमूदाबाद निवासी मनोज सिंह उर्फ नरेंद्र सिंह बड्डूपुर में स्थित अपनी सराफा की दुकान बंदकर बाइक से घर लौट रहे थे। इसी दौरान डफरपुर चौराहे के पास बाइक में लात मारकर गिराने के बाद उन पर हमला कर बदमाश जेवर से भरा बैग छीन कर भाग गए। बदमाशों की तलाश में जुटी स्वाट व सर्विलांस तथा थाना बड्डूपुर की संयुक्त पुलिस टीम ने लखनऊ के गौतमपल्ली थाना क्षेत्र के कैबिनेटगंज, बंदरियाबाग के कल्लन उर्फ विजयपाल व झबरा उर्फ आनंद मौर्य को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार बदमाश लखनऊ में दिहाड़ी मजदूरी करते हैं। इसी दौरान इनकी पहचान सीतापुर के गवारी हरेठी थाना थानगांव निवासी ओपी उर्फ ओम प्रकाश रावत व सीतापुर के बेहटा छावनी थाना महमूदाबाद निवासी नरेंद्र लोनिया से हो गई। इन चारों ने सराफा व्यवसायी मनोज को लूटने की योजना बनाई। वारदात वाले दिन नरेंद्र लोनिया व ओपी उर्फ ओमप्रकाश चोरी की बाइक की नंबर प्लेट बदलकर तो कल्लन व झबरा कार से बड्डूपुर पहुंचे। घर जाते समय नरेंद्र व ओपी ने मनोज की बाइक में लात मारकर गिरा दिया और जेवर से भरा बैग लूट लिया। दोनों बदमाशों की तलाश की जा रही है।

संस्कृत संभाषण शिविर के समापन पर संस्कृत भाषा की उपयोगिता पर दिया

द अचीवर टाइम्स ब्यूरो रिपोर्ट चेतन कुमार

हापुड़ के आर्य कन्या पाठशाला में शुक्रवार को दशदिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन समारोह संपन्न हुआ सर्वप्रथम डॉक्टर स्नेह प्रभा ने सरस्वती माँ के चित्र के समक्ष माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। माँ सरस्वती गान के बाद बी एड-प्रशिक्षणकती कु दिव्या चौधरी ने आये हुये सभी अतिधि?यों का परिचय दिया । डॉ अनीता जायसवाल ने आज के समय में संस्कृत भाषा की उपयोगिता पर बल दिया तो वरिष्ठ प्रवक्ता अर्चना गौतम ने संस्कृत भाषा को भी पढ़ने के लिए प्रेरित किया संस्कृत भारती के वरिष्ठ कार्यकर्ता प्रदीप आर्य ने छात्राओं को गायत्री मंत्र का महत्व व विशेषता पर प्रकाश डाला और कुलदेव शास्त्री ने संस्कृत भाषा को रोजगार - परक व जागरुकता पर बल दिया। कार्यक्रम में भाग लेने वाली, पलक, दृष्टि मोहिनी, शिवानी आदि छात्राओं ने विविध कार्यक्रम प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। कार्यक्रम समापन करते हुए डॉ नेह प्रभा ने छात्राओं को बोर्ड को परीक्षा अच्छे से पास करने के लिए परिश्रम करने को कहा साथ ही आये हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में सहयोग देने वाली डॉक्टर संगीता सिंह, सिप्रा श्रीवास्तव, डॉ0 सरोज भारती, प्रीति अग्रवाल, कविता-चौधरी, शिल्की सिंह आदि शिक्षिकाओं का सहयोग रहा। इस अवसर पर आशीष, विनीत, अभिषेक, संजयरामी, विशाल, रश्मि, सविता, किरण, सोनम, बाला, जोगेन्डी, शोभा, दीपाली आदि शिक्षणेतर कर्मचारी मौजूद रहे।

थाना कोतवाली सदर पुलिस द्वारा 01 नफर अभियुक्त

❖ थाना कोतवाली सदर पुलिस द्वारा 01 नफर अभियुक्त मय डी0सी0एम0 नं0- UP40T5882 मे लदी 130 बोरी अवैध भांग कुल वजन 5200 यत एवं दो अदद कूट रचित भांग के बिल सम्बन्धी प्रपत्र के साथ गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स विनोद वर्मा

लखीमपुर। पुलिस अधीक्षक महोदय खीरी, श्री गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक(पूर्वी) महोदय खीरी के निकट पर्यवेक्षण में संपूर्ण जनपद में अपराध की रोकथाम व अवैध मादक पदार्थ के निर्माण, बिक्री व परिवहन के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत आज दिनाँक 09.02.2024 को थाना कोतवाली सदर पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर बेडनापुर पुल के पहले निर्माधीन ड्रग्स वेयरहाउस के सामने से बरहायच रोड से एक नफर अभियुक्त टिंकू श्रीवास्तव पुत्र रामबाबू नि0 ग्राम चितहला, महोली जनपद सीतापुर उ0प्र0 को डी0सी0एम0 नं0-क्ष्0ज्ञ5882 मे लदी 130 बोरी अवैध भांग कुल वजन 5200 चत्र एवं दो अदद कूट रचित भांग के बिल सम्बन्धी प्रपत्र के साथ गिरफ्तार किया गया एवं 02 अभि मौके से फरार हो गये है। बरामदगी के आधार पर मु0अ0सं0 0093/2024 धारा 419/420/467/468/471 भादवि व 60/72 Ex एक्ट में पंजीकृत किया गया । अभियुक्त को विधिक कार्यवाही हेतु मा0 न्याया0 भेजा जा रहा है ।

गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण- 1.टिंकू श्रीवास्तव पुत्र रामबाबू नि0 ग्राम चितहला थाना महोली जनपद सीतापुर उ0प्र0।

बरामदगी का विवरण- डी0सी0एम0 नं0- P40ज्ञ5882 मे लदी 130 बोरी अवैध भांग कुल वजन 5200 KG एवं दो अदद कूट रचित भांग के बिल सम्बन्धी प्रपत्र।

गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम का विवरण- 1.उ0नि0 दिनेश कुमार पाण्डेय। 2.हे0का0 अविनाश सिंह। 3.हे0का0 निसार अहमद। 4.का0 विद्या प्रकाश सिंह। 5.का0 शशीकान्त। 6.निरीक्षक श्री अवधेश कुमार(आबकारी)। 7.हे0का0 रामसिंह (आबकारी)। 8.हे0का0 दानिश अहमद(आबकारी)। 9.का0 श्रीराम(आबकारी)।

हरदोई में दर्दनाक सड़क हादसा, श्रद्धालुओं से भरी ट्रैक्टर ट्राली पलटी, दो की मौत और 23 गंभीर घायल

द अचीवर टाइम्स

हरदोई। हरदोई जिले के बेनीगंज कस्बे में भागवत कथा के दौरान भोले की बारात में शामिल होकर नैमिषारण्य से वापस आ रहे श्रद्धालुओं से भरी ट्रैक्टर ट्राली सीतापुर मार्ग पर अनियंत्रित होकर पलट गई। घटना में दो महिलाओं की मौत हो गई, जबकि 23 लोग घायल हो गए। घायलों में कुछ को अहिरोरी सामुदायिक स्वास्थ्यकेंद्र में भर्ती कराया गया है, जबकि कुछ को इलाज के लिए जिला अस्पताल भेज दिया गया। जिला अस्पताल से एक घायल का लखनऊ रेफर कर दिया गया। घटना के बाद से ट्रैक्टर का चालक लापता है। घटना की जानकारी पर डीएम और एसपी भी अस्पताल पहुंचे। बघौली थाना क्षेत्र के बिराजीखेड़ा गांव निवासी दलगंजन सिंह के लंबे समय बाद बेटा हुआ है। इसी खुशी में उन्होंने गांव में भागवत कथा का आयोजन और मंदिर का निर्माण कराया है। कथा के दौरान शुक्रवार को माघ अमावस्या के दिन भोले की बारात निकालने का कार्यक्रम था। चार ट्रैक्टर ट्रालियों और तीन छोटे वाहनों में भोले की बारात लेकर वह नैमिषारण्य गए थे। देर शाम नैमिषारण्य से सभी श्रद्धालु वापस आ रहे थे। बेनीगंज कोतवाली क्षेत्र में हरदोई-सीतापुर मार्ग पर शुक्लापुर गांव के पास विपरीत दिशा से आ रहे वाहन से बचने के लिए ट्रैक्टर चला रहे निर्मल ने अचानक ब्रेक लगा दी। ब्रेक लगने से ट्रैक्टर ट्राली अनियंत्रित होकर पलट गई और दो बार पलटी मार गई।

सभी को जिला अस्पताल में भर्ती कराया

घटना में विराजीखेड़ा निवासी अनिल कुमार की पत्नी अनीता (40) और अनूप की पुत्री पूजा (18) की मौत हो गई। घटना में अनूप और उसकी पत्नी सुनीता (40) भी घायल हो गई। इसके अलावा शांती (60), रामरानी (60), रानी (50), रोनी (30), प्रीती (18), अनिल की पुत्री मुस्कान (13), सलोनी (30), रूपलाल की पुत्री संध्या (11), और सनी (20) घायल हो गए। इन सभी को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

प्राथमिक जांच में अनियंत्रित होकर पलटने की बात आई है सामने

इनमें से रानी की हालत गंभीर होने पर लखनऊ रेफर कर दिया गया। घटना में घायल राधा (10) पुत्री प्रमोद, राजेश्वरी (38) पत्नी राजेश, कोकिला (22) पुत्री भोले, खुशबू (16) पुत्री राजेश, पारूल (14) पुत्री अशर्फी, मालती (50), सतरूपा (25), नन्हीं (50), अशर्फीलाल की पत्नी गीता (33), मनीराम की पत्नी माधुरी (55) और पुत्री फूलमती (20) व रेखा (33) पत्नी अमिलेश को अहिरोरी सीएचसी में भर्ती कराया गया है। एसपी केसी गोस्वामी ने बताया कि हादसे में दो लोगों की मौत हुई है। प्राथमिक जांच में ट्रैक्टर ट्राली के अनियंत्रित होकर पलट जाने की जानकारी मिली है।

पांच घरों को बनाया निशाना, तीन मकानों से लाखों की चोरी

कछौना (हरदोई)। बघौली थाना क्षेत्र के महरी गांव में गुरुवार रात चोरों ने पांच घरों को निशाना बना लिया। इनमें तीन घरों से कई लाख रुपये के जेवर और नकदी ले गए। महरी निवासी अर्जुन सिंह खेती करते हैं। गुरुवार रात 12 बजे उनके मकान में चोर घुस गए। उनके बेटे शुभम को आहट मिली तो उसने शोर मचा दिया। इस पर चोर भाग निकले। इसके बाद चोरों ने गांव में ही संजय के मकान में धावा बोला। संजय के गांव में दो मकान हैं। रात में एक मकान में संजय सोए थे, और दूसरे में उनकी पत्नी मालती। जिस मकान में मालती सोई थीं उसमें घुसे चोरों ने कमरा बाहर से बंद कर दिया। यहां दूसरे कमरे से आठ हजार रुपये 15 साड़ी, सोने की चेन, दो अंगूठी और दो जोड़ी पायल चोरी कर ले गए। चोरों ने उनका एक बक्सा गांव के बाहर डाल दिया।

जिलाधिकारी नितीश कुमार ने दिया निर्देश

संवाददाता

अयोध्या। जिलाधिकारी नितीश कुमार के निर्देश पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन अनिरुद्ध प्रताप सिंह ने कलेक्ट्रेट सभागार में आई0 जी0 आर0 एस0 पोर्टल पर प्राप्त हो रही शिकायतों के नियत समय-सीमा के भीतर गुणवत्तापरक निस्तारण कराये जाने के सम्बन्ध में जनपद स्तरीय/विकास खण्ड स्तरीय अधिकारियों के साथ बैठक की । बैठक एडीएम प्रशासन ने बताया कि आई0जी0आर0एस0 पोर्टल पर सी0एम0सन्दर्भ, सी0एम0हेल्पलाइन, जिलाधिकारी/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, ऑनलाइन, मण्डलायुक्त/आईजी/डीआईजी, पी0 जी0 पोर्टल, उप मुख्यमंत्री/मा0 राज्यपाल/मंत्री, शासन/राजस्व परिषद्/निदेशालय, आर्थिक मदद, अवैध भूमि कब्जा, मुख्य सचिव, महिला हेल्प डेस्क के अतिरिक्त ऑनलाइन प्रथम स्तर, द्वितीय स्तर, तृतीय स्तर एवं चतुर्थ स्तर व सी0 एम0 हेल्पलाइन प्रथम स्तर, द्वितीय स्तर, तृतीय स्तर, चतुर्थ स्तर व इस माह से उक्त के साथ-साथ साधारण डाक के सन्दर्भ प्राप्त हो रहे है। उन्होंने सभी प्रकार के शिकायतों का गुणवत्तापरक निस्तारण कराने के सम्बन्ध में समस्त अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आनलाइन प्राप्त हो रहे सभी संस्करणों के सन्दर्भों को मार्किंग नियमित समय से करें। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारीगण पोर्टल के माध्यम से प्राप्त होने वाले शिकायतों को प्रत्येक दिन देखेंगे। सम्बन्धित अधिकारीगण अपने-अपने यूजर आई0 डी0 को लागिन कर प्राप्त, किन्तु अनमार्क के मेन्यू में जाकर सर्च करा लें। यदि शिकायत उनके कार्यालय से सम्बन्धित है तो वे अपने कार्यालय स्तर पर लंबित रखेंगे अथवा अपने अधीनस्थ को ट्रांसफर करेंगे। किसी भी अधिकारी के पास अनमार्क सन्दर्भ नहीं रहना चाहिए। शिकायतों का निस्तारण अनिवार्य रूप से गुणवत्तापरक होना है जिससे फीडबैक के माध्यम से सी-श्रेणी सन्दर्भ न आये। डिफाल्टर के स्थान पर लंबित सूची सर्च करायी जाय तथा समय सीमा के भीतर सन्दर्भों को गुणवत्तापरक निस्तारित किया जाय। उन्होंने कहा कि किसी भी दशा में शिकायतों के निस्तारण के समय देरी व गुणवत्ता में कमी न होने पाए। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकरण में असंतोष जनक फीडबैक प्राप्त होने पर पुनः अपलोड की गयी आख्या के असंतोषजनक होने की स्थिति में नियमानुसार उच्चाधिकारी द्वारा अधीनस्थ अधिकारी का स्पष्टीकरण प्राप्त किया जाय एवं अधीनस्थ अधिकारी से प्रकरण की गुणवत्ता परक निस्तारण कराकर संशोधित आख्या प्राप्त कर पोर्टल में अपलोड की जाये। जांच के दौरान यदि राजस्व/विकास विभाग एवं पुलिस की आवश्यकता पड़ती हो, तो सम्बन्धित उप जिलाधिकारी/खण्ड विकास अधिकारी/क्षेत्राधिकारी आपस में समन्वय स्थापित करके प्रकरण का नियमानुसार निराकरण करायें । बैठक में आईजीआरएस पटल सहायक कौशल श्रीवास्तव द्वारा एजेंडा प्रस्तुत किया गया तथा पोर्टल पर प्राप्त होने वाली शिकायतों के निस्तारण की विस्तृत एवं तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। बैठक में पीडी डीआरडीए, एक्सईएन सिंचाई सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

शिवरामपुर गांव में लगा आयुर्वेद होम्योपैथिक और यूनानी तथा योग का चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर

616 लोग हुए मरीज हुए लाभान्वित

संवाददाता

अयोध्या। विकासखंड तारुन क्षेत्र के शिवरामपुर गांव में आयुष, आयुर्वेद, होम्योपैथिक ,यूनानी तथा योग विधि का एक स्वास्थ्य शिविर लगा जहां पर 616 मरीज पहुंचे और जांच करवाकर दवा लिया । शहाबुद्दीनपुर, शिवरामपुर, खैपुर,समदा आदि गांव के लोगों ने पहुंचकर स्वास्थ्य शिविर में जांच कराई । ग्राम वासियों को विभिन्न ऋतुओं में आयुष के सिद्धांतों के अनुरूप अपने स्वास्थ को बेहतर रखने के लिए आयुष चिकित्सा पद्धतियों में वर्णित आहार, आदतों और तथा जीवन शैलियों के अभ्यास से जागरूकता पैदा करना तथा ग्राम वासियों के घरों के आसपास क्षेत्र में पाए जाने वाली जड़ी बूटियां की औसत गुण के माध्यम से इलाज तथा संचारी और असंचारी रोगों के प्रति जागरूकता पैदा कर उनकी रोकथाम के उपाय की जानकारी दी गई और उनके स्वास्थ्य का निशुल्क परीक्षण किया गया तथा दवा वितरण किया गया इसमें कुल 616 हमारी जो मरीज लाभान्वित हुए। स्वास्थ्य शिविर में डॉक्टर अभिषेक वर्मा, डॉक्टर राहुल सिंह, डॉक्टर मिथिलेश कुमार वर्मा, डॉक्टर अशफाक अहमद, डॉक्टर रामनयन, डॉक्टर लक्ष्मी अग्निहोत्री, फार्मासिस्ट राकेश सिंह, मोहम्मद खालिद, नित्यानंद, ध्रुव त्रिपाठी ,स्टाफ नर्स ममता दुबे ,माधुरी पांडेय ,आराधना पांडेय ,रजनी गुप्ता योग प्रशिक्षक मंजूलिका, दिनेश कुमार मौर्य, सुधाकर पांडेय ,दिग्विजय सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

एक नज़र

श्रीराम अंतरिक्ष वेधशाला उत्सव के तहत पोशाक कार्यक्रम का आयोजन

अवध विवि के छात्रों ने प्रभु श्रीराम के साथ अन्य चरित्रों की निभाई भूमिका

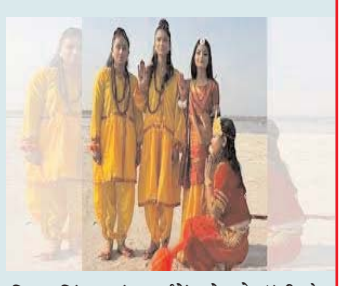

अयोध्या। श्रीराम प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित होने के उपलक्ष्य में डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में भारत अंतरिक्ष सप्ताह के अन्तर्गत श्रीराम अंतरिक्ष वेधशाला उत्सव मनाया गया। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो0 प्रतिभा गोयल के दिशा-निर्देशन में शुक्रवार को फैशन डिजाइनिंग एवं गवर्नमेंट टेक्नोलॉजी के छात्र-छात्राओं द्वारा गुप्तार घाट पर पोशाक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें श्रीराम की भूमिका में मेहजबी बानो, सीता के रूप में आकृति श्रीवास्तव, लक्ष्मण के स्वरूप में गरिमा तिवारी, हनुमान की भूमिका शिवानी, रावण के रूप में सादिया रिजवी तथा सहयोगी में समृद्धि रस्तोगी, संस्कृति मिश्रा रही।कार्यक्रम का सफल आयोजन प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभागाध्यक्ष डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र के नेतृत्व में किया गया। उन्होंने बताया कि 22 जनवरी को श्रीराम प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित होने के उपलक्ष्य में समस्त शिक्षण संस्थानों में शासन के निर्देश पर 09 से 10 फरवरी तक भारत अंतरिक्ष सप्ताह के अन्तर्गत श्रीराम अंतरिक्ष वेधशाला उत्सव मनाया जा रहा है। इसी क्रम में विभागीय शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की देखरेख में विनीता पटेल, शालिनी पांडे, रत्नेश यादव ने फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी एवं मेकअप, वेशभूषा स्वरूप प्रदान किया। इसमें पात्रों के मेकअप के लिये मॉनसून सैलून की साक्षी मोटवानी बजाज ने स्पॉन्सर किया।

सपा की बैठक में हुई विस्तार से चर्चा

अयोध्या। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के निर्देश पर आज रुदौली विधानसभा के सीवन वाजिदपुर गांव सभा में पी.डी.ए.की बैठक संपन्न हुई जिसमें मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष पारसनाथ यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में आम जनता त्रस्त है महंगाई चरम सीमा पर है श्री यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार में अखिलेश यादव के मुख्यमंत्री काल में जो विकास कार्य हुआँ उसे जनता आज भी याद कर रही है श्री यादव ने कहा आने वाले लोकसभा चुनाव में पीडीए को साथ लेकर इंडिया का गठबंधन के नेतृत्व दिल्ली में सरकार बनेगी जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की होगी श्री यादव ने कहा कि आम जनता ने मन बनाया है कि पीडीए का सासद बनना है । समाजवादी पार्टी के जिला प्रवक्ता चौधरी बलराम यादव ने बताया कि पीडीए के बैठक में समाजवादी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता मौजूद थे सभी ने लोकसभा चुनाव में सपा के सांसद को जीतने का संकल्प लिया कार्यक्रम का संचालन राजित राम रावत जिला सचिव,आयोजक मो. अली प्रदेश सचिव,अध्यक्षता छोटेलाल यादव विधानसभा अध्यक्ष,रिजवान रसूल प्रदेश कार्यसमित सदस्य,रुदौली नगर अध्यक्ष अमीर खान, असगर अली, मवई ब्लैक अध्यक्ष विंध्या सिंह, ललई यादव, नदीम अहमद प्रदेश कार्यसमित सदस्य, सोनू खान प्रदेश सचिव अल्पसंख्यक सभा, सफीक बी. डी. सी, अबसार अहमद पूर्व प्रदेश सचिव मुलायम यूथ ब्रिगेड,सोनू खान,कलीम बी. डी. सी.आदि लोग मौजूद रहे ।

औषधीय पौधों की खेती से दोगुनी हो सकती आय-कुलपति

कुमारगंज अयोध्या। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में चल रहे तीन दिवसीय राष्ट्रीय वार्षिक कार्यशाला का शुक्रवार को समापन हो गया। ÷औषधीय, सगंध पौध एवं पान शोध परियोजना÷ विषय पर आयोजित इस कार्यशाला का समापन कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ बिजेंद्र सिंह की मौजूदगी में हुआ। तीन दिनों तक चलने वाले राष्ट्रीय कार्यशाला में राज्यभर से 26 कृषि विश्वविद्यालयों एवं केंद्रीय कृषि संस्थानों के लगभग 100 वैज्ञानिको ने विभिन्न विषयों पर विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में एलुवेरा, सतावर, अश्वगंधा का प्रयोग को प्रतिदिन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि औषधीय एवं सगंधित पौधे स्वास्थ्य और आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक किसानों को औषधीय पौधों की खेती करनी चाहिए। इससे किसने की आय में भी अधिक वृद्धि हो सकती है। इस दौरान वैज्ञानिकों ने कुलपति के साथ सब्जी विज्ञान प्रक्षेत्र का भ्रमण कर बारीकियों को परखा। राष्ट्रीय कार्यशाला के मुख्य आयोजक उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा संजय पाठक एवं कार्यक्रम का संयोजन डा. राम सुमन मिश्रा ने किया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक, शिक्षक एवं छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

वक्फ मस्जिद खजूर के पुराने किराएदारो ने वक्फ बोर्ड चेयरमैन को दिया ज्ञापन

❖ अध्यक्ष का आश्वासन दोषियों पर होगी कड़ी कार्यवाही।

संवाददाता

अयोध्या। वक्त मस्जिद खजूर गुदड़ी बाजार रामपथ के पुराने किराएदारों ने वक्फ बोर्ड के चेयरमैन अली जैदी से मिलकर अपना शिकायती पत्र सौंपा।बृहस्पतिवार को वक्फ मस्जिद खजूर के पुराने किरायदार ने शिया वक्फ बोर्ड लखनऊ जाकर चेयरमैन अली ज़ैदी से अपनी शिकायत दर्ज कराई,दुकानदारों का कहना है कि मुतावल्ली परवेज हुसैन व अध्यक्ष ने पुराने दुकानदारों को गुमराह करके नई दुकानदारों से मोटी रकम लेकर उनके नाम दुकान की किरायदारी कर दी व वक्फ बोर्ड के नियमों की धज्जियां उड़ाते हुए बिना बोर्ड की परमिशन के दुकानें बनवाई व एक दुकान कमेटी के अध्यक्ष व एक दुकान मुतवाली के भाई ने ले ली जो नियमों के विरुद्ध है,और एक दुकान कि मोटी रकम लेकर उसको किराएदारी कर दी, पुराने दुकानदार अपनी दुकान का बचा हुआ 3 फिट की जगह भी नहीं पाए, बल्कि वक्फ एक्ट में नियम है कि किसी भी कमेटी का अध्यक्ष व मुतावल्ली दुकान अपने नाम व अपने रिश्तेदारों के नाम नहीं ले सकता।इन्हीं सब बातों को लेकर पुराने दुकानदार शिया वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष अली जैदी से मिले व अपनी बात बताए जिस पर बोर्ड के अध्यक्ष अली जैदी ने सभी को आश्वस्त किया की उनके खिलाफ सख्त से सख्त करवाई का भरोसा दिलाया वह पुराने दुकानदारों को भरोसा दिलाया कि नियमानुसार दुकान दी जाएगी। इस मौके पर कमलेश शंकर गुप्ता, मोहम्मद कामिल, अर्शी, अहमद मुस्तफा,अजहर भाई मौजूद रहे।

सांसद लल्लू सिंह की भाभी के निधन पर जताया शोक

संवाददाता

अयोध्या। अयोध्या सांसद लल्लू सिंह के अनुज की पत्नी हेमलता सिंह के असामयिक निधन पर व्यापार अधिकार मंच ने दुख जताया है।संयोजक सुशील जायसवाल, प्रभारी विश्व प्रकाश÷ रूपन÷ कमल कौशल,राजीव मदान प्रवीण रस्तोगी, शैलेन्द्र सोनी ÷रामू÷ राजकुमार मोटवानी, राकेश वाधवानी, प्रेम चंद्र कसौंधन पप्पू प्रधान, अरूण, जसबीर सिंह ,आकाश,रमेश जायसवाल, राजेश जायसवाल, सक्षम श्रीवास्तव प्रदीप जायसवाल आदि ने सामूहिक रूप से प्रभु से पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करने व संपूर्ण परिवार को यह दुख सहन करने हेतु संबल प्रदान करने की प्रार्थना की है।

अयोध्या में सदी के महानायक अमिताभ बच्चन ने किया ज्वेलर्स की दुकान का शुभारंभ

❖रामलला का किया दर्शन पूजन।

संवाददाता

अयोध्या। अयोध्या पहुंचे सदी के महानायक अमिताभ बच्चन ने लगाए जय श्री राम के नारे । अमिताभ बच्चन ने कहा कि 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शामिल हुआ और आज भी अयोध्या पहुंच कर राम लला का दर्शन किया, अब तो अयोध्या आना जाना लगा ही रहेगा, (अमिताभ बच्चन ने अयोध्या में ले रखी है जमीन) । पुरानी बातों को ताजा करते हुए अमिताभ बच्चन ने कहा, जब मैं कहीं जाता हूं तो लोग कहते हैं आप मुंबई रहते हैं यहां आना-जाना नहीं होगा कैसे आपके साथ ताल्लुक बढ़ाया जाएगा, तो बाबूजी ने (हरिबंशराय बच्चन) ने एक बात कही थी वह कहावत भी अवधी में है, क्योंकि हमारी पैदाइश इलाहाबाद की है, हम दिल्ली रहे कोलकाता रहे मुंबई रहे कहा आपका ताल्लुक है उत्तर प्रदेश से, बाबूजी कहते थे एक कहावत है अवधी में, हाथी घूमे गांव गांव, जेके हाथी वही कै नाव, यह सच है हम इलाहाबाद में रहे कोलकाता में रहे दिल्ली में रहे मुंबई में रहे लेकिन जहां कहीं भी रहे कहलाए गए छोरा गंगा किनारे वाला । अयोध्या पहुंचे अमिताभ बच्चन ने राम लला का दर्शन किया और उसके बाद शहर के सिविल लाइन स्थित एक ज्वेलर्स शोरूम का उद्घाटन किया ।

रामोत्सव भजन संध्या स्थल पर जुटी भीड़

संवाददाता

अयोध्या। शबीना के रामस्तुति गायन से अयोध्या की विरासत हुई पुष्ट श्रीराम जन्मभूमि मंदिर पर भव्य मंदिर निर्माण व प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर आयोजित रामोत्सव में भजन संध्या स्थल राम भजनों से गुलजार रहा। प्रथम प्रस्तुति लखनऊ से पधारी शबीना सैफी द्वारा राम स्तुति गायन से प्रारंभ हुई। गौरतलब तथ्य यह रहा कि दो वर्ष की आयु में आंखें हमेशा के लिए खो देना और तुरंत बाद लकवा ग्रस्त हो कर जीवन जीने की आस छोड़ चुकी शबीना को सहारा मिला प्रभु श्रीराम के नाम का,आऔर अपनी प्रस्तुति जग में सुन्दर हैं दो नाम, तथा पायो जी मैंने राम रतन धन पायो जैसे रामभजनों से शबीना ने अयोध्या की विरासत को पुष्ट किया।दूसरी प्रस्तुति लखनऊ से पधारे सोने लाल शंशाक सागर ने अपनी खनकती आवाज में भजमन राम चरण सुखदाई,,जग में सुन्दर हैं दो नाम चाहे कृष्ण कहो या राम ,पायो जी मैंने राम रतन धन पायो जैसे भजनों पर वाद्ययंत्रों के साथ शानदार जुगलबंदी दिखा अर उपस्थित रामभक्तों को प्रसन्न कर दिया।तीसरी प्रस्तुति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दर्जनों प्रस्तुति से चर्चित गायिका सुमिता श्रीवास्तव की रही, सुमिता जी ने अब तक कई प्रसिद्ध गायकों शान, अनूप जलोटा, मालिनी अवस्थी, विनोद राठौर आदि के साथ भी अपनी गायकी का खासा प्रभाव छोड़ा है।यश भारती पुरस्कार से सम्मानित सुमिता ने रघुकुल रीत सदा चली आई रघुनंदन रघुराई,राम नाम की गूंज है बजने लगी बधाई,के साथ राम को स्नेह में वधु पक्ष द्वारा दी गई गारी की बेहतरीन प्रस्तुति दी। इस अवसर पर आज उनके÷रघुनंदन रघुराई ÷ गीत जो टी सीरीज द्वारा तैयार किया गया है को संस्कृति विभाग के इस मंच पर जनता को लोकार्पित किया गया।उक्त सभी कलाकारों का सम्मान संस्कृति विभाग के कार्यक्रम अधिशासी कमलेश कुमार पाठक, विश्व प्रकाश ÷रूपन÷ प्राप्त द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का अलग अंदाज में संचालन उद्घोषक संस्कृति विभाग विश्व प्रकाश÷ रूपन÷ ने किया।इस अवसर पर अनेक महनीय अतिथि व रामभक्त उपस्थित रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने से कार्यकर्ताओ में खुशी की लहर

संवाददाता

सोहावल अयोध्या। पूर्व प्रधानमंत्री किसानों के मसीहा राष्ट्रीय लोकदल के जनक चौधरी चरण सिंह जी को भारत रत्न मिलने पर किसानों में छाई खुशी की लहर राष्ट्रीय लोकदल की वर्षों पुरानी मांग हुई पूरी भारत सरकार और माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का आभार। उक्त बातें आज राष्ट्रीय लोकदल के प्रदेश महासचिव पूर्व सदस्य जिला पंचायत विश्वेष नाथ मिश्र सुड्डू मिश्रा ने अपने आवास पर रालोद कार्यकर्ताओं और किसानों को मिठाई बांटते हुए व्यक्त किया उन्होंने कहा कि आज हम लोगों के लिए अत्यंत गर्व और खुशी का दिन है राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत चौधरी जी को बधाई देते हुए श्री मिश्रा ने बताया की चौधरी साहब को भारत रत्न बहुत पहले मिलना चाहिए था परंतु वर्तमान सरकार और यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने किसानों की नब्ज को देखते हुए उक्त घोषणा की है जो स्वागत योग्य है राष्ट्रीय लोकदल इसका स्वागत करता है और पूरी पार्टी और देश के समस्त किसान इस सम्मान से अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। सुड्डू मिश्रा ने बताया की राष्ट्रीय लोकदल का एक-एक कार्यकर्ता जयंत चौधरी जी के साथ है राजनीतिक जो भी निर्णय लेंगे हम लोग उसका पालन करेंगे। राष्ट्रीय लोकदल हमेशा किसानों के लिए संघर्षरत रहा है किसने के हित में जो भी उचित होगा वह निर्णय लिया जाएगा।

भाकियू कार्यकर्ताओं ने सौंपा ज्ञापन

संवाददाता

सोहावल अयोध्या। भारतीय किसान यूनियन(अरा) किसान किसान समस्या को लेकर 6,बिंदु का ज्ञापन तहसीलदार सोहावल को सौंपा छूट्टा गौबन्शों को गौशाला भिजवाया जाए, स्टेशन रोड बद से बदतर हो गया है जगह-जगह गड्ढे हो गए हैं एम्बुलेंस स्कूली बच्चों की बस राजगीरों को आने-जाने में काफी दिक्कत होती है शीघ्र सही करवाया जाए ष्ट.॥.ष्ट. सोहावल बने आर सीसी सड़क के अगल-बगल इंटरलॉकिंग कर नालियों पर ढक्कन लगाया जाए कॉल से 500 मीटर के मानक की दूरी पर आरटीओ द्वारा ही चेकिंग लगाई जाए सरकार द्वारा आयुष्मान कार्ड की सुविधा दी गई है जिसमें तमाम पत्र गरीब व्यक्ति छूट गए हैं कैंप लगवा कर आयुष्मान कार्ड बनवाया जाए पंचायत की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष सविता मौर्या तहसील अध्यक्ष श्रीनाथ वर्मा ने किया पंचायत का संचालन पूर्व प्रधान राम अभिलाख यादव ने किया और कहा कि किसान समस्याओं का निस्तारण जल्द ना हुआ तो किसान यूनियन को आंदोलन करना पड़ेगा पंचायत में प्रमुख रूप से जवाहरलाल तिवारी मंगरु दादा रोशनी बृजलाल राजरानी गुड़िया किस्मत रामवती आदि सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद रहे ।

अभिताभ बच्चन का अयोध्या में हुआ आगमन , हुआ भव्य स्वागत

अयोध्या। सदी के महानायक अमिताभ बच्चन जी का आज अयोध्या आगमन हुआ। आगमन के पश्चात उन्होंने भगवान श्री रामलला मंदिर में दर्शन पूजन किया। अगले चरण में वे अयोध्या सिविल लाइन्स स्थित मण्डलायुक्त आवास पहुँचे जहां उनका स्वागत मण्डलायुक्त गौरव दयाल ने किया। इस अवसर पर सी0ई0ओ0 नवदीप रिणवा, आई0जी0 प्रवीण कुमार, जिलाधिकारी नितीश कुमार,वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजकरण नैय्यर, नगर आयुक्त विशाल सिंह, प्रसिद्ध साहित्यकार यतीन्द्र मोहन मिश्र सहित अन्य सम्मानित गण उपस्थित रहे।

प्यार पर था पहरा तो पत्नी ने कर दिया कांड

पुलिस ने की जांच तो सामने आया वो वाला एंगल!

संवाददाता

दौसा। दौसा जिले हत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां पर पत्नी के प्रेमी ने साथियों के साथ मिलकर की पति की पीट-पीटकर हत्या कर दी। हैरान करने वाली बात ये है कि प्रेमी से हत्या करवाने के बाद पत्नी थाने पहुंची और गुमशुदगी का मामला दर्ज कराया। राजस्थान के दौसा से सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां पर पत्नी के प्रेमी ने अपने साथियों संग मिलकर उसके पति की पीट-पीटकर हत्या कर दी। बताया जा रहा है कि वारदात में पत्नी भी प्रेमी का साथ दिया और उसी के कहने पर प्रेमी ने घटना को अंजाम दिया। घटना दौसा जिले के महुआ थाना इलाके की है। पुलिस के अनुसार, इस हत्याकांड में मृतक युवक की पत्नी के प्रेमी ने अपने साथियों के साथ मिलकर अंजाम दिया था। दरअसल, 8 फरवरी को सायपुर निवासी आशा देवी नामक महिला महुआ थाने में पहुंची और अपने पति रामू उर्फ रामदयाल मीना के लापता होने की बात कहकर गुमशुदगी का मामला दर्ज कराई। पत्नी के आवेदन पर पुलिस ने युवक रामू मीणा (35) की तलाश शुरू की। जांच में पुलिस को पता चला कि रामू मीणा को रसीदपुर निवासी संजय मीणा के साथ देखा गया था। इसके बाद पुलिस ने रसीदपुर निवासी संजय मीणा को हिरासत में ले लिया और पूछताछ की। पुलिसिया पूछताछ में उसने हत्या की वारदात को कबूल लिया। इसके बाद आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने नेशनल हाईवे 21 पर समलेटी गांव के समीप ही खेतों से युवक का शव बरामद किया। आरोपी से पूछताछ में सामने आया कि आरोपी संजय मीणा और मृतक की पत्नी आशा मीणा के बीच प्रेम प्रसंग चल रहा था। प्रेम प्रसंग में रोड़ा बन रहे आशा के पति को संजय मीणा ने प्रेमिका आशा की सहमति के बाद अपने तीन साथियों के साथ मिलकर पीट-पीटकर हत्या कर दी। पूरे मामले में महुआ थाना पुलिस ने आरोपी संजय मीणा, मृतक रामू मीणा की पत्नी आशा मीणा सहित तीन आरोपियों को हिरासत में लिया है। फिलहाल पुलिस हत्याकांड में शामिल अन्य आरोपियों की तलाश कर रही है। बताया जा रहा है कि आरोपी संजय मीणा का मृतक रामू मीणा के घर आना जाना था और वह घर पर आने-जाने के कारण ही आरोपी ने मृतक की पत्नी आशा मीणा को प्रेम जाल में फंसा लिया। मृतक रामू मीणा और उसकी पत्नी आरोपी आशा मीणा की शादी करीब 12 साल पहले हुई थी और दोनों के करीब 10-11 वर्ष के दो बच्चे भी थे।

5T अध्यक्ष कार्तिक पांडियन ने काहा: राज्य की जनता उत्तराधिकारी चुनेगी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर। राष्टीय मीडिया,हुड्ड को दिए इंटरव्यू में 5ञ्ज के चेयरमैन कार्तिक पांडियन का बड़ा बयान । 5ञ्ज चेयरमैन ने बीजे के राजनीतिक उत्तराधिकार के सवाल का जवाब दिया है । मुख्यमंत्री नवीन पटनायक पहले ही कह चुके हैं कि उत्तराधिकारी को राज्य की जनता चुनेगी । मैं 147 विधानसभा क्षेत्रों में मुख्यमंत्री के साथ रहूंगा । नवीन बाबू पूरी तरह स्वस्थ हैं । मुख्यमंत्री के स्वास्थ्य को लेकर विपक्ष अफवाहें उड़ा रहा है । इस बीच, पांडियन ने स्पष्ट किया कि वह 2024 में चुनाव नहीं लड़ेंगे।

हल्द्वानी उपद्रव के एक-एक गुनाहगार की हो रही पहचान, कोई नहीं छोड़ा जाएगा- उत्तराखंड मुख्य सचिव राधा रतूड़ी

संवाददाता

हल्द्वानी। हल्द्वानी उपद्रव पर उत्तराखंड की धामी सरकार लगातार नजर रख रही है। उत्तराखंड की मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने हलद्वानी घटनास्थल वनभुलपुरा का दौरा किया है। उन्होंने उपद्रवियों द्वारा फूंकी गई पुलिस चौकी का भी जायजा लिया। उन्होंने बताया कि इस मामले में जिम्मेदार कोई भी उपद्रवियों नहीं छोड़ा जाएगा। नैनीताल जिले के हल्द्वानी के वनभूलपुरा इलाके में हुए उपद्रव पर उत्तराखंड सरकार कड़ी नजर बनाए हुए है। उत्तराखंड की मुख्य सचिव राधा रतूड़ी शुक्रवार को हल्द्वानी घटनास्थल वनभुलपुरा क्षेत्र में पहुंचकर उपद्रवियों द्वारा फूंकी गई पुलिस चौकी का निरक्षण किया। उन्होंने कहा कि उपद्रवियों से सख्ती से निपटने के आदेश दिए हैं। मुख्य सचिव कहा कि में मौके के निरीक्षण के बाद मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को ब्रीफ किया जाएगा। इसके बाद जो भी करवाई करनी होगी, वो मीडिया को ब्रीफ की जाएगी। मुख्य सचिव राधा रतूड़ी बताया कि अभी हम निरक्षण के लिए पहुंचे है। इसके बाद एक्शन प्लान किया जाएगा। साथ ही उन्होंने कहा कि जो मीडियाकर्मी इस हमले में घायल हुए हैं, मैं आशा करती हूं वह जल्द ही स्वस्थ हो जाए। गौरतलब है कि इस उपद्रव में पुलिस के अनुसार 3 लोगों की मौत हुई है, जबकि 300 से ज्यादा लोग घायल हैं। उत्तराखंड में इस उपद्रव के बाद हाई अलर्ट घोषित कर दिया गया है। नैनीताल जिले के हल्द्वानी के बनभूलपुरा में सरकारी जमीन से अवैध मदरसे और मस्जिद को हटाने के दौरान हुए उपद्रव पर उत्तराखंड की धामी सरकार सख्त है। सीएम धामी ने देहरादून में अफसरों के साथ हाई लेवल की मीटिंग कर उपद्रवियों पर कड़ी कार्रवाई करने का आदेश दिया है। मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने कहा कि पथराव और आगजनी करने वाले एक-एक उपद्रवियों की पहचान की जा रही है। वहीं पुलिस द्वारा शुक्रवार को चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है। सीसीटीवी फुटेज भी खंगाली जा रही है। मौके पर आईआरबी की बटालियन, सीआरपीएफ के जवान भी मौके पर मौजूद हैं। पुलिस की माने तो उपद्रवियों से निपटने के लिए पुलिस पूरी तरीके से तैयार है। वहीं मौके पर आग के हवाले किए गए वाहनों को पुलिस-प्रशासन द्वारा उठाए जा रहा है।

एक नज़र

दलित हस्तियों का तिरस्कार न करे मोदी सरकार....मायावती ने कांशीराम को भारत रत्न देने की दोहराई मांग

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को चौधरी चरण सिंह, पूर्व पीएम नरसिम्?हाराव और वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न देने का ऐलान किया है। बसपा प्रमुख मायावती ने इस पर शुभकामनाएं दी हैं। मायावती ने बसपा के संस्?थापक कांशीराम को भी भारत रत्न देन की मांग की है। बसपा सुप्रीमो मायावती ने शुक्रवार को कहा कि जिन भी हस्तियों को भारत रत्न से सम्मानित किया गया उन्हें शुभकामनाएं। सरकार के इस फैसले का स्वागत है लेकिन इस मामले में खासकर दलित हस्तियों का तिरस्कार और उपेक्षा करना उचित नहीं। मायावती ने कांशीराम को भारत रत्न से सम्मानित किए जाने की मांग दोहराई। मायावती ने सोशल मीडिया ङ्ग पर लिखा है कि सरकार इस ओर भी जरूर ध्यान दे। बसपा प्रमुख ने कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर को लंबे इंतजार के बाद वीपी सिंह की सरकार द्वारा भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उसके बाद दलित और उपेक्षितों के हितों में मसीहा कांशीराम का संघर्ष भी कोई कम नहीं है। उन्हें भी भारतरत्न से सम्मानित किया जाए। आपको बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को पीवी नरसिम्हा राव और चौधरी चरण सिंह के साथ-साथ कृषि वैज्ञानिक एम. एस. स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित किए जाने की घोषणा की। दूसरी ओर, मुख्यमंत्री योगी आदित्?यनाथ ने चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न दिये जाने की घोषणा का स्वागत किया है। उनका कहना है कि जननेता, किसानों के मसीहा, गांवों, अन्नदाता किसानों, शोषितों एवं वंचितों के उत्थान के लिए आजीवन समर्पित रहने वाले, पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को %भारत रत्न% प्रदान करने की घोषणा अभिनंदनीय है। वे सच्चे अर्थों में लोकतंत्र के साधक थे। यह गौरव राष्ट्र निर्माण में उनके अतुल्य योगदानों का सम्मान है।

चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न, सीएम योगी आदित्यनाथ ने बताया किसानों का मसीहा

लखनऊ। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और नरसिम्हा राव को भारत रत्न मिलने पर सीएम योगी आदित्यनाथ ने शुभकामनाएं दी। वहीं हरित क्रांति के जनक वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न मिलने पर मुख्यमंत्री योगी ने खुशी जताई। सीएम योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और पीवी नरसिम्हा राव, हरित क्रांति के जनक कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित किए जाने के फैसले का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वागत किया है। मुख्यमंत्री ने तीनों विभूतियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शुभकामनाएं व्यक्त की हैं। उन्होंने शुक्रवार को अपने सोशल मीडिया अकाउंट्स पर इसे लेकर पोस्ट भी साझा किया और इसे अभिनंदनीय बताया। मुख्यमंत्री ने चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न दिये जाने की घोषणा का स्वागत करते हुए लिखा, जननेता, किसानों के मसीहा, गांवों, अन्नदाता किसानों, शोषितों और वंचितों के उत्थान के लिए आजीवन समर्पित रहने वाले, पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी को भारत रत्न प्रदान करने की घोषणा अभिनंदनीय है। वे सच्चे अर्थों में लोकतंत्र के साधक थे। यह गौरव राष्ट्र निर्माण में उनके अतुल्य योगदानों का सम्मान है। वहीं मीडिया से बात करते हुए मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न की घोषणा देश के करोड़ों किसानों का सम्मान है।

बिहार में राज्यसभा चुनाव के लिए शुरू हुई जोड़ तोड़ की जंग

❖ कांग्रेस और वाम दल को सहयोगी देंगे झटका, बीजेपी-जेडीयू की स्थिति समझिए।

संवाददाता

पटना। बिहार में राज्यसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक मोहरे सजाए जाने लगे हैं। बीजेपी, जेडीयू के अलावा आरजेडी और कांग्रेस की ओर से जोड़ तोड़ की कवायद शुरू की जा चुकी है। सवाल ये है कि इसमें कई पार्टियों को सहयोगियों के भरोसे रहना होगा। बिहार के कई चर्चित चेहरे राज्यसभा के सदस्य हैं। बिहार में राज्यसभा की रिक्त होने वाली छह सीटों को लेकर होने वाले चुनाव के लिए नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। चुनाव को लेकर दल और प्रत्याशी अब जोड़ तोड़ में भी जुट गए हैं। इस चुनाव में कांग्रेस जहां सहयोगियों के भरोसे है, वहीं भाजपा को लाभ होना तय है। बिहार से जिन राज्यसभा सांसदों का कार्यकाल समाप्त हो रहा है, उसमें राजद के मनोज कुमार झा और अहमद अशफाक करीम, जदयू के अनिल प्रसाद हेगड़े और वशिष्ठ नारायण सिंह, भाजपा के सुशील कुमार मोदी और कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह शामिल हैं। विधानसभा के अंकगणित के हिसाब से देखें तो भाजपा को इस चुनाव में फायदा होना तय है, जबकि वाम दलों और कांग्रेस को सहयोगियों के सहारे रहना होगा। जदयू की तरफ से अब तक कोई नाम सामने नहीं आया है, लेकिन कहा जा रहा है कि जदयू कोई चौंकाने वाला नाम सामने कर सकता है। भाजपा के सूत्रों की मानें तो प्रदेश कोर कमेटी ने केंद्रीय कमेटी के संभावित नामों की सूची दे दी है। बताया जाता है कि केंद्रीय कमेटी जल्द ही नामों की घोषणा कर सकती है।

जाट आरक्षण पर आर-पार की लड़ाई, दिल्ली में प्रतिनिधिमंडल से बातचीत

संवाददाता

भरतपुर। आरक्षण की मांग को लेकर भरतपुर और धौलपुर जिलों के जाटों का आंदोलन जारी है। लोकसभा चुनाव से पहले जाटों के आंदोलन से बीजेपी टेंशन में है। वहीं प्रदेश की सरकार चाहती है कि समय रहते जाटों की समस्याओं का समाधान निकाल लिया जाए। यही कारण है कि भरतपुर-धौलपुर जाट आरक्षण संघर्ष समिति की प्रतिनिधिमंडल को दिल्ली बुलाया गया है। राजस्थान के भरतपुर और धौलपुर जिलों के जाटों का आंदोलन जारी है। 24 दिनों से गांव जयचौली में महापड़ाव चल रहा है। शुक्रवार को जाट प्रतिनिधिमंडल को केंद्र सरकार ने वार्ता के लिए दिल्ली बुलाया है, जहां दोनों पक्षों के बीच वार्ता होगी और आरक्षण कैसे मिले उसके लिए काम शुरू होगा। भरतपुर-धौलपुर जाट आरक्षण संघर्ष समिति के संयोजक नेम सिंह फौजदार के नेतृत्व में पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल दिल्ली गया है। उनके साथ में बीजेपी सांसद मनोज राजौरिया भी हैं। दरअसल, जाटों ने 7 फरवरी को चक्का जाम का एलान कर दिया था, जिसके बाद तीन दिन पूर्व जाट प्रतिनिधिमंडल और राज्य सरकार की कमिटी के बीच जयपुर में वार्ता हुई थी। जिस पर राज्य सरकार ने तीन दिन के अंदर दिल्ली में केन्द्र सरकार के साथ आरक्षण के मामले पर वार्ता करने का लिखित में आश्वासन दिया था। तीन दिन बाद जाट प्रतिनिधिमंडल और सरकार के बीच दिल्ली में वार्ता हो रही है। बता दें कि भरतपुर-धौलपुर जिलों के जाटों को छोड़कर राजस्थान के सभी जिलों के जाटों को केंद्र में आरक्षण मिला हुआ है। साल 2017 में राज्य ओबीसी आयोग द्वारा सर्वे कराया गया और उसकी रिपोर्ट के आधार पर दोनों जिलों के जाटों को राज्य की ओबीसी में आरक्षण दे दिया गया था, मगर केंद्र में नहीं मिला। पिछले 9 वर्षों से यह मांग जाट समाज द्वारा की जा रही है। उधर जाटों ने एलान किया है कि यदि आरक्षण नहीं मिला तो लोकसभा चुनाव में जाट समाज बीजेपी को वोट नहीं देगा।

हल्द्वानी हिंसा के आरोपियों पर लगेगा एनएसए, हर आरोपी की जांच, मुख्य सचिव और डीजीपी का आया बड़ा बयान

एजेंसी

हल्द्वानी। हल्द्वानी में भारी हिंसा के बाद आरोपियों की तलाशी का बड़ा अभियान शुरू किया गया है। मुख्य सचिव ऋतु रतूड़ी ने हल्द्वानी का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि हिंसा को भड़काने के किसी भी आरोपी को बख्शा नहीं जाएगा। वहीं, डीजीपी ने दंगाइयों पर एनएसए लगाए जाने की बात कही है। उत्तराखंड के हल्द्वानी में हिंसा के बाद अब पुलिस और प्रशासन की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। हल्द्वानी में बड़ा सच ऑपरेशन शुरू किया गया है। गुरुवार की शाम भड़की हिंसा के बाद प्रशासन की टीम में कार्रवाई शुरू कर दी है। मुख्य सचिव ऋतु रतूड़ी हल्द्वानी पहुंची थीं। उन्होंने इलाके का जायजा लिया। वहीं, डीजीपी का इस मामले में बड़ा बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि पुलिस और प्रशासन के खिलाफ दंगों को भड़काया गया था। ऐसे तमाम दोषियों की पहचान कर उनके खिलाफ एनएसए लगाया जाएगा। नेशनल सिक्यूरिटी एक्ट लगाए जाने के कारण लोगों की परेशानी बढ़ती है। मुख्य सचिव ने घायल पुलिसकर्मियों से भी मुलाकात की। इसके बाद उन्होंने कहा कि भीड़ ने पुलिस प्रशासन पर हमला किया था। पूरे इलाके की जांच की जा रही है। हल्द्वानी में बड़े पैमाने पर सर्च ऑपरेशन चलाया गया है। मुख्य सचिव ने कहा कि जिन लोगों ने घटना को अंजाम दिया है। उनकी जांच की जा रही है। पूरे इलाके में सर्च ऑपरेशन के जरिए तमाम दंगाइयों की पहचान की जाएगी। हल्द्वानी हिंसा पर मुख्य सचिव ने ऐसे तमाम लोगों को कार्रवाई के दायरे में लाया जाएगा। मतलबियों पर शिकंजा कसने की पूरी तैयारी कर ली गई है तमाम सीसीटीवी कैमरे जा रहे हैं घटना के सभी फुटेज लिए गए हैं उनके जरिए हमलावरों की पहचान की जा रही है उन पर बड़े स्तर पर कार्रवाई होगी मुख्य सचिव ने चर्चा लेने के बाद कहा कि पूरे इलाके में अभी माहौल शांतिपूर्ण है। डीजीपी ने कहा कि तमाम घटना के बारे में जानकारी ली जा रही है।

छत्तीसगढ़ बजट ब्रीफकेस पर बनी तस्वीर में क्या है खास, वित्त मंत्री ओपी चौधरी लेकर आए तो ठहर गई नजरें

संवाददाता

रायपुर। बजट पेश करने सदन में छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री ओपी चौधरी जिस ब्रीफकेस को लेकर आए थे। उसकी खूब चर्चा हो रही है। यह ब्रीफकेस कई मायने में खास है, इसके फ्रंट पर ढोकरा कला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ढोकरा कला को विदेशी मेहमान को भेंट कर चुके हैं। छत्तीसगढ़ सरकार का पहला बजट आ गया है। बजट में भविष्य का रोडमैप है। पूरा बजट 1,47,500 करोड़ रुपए का है। वहीं, सरकार ने कई विभागों के बजट 100 फीसदी तक बढ़ा दिए हैं। 20 साल बाद पूर्ण वित्त मंत्री ने छत्तीसगढ़ विधानसभा में बजट पेश किया है। यह बजट पेपरलेस था। वित्त मंत्री बजट वाला टैबलेट ब्रीफकेस में लेकर आए थे। यह ब्रीफकेस बेहद खास है, जिसकी खूब चर्चा हो रही है। खासकर ब्रीफकेस के फ्रंट पर छत्तीसगढ़ की संस्कृति की झलक है। यह ब्रीफकेस छत्तीसगढ़ की लोक कला, संस्कृति, युवा, महिला और किसान और आधुनिकता के समावेश को दर्शा रहा है। दरअसल, वित्त मंत्री ओपी चौधरी विधानसभा में जो ब्रीफकेस लेकर पहुंचे थे, वह बेहद अहम है। यह ब्रीफकेस छत्तीसगढ़ के आदिम जनजाति के पारंपरिक सुप्रसिद्ध ढोकरा शिल्प को समेटे हुए है। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ग्रीस के प्रधानमंत्री को छत्तीसगढ़ की डोकरा कलाकृति भेंट की थी। इसकी वजह से इस कला की पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंची है। ओपी चौधरी के बजट ब्रीफकेस में भारत माता और छत्तीसगढ़ महतारी की तस्वीर है। इससे साफ है कि विकसित भारत निर्माण में छत्तीसगढ़ का योगदान बहुत महत्वपूर्ण साबित होगा। ब्रीफकेस पर छत्तीसगढ़ शासन का लोगो, जिसमें धान की बाली है। धान की बाली से यह संदेश है कि यह किसान हितैषी सरकार है। किसानों के हित को हमेशा प्राथमिकता में रखेगी।

लिव इन रिलेशनशिप को लेकर उत्तराखंड के लोगों ने दिल खोलकर दी अपनी राय, शादी व्यवस्था पर उठे सवाल

संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में यूनिफार्म सिविल कोड में लिव इन रिलेशनशिप के लिए रजिस्ट्रेशन की अनिवार्यता को लेकर चर्चाओं का दौर शुरू हो चुका है। जहां लिव इन में रहने वालों की सांसें अटकी हुई हैं। वहीं अभिभावक और युवा इस पर खुलकर बात कर रहे हैं। अभिभावक मान रहे हैं लिव इन गलत है और अब उन्हें अपने बच्चों की जानकारी रहेगी। लिव इन रिलेशनशिप को लेकर जहां अभिभावक इसके विरोध में हैं तो वहीं युवा लिव इन के पंजीकरण को सही बता रहे हैं। युवाओं का कहना है कि लिव इन रिलेशनशिप का रजिस्ट्रेशन होने से लिव इन के मामलों में कमी आएगी और अनावश्यक विवाद भी नहीं होंगे। इस संबंध में अभिभावक निर्मला बिष्ट का कहना है कि लिव इन रिलेशनशिप को पंजीकृत कराकर सरकार एक तरह से शादी व्यवस्था को चुनौती दे रही है। बहुविवाह का प्रचलन तो प्राचीन काल से है, लेकिन इस तरह से अवैध कृत्यों को बढ़ावा देने की कोशिश की जा रही है। एक ओर हम पाश्चात्य संस्कृति का विरोध कर रहे हैं, वेलेंटाइन डे जैसे पश्चिमी त्योहारों को मनाने से अपने बच्चों को रो रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर सरकार लिव इन जैसे संबंधों को कानूनी अमलीजामा पहनाने की कोशिश की जा रही है। वर्तमान समय में कई लोग मजबूरी में लिव इन में रह रहे हैं। फिलहाल उनकी प्राइवेसी उनके हाथ में है, लेकिन इसका पंजीकरण होगा तो यह लिव इन में रहने वालों के संबंध तो सार्वजनिक तो होंगे ही साथ ही महिला के लिए भी मुसीबतें बढ़ेंगी। अभिभावक डॉ. एसएन सचान ने कहा कि एक अभिभावक होने के नाते वे लिव इन रिलेशनशिप को ही गलत मानते हैं। वे अपने बच्चों को कभी भी लिव इन में रहने की अनुमति नहीं देंगे। किन्हीं परिस्थितियों में उनको रहना पड़ता है तो वे अपने घर पर इस बारे में नहीं बताते हैं। पंजीकरण की अनिवार्यता होने पर इस तरह के मामलों में कमी आएगी। क्योंकि कोई भी माता-पिता ये नहीं चाहेगा कि उनका बेटा या बेटी लिव इन रिलेशनशिप में रहे। बच्चों को अपने पार्टनर चुनने का अधिकार होना चाहिए, लेकिन पंजीकरण के दुष्परिणाम भी हो सकते हैं। ऐसे में वैरिफिकेशन के नाम पर लिव इन में रहने वालों को प्रताड़ित किए जाने की आशंका भी बनी रहेगी। युवा सचिन थपलियाल का कहना है कि छोटे प्रयासों के बिना बड़े काम असंभव है। भारत में पश्चिमी सभ्यता काफी हावी होने लगी है। उत्तराखंड देवभूमि है और यहां पर नारियों का सम्मान होता है, लेकिन सरकार को जो यह निर्णय है कि बिना पंडित, बिना अपनी भारतीय संस्कृति को आगे रख कर बिना शादी के लिव इन में रह लेंगे तो यह पश्चिमी संस्कृति को बढ़ावा देना है। यह अमेरिकीकरण की यह एक छोटी झलक है। सरकार को यह फैसले सांस्कृतिक संस्थाओं को छोड़ देना चाहिए। छात्रा इशिका चौहान का कहना है कि हमारे भारतीय कल्चर में यह बिल्कुल भी नहीं है कि लड़का-लड़की शादी से पहले से ही साथ रह रहें। सरकार के इस निर्णय से हमारे चुनने के अधिकार को छीना जा रहा है। हालांकि लिव इन रिलेशनशिप का रजिस्ट्रेशन करने की अनिवार्यता करके सरकार ने सही फैसला लिया है। छात्र करन नेगी का कहना है कि सरकार जो लिव इन के लिए पंजीकरण का नियम लाई है वो सही है। अब जो लोग लिव इन रिलेशनशिप में रहे हैं, उनको अब अपने घरों में भी बताना पड़ेगा और परिजनों की परमिशन भी लेनी पड़ेगी। ऐसे में परिजन परमिशन नहीं देंगे तो युवक और युवती लिव इन में नहीं रह सकेंगे और ऐसे में धीरे-धीरे यह कल्चर खत्म हो जायेगा। लिव इन का पंजीकरण होगा तो लिव इन में रहने वालों के घरों में भी जानकारी होगी और बाद किसी तरह का विवाद होने पर इसे कानूनी रूप से निस्तारित भी किया जाएगा। अधिवक्ता पृथ्वी सिंह नेगी ने कहा कि एक अभिभावक होने के नाते में अपने बच्चे को कभी भी लिव इन में रहने की अनुमति नहीं दूंगा। बेटे के लिए ही नहीं चाहूंगा कि वह शादी से पहले किसी महिला या युवती के साथ रहे तो बेटी को कैसे परमिशन दे देंगे। मैं उनको ऐसे संस्कार नहीं देना चाहता कि शादी से पहले बच्चे किसी से अनैतिक संबंध बनाए। शादी से पहले होने वाले बच्चे को भी लोग छुपा कर रखते हैं, क्योंकि यह गलत माना जाता है। यह तो कुरीतियों में गिना जाता है और आज सरकार इसको लीगलाइज कर रही है। संबंध अनैतिक होंगे लेकिन बच्चा तो लीगल ही होगा। इस तरह का सिस्टम बनाया ही क्यों जा रहा है। लिव इन को लीगलाइज कर क्या बताना चाहते हैं कि शादी से पहले रिश्ते बना लें। यदि ऐसा ही करना है तो हिंदूत्व की बात क्यों करते हैं। इससे तो अदालतों में अनावश्यक दबाव बढ़ेगा। लिव इन को ही बंद कर दिया जाएगा तो विवाद ही नहीं होंगे।

बाजार से नहीं घर पर बनाएं हेल्दी पाव भाजी

टेस्टी पाव भाजी खाना तो सबको अच्छा लगता है। इसे आप बाहर तो खाते ही होंगे, अगर आप चाहें तो इसे घर पर भी बना सकती है। आइए आज आपको पाव भाजी बनाने की विधि सिखाते हैं-

सामग्री: बारीक कटी हरी शिमला मिर्च- 40 ग्राम, कटी गाजर- 40 ग्राम, कटी पत्ता गोभी- 40 ग्राम, कटी ताजा बीन्स- 40 ग्राम, कटा प्याज- 50 ग्राम, अदरक-लहसुन पेस्ट- 50 ग्राम, सफेद मक्खन- 80 ग्राम, कटा अदरक- 5 ग्राम, हरे मटर- 50 ग्राम, नमक-स्वादानुसार, पाव भाजी मसाला- 2 टी-स्पून, कटी हरी मिर्च- 8, कटा हरा धनिया- 5 ग्राम, बारीक कटे टमाटर- 150 ग्राम, ताजा टोमैटो प्यूरी- 150 ग्राम, साबुत जीरा- 1 टी-स्पून, उबाल कर मैश किए गए आलू- 2, गोल कटे प्याज- 2, बटर 100 ग्राम, नींबू कटे- 4 नग।

बनाने की विधि

- पैन में बटर डालकर गरम करें
- जब बटर पिघलने लगे तो इसमें जीरा, प्याज, अदरक डालकर तड़काएं
- एक मिनट भूनने के बाद इसमें अदरक-लहसुन का पेस्ट डालकर इसे अच्छी तरह भून लें
- जब पेस्ट हल्का भूरा हो जाए तो इसमें मिर्च पाउडर, धनिया और सारी हरी सब्जियां डालकर अच्छी मिलाते हुए पकाएं
- 10 मिनट तक पकाने के बाद इसमें टोमेटो प्यूरी और कटे टमाटर डालें
- 7-8 मिनट तक ढक कर पकाएं
- जब टमाटर नरम पड़ जाएं तो इसमें पाव भाजी मसाला, नमक डालें और धीमीं आंच पर 15-20 मिनट तक पकाएं इसे बीच-बीच में चलाते रहें ताकि भाजी बर्तन की तली में चिपके नहीं।
- तय समय बाद बर्तन को आंच से उतार लें और भाजी पर हरा धनिया डाल दें।
- फिर तेज आंच पर तवा गरम करें।
- जब यह गरम हो जाए तो इसमें थोड़ा सा बटर डालें और पाव सेंक लें।
- एक प्लेट में भाजी निकाले।
- इसे नींबू के रस, बटर और प्याज से गार्निश कर पाव के साथ सर्व करें।

मिट्टी के बर्तन में खाना पकाने के कई फायदे, शरीर को भी होते है कई लाभ

स्वस्थ और फिट रहने के लिए हम बहुत से प्रयास करते हैं और इसके लिए हम अपने से जुड़ी हर चीज को सोच-समझकर चुनते हैं। हमें क्या खाना है, कब खाना है, एक्सरसाइज और अन्य कई चीजों को लेकर हम चिंतित रहते हैं ताकि हम अपने स्वास्थ्य को बनाए रखें। हालांकि क्या आपने कभी अपने किचन की तरफ रुख किया है और सोचा है कि आप जिन बरतनों में खाना पकाते हैं, क्या वह आपके लिए सही है। आज हम आपको मिट्टी का बरतन खाना पकाने के फायदों के बारे में बताने जा रहे है क्योंकि इनमें पका खाना अधिक पौष्टिक होता है और स्वादिष्ट भी। आइए जानते हैं मिट्टी के बरतनों में खाना पकाने से क्या फायदे होते हैं।

मिट्टी के बरतनों में नमी और हीट रहती हैं बरकरार : मिट्टी के बरतनों में पकाया गया भोजन अन्य किसी मेटल के बरतन के पकाए गए भोजन की तुलना में अधिक स्वादिष्ट होता है क्योंकि मिट्टी के बरतनों में नमी और हीट बरकरार रहती है। इसलिए खाना सही तरीके से पकता है साथ ही इसमें मिट्टी का स्वाद और सुगंध मिलती है तो यह खाने के फ्लेवर को और बेहतर कर देती है।

मिनरल्स और विटामिन्स: मिट्टी के बरतनों में खाना पकाने से आपका भोजन अधिक पौष्टिक होता है क्योंकि यह आपके भोजन में कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, मैग्नीशियम, सल्फर जैसे मिनरल्स और विटामिन्स को शामिल करता है।

खाने का रहता है पोषण बरकरार: मिट्टी के बरतनों में खाना धीरे-धीरे पकता है जिससे खाने का पोषण बरकरार रहता है। जबकि अन्य किसी धातु के बरतन में खाना पकाते वक्त खाने का पोषण कम हो जाता है।

खाने को दोबारा गर्म करने की जरुरत नहीं होती: जब आप खाने को गर्म करते हैं तो खाने से पोषक तत्व कम हो जाते हैं और वह भोजन आपके लिए फायदेमंद नहीं होता। यहां तक कि कुछ खाद्य पदार्थ ऐसे हैं जिन्हें दोबारा गर्म करने पर वो हानिकारक हो जाते हैं। मिट्टी के बरतन में खाना पकाने से यह अधिक देर तक गर्म रहता है क्योंकि इसका तापमान लंबे समय तक बरकरार रहता है और खाने को दोबारा गर्म करने की जरुरत नहीं पड़ती।

सेहत से भरपूर नाश्ता है पास्ता

दिनभर चुस्त-दुरुस्त रहने के लिए सुबह का नाश्ता हर किसी के लिए जरूरी हो जाता है। नाश्ते की कई वैराइटियां होती हैं, जो अलग-अलग स्वाद और रूपों में बनाई जा सकती हैं। यह विभिन्न पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं। एक सच तो यही है कि नाश्ता न केवल हमारी स्मरणशक्ति को बेहतर बनाता है, बल्कि वजन को काबू में रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

नाश्ते में पास्ता: लोग पास्ता को स्वस्थ नाश्ता का विकल्प नहीं मानते, क्योंकि इसका एक कारण होता है, पास्ता का मैदे से बना होना। लेकिन आजकल बाजार में कई तरह के पास्ता की वैरायटी मौजूद हैं। ऐसे में यदि आपके बच्चे को पास्ते का शौक है, तो आप व्हीट पास्ता बनाकर उसे दे सकते हैं। व्हीट पास्ता गेहूं का बना होता है। इसमें फाइबर, आयरन, विटामिन बी और मिनरल्स की भरपूर मात्रा होती है। जहां एक ओर एक कप साधारण पास्ता में 221 कैलरी होती है, वहीं साधारण पास्ता में डायटरी फाइबर और कार्बोहाइड्रेट की मात्रा ज्यादा होती है, जो दिल से जुड़ी बीमारियों का कारण बनता है। होल व्हीट पास्ता के एक कप में 174 कैलरी होती है। इसलिए डाइट करने वालों और बच्चों के लिए यह एक स्वस्थ संतुलित आहार है। होल व्हीट पास्ता बहुत ही फायदेमंद और पोषण से भरपूर होता है।

कार्बोहाइड्रेट नाश्ता: न्यूट्रिशनिस्ट के अनुसार, सुबह का नाश्ता सुबह जगने के बाद दो घंटे के अंदर कर लेना चाहिए। नाश्ते में सबसे महत्वपूर्ण यह है कि आप क्या खाते हैं। दिन का यह पहला भोजन कैल्शियम, आयरन, प्रोटीन, फाइबर और विटामिन बी जैसे जरूरी पोषक तत्वों से भरपूर होना चाहिए। डाइटीशियन यह भी कहते हैं कि नाश्ते को नियमित रूप से छोड़ने वालों को दिन में जब भूख लगती है, तो वे ज्यादा खाते हैं। इससे उनका वजन बढ़ता है। अकसर सुबह बच्चों को स्कूल या बड़ों को ऑफिस जाने की जल्दबाजी होती है या गृहिणियां घरेलू काम को पूरा करने की व्यस्तता में नाश्ता ही नहीं करतीं। ऐसी स्थिति में यदि यह कहें कि उन्हें हल्का नाश्ता जरूर लेना चाहिए, तो शायद गलत नहीं होगा।

होल व्हीट पास्ता के फायदे हैं अनेक: होल व्हीट पास्ता और रिफाइंड या रेगुलर पास्ता में अंतर है। होल व्हीट पास्ता को तैयार करने में साबुत गेहूं का इस्तेमाल किया जाता है, जबकि रिफाइंड या रेगुलर पास्ते में प्रोसेस्ड गेहूं का इस्तेमाल किया जाता है। जहां 100 ग्राम होल व्हीट पास्ता में 37 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 6 ग्राम फाइबर, 7.5 ग्राम प्रोटीन, 174 कैलरी और फैट 0.8 ग्राम होता है, वहीं 100 ग्राम रिफाइंड पास्ते में 43 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 2.5 ग्राम फाइबर, 8.1 ग्राम प्रोटीन, 221 कैलरी और 1.3 ग्राम फैट होता है। होल व्हीट पास्ते से ब्लड शुगर लेवल भी नियंत्रित रहता है।

कोलेस्ट्रॉल को रखता है संतुलित: होल व्हीट पास्ता पाचन क्रिया के लिए हेल्दी है। 100 ग्राम होल व्हीट पास्ते से आपको रेगुलर व्हीट पास्ता की तुलना में ढाई गुना ज्यादा फाइबर मिलता है। एक अध्ययन के अनुसार, यह मोटापा नहीं बढ़ाता। इसके सेवन से कोलेस्ट्रॉल भी नहीं बढ़ता। कई अध्ययनों के अनुसार, आधा कप पास्ता खाने से कार्डियोवैस्कुलर डिजीज, टाइप 2 डायबिटीज और पाचन से जुड़ी समस्याओं का खतरा कम हो जाता है। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि स्वास्थ्य के नजरिये से पास्ता अच्छा नहीं होता, लेकिन आपको यह जानकर हैरानी होगी कि 100 ग्राम पास्ता में 12.5 ग्राम प्रोटीन होता है।

गिले-शिकवे ही नहीं, जादू की झप्पी से भी दूर होती हैं बीमारियां

जादू की झप्पी! याद है आपको मुन्ना भाई की ये लाइन? जादू की झप्पी में सच में एक जादू ही होता हैं तभी तो आप जब रोते हुए बच्चे को सीने से लगा लेते हैं तो वो तुरंत चुप हो जाता हैं, अगर कोई भावुक हो और आप उसे गले लगा ले तो उसे सुकून मिलता हैं। लेकिन गले लगाने के फायदे यहीं तक सिमित नहीं रहते। जादू की झप्पी हार्ट रेट को कन्ट्रोल करके रखती हैं, मेटाबोलिज्म बढ़ाती हैं, आपको अच्छी नींद देती हैं, ब्लड प्रेशर कम करने में मदद करती हैं और आप की उम्र भी बढ़ाती हैं। ये आपके स्वास्थ्य के लिए तो अच्छा है ही पर आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी सही हैं। आइए जानते हैं गले लगाने के फायदों के बारे में-

दिल स्वस्थ रहता है: गले मिलने से तनाव कम होता है क्योंकि इस दौरान कॉर्टिसोल नामक हार्मोन में गिरावट होती है जो तनाव को बढ़ाने के लिए जिम्मेदार होता है। स्टडी में पता चला है कि तनाव दिल के रोग के खतरे को बढ़ाता है और इस वजह से गले मिलना आपके इस खतरे को कम करता है।

मसल्स को आराम पहुंचाता है: गले लगने से मांसपेशियों में होने वाला तनाव कम होता है। साथ ही आप अपने दर्द को कम महसूस करते हैं। गले मिलने से सॉफ्ट टिशू में ब्लड सर्कुलेशन बढ़ जाता है जिससे मांसपेशियों में होने वाला दर्द और ऐंठन से आराम मिलने लगता है।

डर से छुटकारा दिलाता है: डर सबको लगता हैं पर हर किसी की वजह अलग-अलग होती हैं लेकिन इसका इलाज एक ही होता है, वो हैं गले लग जाना। जब हमें किसी बात से डर लगता हैं और कोई करीबी हमे गले लगा ले तो डर जैसे कहीं गायब ही हो जाता हैं।

प्राकृतिक रुप से तनाव कम करता है: रिसर्च के मुताबिक गले लगने से कोर्टिसोल का लेवल कम होता है साथ ही दिमाग को शांत करने का मैसेज मिलता है जिससे तनाव कम होता है।

जिंदगी में पॉजिटिविटी भर जाती है: गले लगने से आपकी सोच में बदलाव आता हैं आपकी सोच पॉसिटिव हो जाती हैं क्योंकि आपके दिमाग में सकारात्मक प्रतिक्रिया होती हैं। ये गले लगने का एक बहुत बड़ा लाभ हैं। सकारात्मक सोच एक बेहतर जिंदगी जीने के लिए बेहद जरूरी हैं क्योंकि आपकी सफलता इस पर ही निर्भर होती हैं, जैसा आप सोचेंगे वैसा ही आपके साथ होगा।

अकेलेपन को दूर करता है: गले लगने से तुरंत ही ऑक्सीटोसिन लेवल बूस्ट हो जाता है, जिससे अकेलापन, गुस्सा, चिंता जैसे विकार दूर हो जाते हैं और आप खुशी का अनुभव करने लगते

पथुम निसांका ने रचा इतिहास, दोहरा शतक लगाने वाले श्रीलंका के पहले खिलाड़ी, जयसूर्या का रिकॉर्ड टूटा

एजेंसी

पल्लेकेले। निसांका श्रीलंका के लिए वनडे में सबसे बड़ी पारी खेलने वाले बल्लेबाज बन गए। इस मामले में जयसूर्या पहले स्थान पर थे। उन्होंने साल 2000 में भारत के खिलाफ 189 रन की पारी खेली थी।

श्रीलंका के ओपनर बल्लेबाज पथुम निसांका ने शुक्रवार (नौ फरवरी) को अफगानिस्तान के खिलाफ तूफानी पारी खेली। उन्होंने पल्लेकेले में नाबाद 210 रन की पारी खेली। निसांका श्रीलंका के लिए वनडे में दोहरा शतक लगाने वाले पहले बल्लेबाज बन गए। सिर्फ वनडे ही नहीं बल्कि लिस्ट-ए क्रिकेट में भी वह ऐसा करने वाले पहले श्रीलंकाई बने हैं। उन्होंने पूर्व कप्तान और अपने समय के विस्फोटक ओपनर रहे सनथ जयसूर्या के रिकॉर्ड को भी तोड़ दिया। निसांका ने पूर्व कप्तान कुमार संगकारा के एक रिकॉर्ड को भी अब अपने नाम कर लिया है। निसांका के दोहरे शतक की बदौलत श्रीलंका ने 50 ओवर में तीन विकेट पर 381 रन बनाए। अविष्का फर्नांडो ने 88 और सदीरा समरविक्रमा ने 45 रन बनाए। निसांका श्रीलंका के लिए वनडे में सबसे बड़ी पारी खेलने वाले बल्लेबाज बन गए। इस मामले में जयसूर्या पहले स्थान पर थे। उन्होंने साल 2000 में भारत के खिलाफ 189 रन की पारी खेली थी। निसांका ने उनके रिकॉर्ड को उनके ही सामने तोड़ा। जयसूर्या भी इस युवा ओपनर की पारी को देखकर खुश थे और उन्होंने खड़े होकर तालियां बजाईं। निसांका ने 139 गेंद की पारी में 20 चौके और आठ छक्के लगाए। उनका स्ट्राइक रेट 151.08 का रहा।

पथुम निसांका श्रीलंकाई जमीन पर सबसे बड़ी पारी खेलने वाले बल्लेबाज बन गए। उन्होंने इस मामले में कुमार संगकारा को पीछे छोड़ा। संगकारा ने 2013 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 169 रन बनाए थे। तीसरे नंबर पर अफगानिस्तान के इब्राहिम जादरान हैं। उन्होंने श्रीलंका के खिलाफ 2022 में 162 रन बनाए थे। वहीं, 2023 में अफगान टीम के ही रहमनुल्लाह गुरबाज ने पाकिस्तान के खिलाफ 151 रन बनाए थे। 2009 में भारत के गौतम गंभीर ने श्रीलंका के खिलाफ 150 रन की पारी खेली थी। श्रीलंका के लिए पहली बार किसी खिलाड़ी ने वनडे में दोहरा शतक लगाया है। भारत के सबसे ज्यादा सात खिलाड़ियों के नाम दोहरे शतक हैं। श्रीलंका के अलावा न्यूजीलैंड, वेस्टइंडीज, पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के एक-एक खिलाड़ियों ने दोहरा शतक लगाया है।

अफगानिस्तान के खिलाफ तीन महीने में दो दोहरे शतक लग गए हैं। निसांका से पहले ऑस्ट्रेलिया के ग्लेन मैक्सवेल ने विश्व कप के दौरान दोहरा शतक लगाया था। उन्होंने नवंबर 2023 में 201 रन की नाबाद पारी खेली थी। निसांका ने अपने 50वीं वनडे पारी में 150 से ज्यादा रन बनाए। वह ऐसा करने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज हैं। इससे पहले वनडे की 50वीं पारी में सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड आयरलैंड के एंडी बलबर्नी और ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग के नाम संयुक्त रूप से था।

श्रीलंका के लिए वनडे में सबसे बड़ी पारी खेलने वाले बल्लेबाज

खिलाड़ी	खिलाफ	साल	स्कोर
पथुम निसांका	अफगानिस्तान	2024	210*
सनथ जयसूर्या	भारत	2000	189
उपुल थरंगा	भारत	2013	174*
कुमार संगकारा	दक्षिण अफ्रीका	2013	169
तिलकरत्ने दिलशान	बांग्लादेश	2015	161*

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्पलक्े स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एवं पहला तल, निधि काम्पलेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।
समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टाचार सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।